# एक आदर्श महिला

—स्व० अवंतिकाबाई गोखले के सेवामय जीवन की कहानी—

विनायक तिवारी

●

भूमिका

राष्ट्रपति डा० राजेंद्रप्रसाद

आमुख

देवदास गांधी

●

१९५८

सत्साहित्य प्रकाशन

# भूमिका

जब महात्मा गांधी सन् १९१७ में चंपारन में आये और गवर्मेंट द्वारा नियुक्त जांच-कमेटी का काम समाप्त कर चुके तो उन्होंने यह सोचा कि चंपारन के गरीबों की हालत केवल गवर्मेंट की कृपा और मदद से ही नहीं सुधरेगी; बल्कि उनमें शिक्षा, रहन-सहन और नई स्फूर्ति लाने से सच्चे सुधार की आशा की जा सकती है। इसलिए जब वह जांच के काम में लगे हुए थे तभी से यह भी सोच रहे थे कि इसे किस तरह किया जाय, और ज्योंही जांच के काम से फुर्सत मिली, उन्होंने निश्चय कर लिया कि वहां कुछ केंद्र खोले जायं, जहां सुयोग्य, त्यागी, काम करनेवाले लोग, स्त्री और पुरुष, सेवा-भावना से रहने लगें और बच्चों में शिक्षा देने के अलावा गांवों की स्त्रियों और पुरुषों के सारे जीवन को सुधारने का काम अपने हाथों में लें। इसी विचार से उन्होंने तीन केंद्र खोले और उनमें काम करने के लिए गुजरात और महाराष्ट्र से सुयोग्य स्त्रियों और पुरुषों को आमंत्रित करके बुलाया। उन्हीं लोगों में श्री अवंतिकाबाई गोखले और उनके पति श्रीबबन गोखले भी थे। ये लोग बंबई के रहनेवाले थे, जहां बिजली और गैस की वजह से हर तरह की सुविधाएं उनको मिलती थीं। बिहार के चंपारन जिले में एक छोटे-से गांव में आकर, जहां मामूली शहर की सुविधा भी उनको प्राप्त न थी, इन लोगों ने काम करना शुरू किया। काम भी आसान नहीं था; क्योंकि गांव की सफाई के अलावा, स्त्रियों को सुधारना और सिखाना, किस तरह से वह घर की सफाई रखें, बच्चों का पालना, बच्चों की सफाई से लेकर पढ़ाई तक, और गांवों की गलियों की सफाई, विशेषकर कुंओं के नजदीक की जगह को, जहां से लोग जल लेते ह, किस तरह से साफ रखा जा सकता है—इनसब चीजों को भी स्वयं काम करके लोगों को दिखलाना पड़ता था। बच्चों को शिक्षा देना तो उनका एक मामूली-सा काम था। मेरा श्रीअवंतिकाबाई से

उसी समय पहले-पहल परिचय हुआ और जिस उत्साह और लगन से वह अपने दूसरे साथियों के साथ काम करती थीं, वह उस जगह के लोगों के लिए ही नहीं, बल्कि सब बिहारियों के लिए एक अत्यंत लाभदायक शिक्षण-केंद्र-सा हो गया था। जो परिचय वहां हुआ वह और अधिक घनिष्ठ होता गया और जब वह बंबई वापस चली गईं और मुझे १९१८ की कांग्रेस के अधिवेशन में वहां जाना पड़ा तो मैं उनके घर ही जाकर ठहरा था। जहांतक मुझे स्मरण है, वह मेरी बंबई की पहली यात्रा थी। जब महात्मा गांधी ने अपना देश-व्यापी आंदोलन आरंभ किया तो उसमें श्रीअवंतिकाबाई खूब जोरों से आगे बढ़ीं, विशेष करके चर्खा और खादी-संबंधी प्रचार के काम में बहुत जोरों से लगीं। मैं जब-जब बंबई जाया करता था तो उनसे महात्मा गांधीजी के पास किसी भी मौके पर मुलाकात हो जाया करती थी और जब कभी नहीं हुई तो मैं उनसे जाकर मिल आयाा करत था। उनके अंतिम बीमारी के दिनों में जब मैं बंबई गया तो उनसे जरूर मिला और इस तरह उनसे मेरा संपर्क उनके अंतिम दिनों तक बराबर बना रहा। वह एक त्यागी विदुषी महिला थीं, जिन्होंने गांधीजी की पुकार पर आराम की जिंदगी छोड़कर कंटकाकीर्ण देश-सेवा-वृत्ति को वरण किया और अंतिम दम तक निभाया।

**राजेंद्रप्रसाद**

राष्ट्रपति-भवन<br>
२६ अक्तूबर, १९५१

# आमुख

प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन द्वारा 'सस्ता साहित्य मंडल' ने जन-सेवा का एक और कार्य किया है। 'मंडल' का उद्देश्य आर्थिक या अन्य किसी प्रकार के लाभ का विचार न करके हिंदी पढ़नेवाली विशाल जनता के लिए सत्साहित्य सुलभ करना है।

जिन महान आदर्श महिलाओं से मैं परिचित हूं अथवा जिनके विषय में मेरी जानकारी है, उनमें श्रीमती अवंतिकाबाई एक हैं। इस पुस्तक के पृष्ठों में उन्हींकी कहानी है। वह ऊंची आत्मावाली महिलाओं के उस वर्ग की थीं, जिनके जीवन तथा सेवा से सारा समाज ऊपर उठता है। समाज-सेवा की अनगिनत संस्थाओं में अवंतिकाबाई का हाथ था। जब कभी लोगों की शक्ति और भावना में शिथिलता आती थी तब वह स्वयं आगे बढ़कर कठोर परिश्रम की मिसाल उनके सामने उपस्थित करती थीं। दृढ़ता और अडिग इच्छा, ये उनके दो प्रधान गुण थे। अपनी सेवा ृत्ति तथा परिश्रमशीलता से जिन सहस्रों नर-नारियों को उन्होंने प्रेरित किया, वे उनके इन गुणों के साक्षी हैं। गांधीजी की वह अनुयाथिनी थीं, लेकिन उनके निकट या हमेशा उनकी आंखों के सामने रहने की लालसा न करके वह उनकी शिक्षाओं एवं कार्यक्रम के अनुसार उद्योग करती रहती थीं। अपनी निष्ठा और उत्साह को बनाये रखने के लिए इतना पर्याप्त था कि जब कभी गांधीजी बंबई जाते थे वह चंद मिनटों के लिए उनके दर्शन कर लेती थीं। उनका और उनके पति का एक-दूसरे के प्रति गहरा अनुराग था। संतान उनके थी नहीं। दो पृथक् दुर्घटनाओं ें श्रीबबन गोखले के दोनों हाथ, बाएं अंगूठे को छोड़कर, अल्पायु में ही कट गये थे। इसलिए अवंतिकाबाई को अपने सार्वजनिक कार्य के बीच उनकी भी देखभाल करनी पड़ती थी। अपने ढंग से ीबबन गोखले भी उन्हें लोकहितकारी प्रवृत्तियों में प्रोत्साहन तथा सहा-

यता देते रहते थे। थोड़ी-सी ग्रामदनी में वे मितव्ययी जीवन बिताते थे। गांधीजी की हत्या के सदमे का श्रीग्रवंतिकाबाई पर गहरा ग्रसर पड़ा। उनकी बीमारी बढ़ गई ग्रौर वह फिर कभी नीरोग न रह सकीं। मेरी पत्नी ग्रौर मुझे उनकी भस्म को राजघाट-समाधि पर रखने के पश्चात यहां यमुना में १८ अप्रैल' ४९ को प्रवाहित करने का सौभाग्य प्राप्त हुग्रा था। उनके वृद्ध पति जीवित हैं ग्रौर ग्रकेले होते हुए भी ग्रपने दैनिक कार्य में ऐसे जुटे रहते हैं, मानो कुछ हुग्रा ही न हो। ग्रपने स्वावलंबन, साहस ग्रौर हँसमुख स्वभाव के लिए वह हमेशा प्रसिद्ध रहे हैं ग्रौर ग्राज भी यह मूल-मंत्र सजीव रूप में उनमें विद्यमान है। प्रभु की उनपर सदा कृपा बनी रहे!

नई दिल्ली
१८ सितंबर, १९५१

—**देवदास गांधी**

# प्रस्तावना

स्व० अवंतिकाबाई गोखले की जीवनी पर दृष्टि डालने से पूर्व उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम पच्चीस वर्षों में भारत की और विशेषकर महाराष्ट्र की राजनैतिक एवं सामाजिक परिस्थिति को ध्यान में रखना आवश्यक होगा।

सन् १८५७ के स्वातंत्र्य-युद्ध के बाद कुछ समय तक ऐसा प्रतीत होता था मानो देश में सर्वत्र शांति स्थापित हो गई; लेकिन यह शांति केवल दिखावा-मात्र थी। भारतवासियों के दिल और दिमाग में गुलामी की जिंदगी से घृणा होने लगी थी, जिसके परिणामस्वरूप असंतोष की भावना और स्वतंत्रता की इच्छा प्रबल हो रही थी। स्व० वासुदेव बलवंत फड़के का महाराष्ट्र में इस प्रकार के असंतोष को व्यक्त करने का कुछ निराला ही ढंग था। सर्वश्री लोकहितवादी, ज्योतिबा, फुले, भांडारकर, न्या० रानडे आदि सज्जन अपने ढंग से कार्य कर रहे थे। इन्हीं लोगों से प्रेरणा पाकर सर्वश्री चिपलूणकर, आगरकर, गोखले और तिलक आदि देशभक्तों की पीढ़ी का निर्माण हुआ।

इस दूसरे ढंग से कार्य करनेवालों का विश्वास था कि अगर हमें अपनी गुलामी दूर करनी है तो हम लोग अंग्रेजी सीखकर अंग्रेजों के समान ज्ञान प्राप्त करें और उनपर यह साबित कर दें कि हम स्वतंत्र होने और स्वराज्य प्राप्त करने योग्य हैं। इस मत के समर्थकों में सर्वश्री रानडे और भांडारकर प्रमुख थे। वे अपने इस मत पर दृढ़ थे और उसके लिए प्रयत्नशील भी थे कि भारत के नवयुवक अंग्रेजी भाषा का उच्चतम ज्ञान प्राप्त करें।

स्त्री-शिक्षा के आंदोलन में बंगाल महाराष्ट्र से जरा आगे बढ़ा हुआ था। १९-वीं शताब्दी के आरंभ में ही राजा राममोहन राय ने अपना कार्य शुरू कर दिया था। इसलिए सन् १८२० में कलकत्ते में स्त्रियों के लिए एक स्वतंत्र कालेज की स्थापना हो चुकी थी। यद्यपि वह कालेज आज भी चल रहा है, तथापि यह कहना ठीक होगा कि वह कभी पूर्णतया सफल नहीं रहा।

महाराष्ट्र की स्त्री-शिक्षा का इतिहास देखने के लिए पिछले सौ साल

के उस युग में जाना होगा जब स्त्री-शिक्षा का कार्य प्रारंभ ही हुआ था। उस समय उसका क्षेत्र प्राथमिक कक्षाओं तक ही सीमित था। धीरे-धीरे वह सीमा बढ़ती गई; लेकिन माध्यमिक शालाओं में लड़कों के साथ पढ़ने-वाली लड़कियों की संख्या कभी पर्याप्त नहीं रही। अधिकतर लड़कियां प्राथमिक (वरनाक्यूलर फाइनल) को ही अपनी शिक्षा की अंतिम सीमा समझती थीं।

सन् १८४८ में बंबई में श्रीशंकरसेठ द्वारा लड़कियों के लिए एक अलग स्वतंत्र हाईस्कूल की स्थापना हुई। तबसे स्त्री-शिक्षा की प्रगति होने लगी। इस स्कूल में लड़कियों के लाने और घर पहुंचाने का काम दादाभाई नौरोजी खुद किया करते थे। सन् १८८३ में पूना में भी लड़कियों का एक हाईस्कूल शुरू हुआ। सन् १८९२ में पं० रमाबाई ने लड़कियों के लिए 'शारदा-सदन' की स्थापना की। शुरू-शुरू में वहां काफी लड़कियां पढ़ने जाती थीं। लेकिन जब वहां कुछ लड़कियों को ईसाई-धर्म की दीक्षा दी गई तो लोगों ने उसका बहिष्कार किया और अपनी लड़कियों को 'शारदा-सदन' भेजना बंद कर दिया।

थोड़े दिनों के पश्चात महर्षि धोंडो केशव कर्वे ने 'अनाथ बालिकाश्रम' की स्थापना की। इस संस्था के द्वारा प्रौढ़ स्त्रियों की शिक्षा तथा रक्षा का प्रबंध किया गया। तबसे स्त्री-शिक्षा के कार्य में काफी प्रगति हुई।

पं० रमाबाई के 'शारदा-सदन' का आगे चलकर 'सेवा-सदन' नामक संस्था में रूपांतर हो गया। इसकी एक शाखा बंबई में और दूसरी पूना में स्थापित हुई। सन् १९०४ के बाद इन दोनों शाखाओं की प्रगति में वृद्धि होने लगी। पूना के 'सेवा-सदन' की तो काफी तरक्की हुई और उसने कुछ समय में विशाल रूप धारण कर लिया। इसके विकास और उन्नति का सारा श्रेय स्व० श्रीगोपालराव देवधर और रमाबाई रानडे (न्या० स्व० रानडे की पत्नी) को ही देना होगा, जिनके अथक परिश्रम और सक्रिय सहानुभूति से यह संस्था उत्तरोत्तर वृद्धि करती गई।

स्त्री-शिक्षा के इस वातावरण में अवंतिकाबाई की शिक्षा स्व० देवधर की देखरेख में संपन्न हुई। शिक्षा के साथ-साथ समाज-सेवा का पाठ भी

स्व० देवधर से ही उनको मिला। आगे चलकर देवधरजी की इस शिष्या ने इस क्षेत्र में अपने गुरु से भी आगे बढ़कर बहनों को दाई, सिलाई, नर्सिंग आदि विविध कार्यों की शिक्षा देना प्रारंभ कराया।

उस जमाने में लड़कियों की शादी उनके बचपन में ही हो जाती थी। अत: स्त्री-शिक्षा के रास्ते में यह एक भारी रुकावट थी। यही कारण है कि सन् १९१० तक कालेज में जानेवाली लड़कियों की संख्या शून्य के बराबर थी। धीरे-धीरे यह हालत सुधरती गई और सन् १९१२ के बाद लड़कियां कालेज में जाने लगीं। लेकिन ऐसी लड़कियों की संख्या बहुत कम थी और उनकी कालेज की पढ़ाई भी एक-दो सालों से ज्यादा न हो पाती थी। सन् १९२० के बाद शीघ्रता से परिस्थिति में परिवर्तन होने लगा। पिछले ३० सालों में स्त्रियों ने शिक्षा-क्षेत्र में आशातीत सफलता प्राप्त की। अब तो उन्होंने कर्त्तव्य-क्षेत्र के किसी भी अंग को अछूता नहीं छोड़ा। स्त्री-शिक्षा का कार्य आज लोगों के सामने है ही।

सामाजिक क्षेत्र में स्त्रियों की हालत बहुत ही शोचनीय थी। १९-वीं शताब्दीमें सामाजिक तथा राजनैतिक कार्य करनेवाली डा.आनंदीबाई जोशी, काशीबाई कानिटकर, रमाबाई रानडे आदि-जैसी अनगिनत स्त्रियां दिखाई देती थीं। स्त्री-कर्मीजनों की कमी का एक प्रमुख कारण बालविवाह की प्रथा तो थी ही; लेकिन साथ ही पुरानी परंपरा और रूढ़ि भी एक कारण था।

यद्यपि सार्वजनिक क्षेत्र में कार्य करनेवाले कार्यकर्त्ता और नेता अपनी स्त्रियों और बहू-बेटियों को महिलाश्रम-जैसी स्वतंत्र संस्थाओं में भेजते थे, जहां उन्हें समाज-कार्य की शिक्षा मिलती थी, तो भी पुरुषों के साथ सार्वजनिक कार्य में बराबरी से काम करनेवाली बहनें पिछली शताब्दी में हमें दिखाई नहीं देतीं।

उस समय पुरुषों की सभाओं में स्त्रियों का जाना भी अनुचित समझा जाता था। प्रार्थना-समाज में जानेवाली बहनों का लोग मजाक उड़ाते थे। स्कूल में जानेवाली प्रौढ़ लड़कियों की निंदा की जाती थी। यही वजह थी कि उस समय लड़कियां स्कूल जाने में हिचकिचाती थीं।

सन् १६१३ में साइकिल पर सवार होकर बुधवार चौक में घूमनेवाली पहली स्त्री श्रीपरांजपे की पत्नी थीं। उनको साइकल पर सवार देखने के लिए और मजाक उड़ाने के लिए बुधवार चौक में भीड़-की-भीड़ इकट्ठी हो जाती थी। स्कूल जानेवाली लड़कियों से छेड़खानी करना, कंकड़ फेंकना आदि बातें तो खुल्लमखुल्ला चलती थीं। सन् १६१५ के बाद इस परिस्थिति में काफी सुधार हुआ।

उस समय स्त्री-शिक्षा और सामाजिक परिस्थिति की इस अवस्था के कारण राजनैतिक क्षेत्र में कार्य करनेवाली कार्यकर्त्रियों की संख्या शून्य के बराबर थी। तो भी एक बात अवश्य माननी होगी कि बंगाल के बाद महाराष्ट्रीय महिलाएं ही इस क्षेत्र में दिखाई देती थीं।। सरोजिनी नायडू, सौ० कमलादेवी चट्टोपाध्याय वगैरह के साथ महाराष्ट्रीय महिला श्रीमती अवंतिकाबाई का नाम लिया जा सकता है। महाराष्ट्र के लिए यह एक गौरव की बात है।

संपूर्ण भारत और विशेषकर महाराष्ट्र के इतिहास को देखते हुए श्रीमती अवंतिकाबाई का कार्य परखा जाय तो उनकी विशेषता स्पष्ट दिखाई देती है। सामाजिक तथा स्त्री-शिक्षा के कार्यों में अवंतिकाबाई ने स्व० देवधर का अनुकरण किया। उसी तरह राजनैतिक क्षेत्र में उन्होंने महात्माजी का अनुकरण करके महाराष्ट्र की प्रगतिशीलता और सुधारवादी वृत्ति का परिचय दिया।

महात्माजी की पहली महाराष्ट्रीय शिष्या, मराठी में महात्माजी का जीवन-चरित लिखनेवाली लेखिका, स्त्री-शिक्षा का आदर्श, 'हिंद-महिला-समाज' की स्थापना करनेवाली एकमात्र समाजसेविका और राष्ट्रीय आंदोलनों में उत्साह के साथ शामिल होनेवाली वीर महिलाओं में श्रीमती अवंतिकाबाई का नाम गर्व के साथ लिया जायगा। इन्हीं बातों की थोड़ी-बहुत जानकारी इस छोटी-सी पुस्तक में देने का प्रयत्न किया जा रहा है।

—**लेखक**

# विषय-सूची

# एक आदर्श महिला

: १ :

## जन्म और बचपन

अवंतिकाबाई का जन्म १७ सितंबर सन् १८८२ को इंदौर में हुआ। उनके पिता का नाम विष्णुपंत जोशी और माता का सत्यभामाबाई था। विष्णुपंत का घराना वैसे तो तासगांव, जि० सितारा का रहनेवाला है और उसी गांव में उनकी थोड़ी-बहुत खेती-बाड़ी और सगे-संबंधी भी थे। किंतु विष्णुपंत ने रेलविभाग में नौकरी पाते ही सारी खेतीबाड़ी अपने सगे-संबंधियों के जिम्मे कर दी और उस गांव को सदा के लिए छोड़कर परदेश चले गये। उन्होंने जिंदगी में अपनी खेतीबाड़ी का दुबारा खयाल तक नहीं किया।

अवंतिकाबाई के जन्म के समय वह इंदौर में मालबाबू थे। लगातार २५ साल तक उनका निवास इंदौर में ही रहा। अगर वह चाहते तो इन २५ सालों में कम-से-कम एक लाख की पूंजी आसानी से जमा कर सकते थे। इंदौर उस वक्त मध्यभारत में गेहूं के व्यापार का बड़ा केंद्र था। रोजाना हजारों मन गेहूं वहां से अन्य प्रांतों में भेजा जाता था। इसके अलावा, गांजा, अफीम, भंग आदि नशीली चीजें खुली और बड़े पैमाने पर छिपेतौर पर वहां से बाहर भेजी जाती थीं। ऐसी हालत में मालबाबू को रुपया कमाना असंभव न था। लेकिन विष्णुपंत का स्वभाव सरल, शुद्ध और अटल ध्येय का था। पैसे के लिए किसीका दबेल रहना उन्हें मंजूर न था। "टूटेंगे लेकिन झुकेंगे नहीं" यही उनकी टेक थी।

नौकरी के कारण वह हमेशा व्यापारियों के घने संपर्क में आते थे और थे और वे लोग उनको खुश रखने की कोशिश में रहते थे। इसलिए स्थानीय और बाहर के व्यापारी विष्णुपंत के यहां मेवे, मिठाइयां, कपड़े, खिलौने आदि चीजें भेजा करते थे। लेकिन विष्णुपंत या उनके घर के लोग उन चीजों को छूते तक न थे। सारी चीजें ज्यों-की-त्यों लौटा दी जाती थीं। सिर्फ एक ही चीज ऐसी थी जो विष्णुपंत लोगों से ले लिया करते थे और वह चीज थी दिवाली के पटाखे। स्टेशन पर विष्णुपंत के मातहत काम करनेवाले मजदूर उन्हें ये चीजें बड़े भक्तिभाव से देते थे और इस भक्ति-भेंट को अस्वीकार करना उनके लिए बहुत मुश्किल था।

इस तरह के शुद्ध स्वभाव के कारण धोखेबाज नौकरों पर उनका बहुत दबदबा था। उनके अफसर भी मन-ही-मन उनसे डरते थे। उनके हृदय में विष्णुपंत के प्रति आदर भी था। विष्णुपंत के कुटुंब में उनकी पत्नी और सात कन्याएं थीं। उनकी तनख्वाह सिर्फ ८० रुपया थी। लेकिन वह जमाना ऐसा था कि चीजें बहुत सस्ती मिलती थीं। यही वजह है कि इतनी कम तनख्वाह में विष्णुपंत ने बड़ी प्रतिष्ठा के साथ अपनी गुजर की और सातों लड़कियों की शादियां शान से संपन्न की।

अवंतिकाबाई अपने माता-पिता की तीसरी संतान थीं। विष्णुपंत के पहले दो बच्चे पैदा होते ही मर गये थे। इसलिए बुजुर्ग पड़ोसी बहनों ने सत्यभामाबाई को सलाह दी कि इस बच्चे को किसीकी गोद में दे दिया जाय। इस सलाह के अनुसार अवंतिकाबाई को एक पड़ोसी की गोद में दे दिया गया। यह पड़ोसिन झांसीवाली बाई के नाम से मशहूर थीं।

सन् १८५७ के गदर में झांसीवाली रानी के परिवार के लोग तितर-बितर हो गये थे। उसमें से यह झांसीवाली बाई भी थीं। शुरू के तेरह वर्षों में इधर-उधर भटकने और तीर्थयात्रा करने के बाद सन् १८७० में वह इंदौर आईं और वहीं हमेशा के लिए बस गईं। वह बड़ी परोपकारी और दयालु थीं। ज्योतिष की जानकारी के लिए भी मशहूर थीं।

उनकी गोद में देने के बाद अवंतिकाबाई का नाम कृष्णा रखा गया।

घर क सब लोग उनको 'चिगी' नाम से पुकारते थे। झासीवाली बाई ने अवतिकाबाई को होनहार जानकर पहले ही कह दिया था कि यह लडकी आगे चलकर बडी कीर्त्तिवान् होगी।

अवतिकाबाई कठोर अनुशासन, कार्यशीलता और व्यवहार-कुशलता के लिए मशहूर थी, लेकिन बचपन मे उनका स्वभाव उससे बिल्कुल उल्टा था। घर मे बूढी दादी थी। कृष्णा उनकी बडी लाडली थी। उसकी हर-एक जिद्द पूरी करने मे दादी कुछ उठा न रखती थी। विष्णुपत कभी-कभी अपनी माताजी से कहते, "माताजी, आपके दुलार से लडकी कही बिगड न जाय।" इसपर दादी झासीवाली बाई की भविष्यवाणी का हवाला देकर उन्हे चुप कर दिया करती थी।

इस तरह के सुखदायी और निर्विरोध वातावरण मे कृष्णा का बचपन बीता। यद्यपि पूना और बबई मे लडकियो को स्कूल भेजने का रिवाज था, किंतु इदौर मे यह प्रथा न थी। अत कृष्णा को अक्षर-ज्ञान तक न हो सका।

## : २ :

## विवाह

उन दिनो की प्रथा के अनुसार ६ साल की उम्र मे ही कृष्णा की शादी की बातचीत शुरू हो गई। श्रीगोपालराव गोखले और विष्णुपत जोशी का पहले से निकट परिचय था। गोपालरावजी के इकलौते लडके बबनराव उस वक्त नागपुर मे मैट्रिक मे पढते थे। अपने पूर्व परिचय के भरोसे विष्णुपत ने बबनराव से कृष्णाबाई की शादी करने का प्रस्ताव गोपालराव के सामने रखा। विष्णुपत तथा गोपालराव के सामाजिक विचारो मे जमीन-आसमान का फर्क था। विष्णुपत रूढिवादी थे और गोपालराव कट्टर सुधारवादी। दोनो रेलवे मे नौकरी करते थे, किंतु पैसे के व्यवहार मे गोपालराव विष्णु-पत जैसे कट्टर न थे।

गोपालराव की ओर से करीब २५ लोग वधू को देखने के लिए गये।

सभीको लड़की बहुत पसंद आई। गोपालराव के चचेरे भाई एक बड़े ज्योतिषी थे। उन्होंने दोनों की जन्मपत्री देखकर भविष्यवाणी की कि आगे चलकर यह लड़की बड़ी परोपकारी और दयालु होगी, इसका यश सर्वत्र फैलेगा। उनकी स्वीकृति मिलते ही विवाह पक्का हो गया।

यद्यपि घर के सब लोगों ने लड़की को देखकर पसंद कर लिया था फिर भी बबनराव की मां की यह इच्छा थी कि उनका बेटा जाकर अपनी होनेवाली धर्मपत्नी को देख आये। उन्होंने एक बार कहा भी, "बेटा बबन, लड़की को जाकर देख तो आ।" बबनराव ने कहा, "नौ साल की चहकने-फुदकनेवाली लड़की को क्या देखना है? आप लोग जो तय करें मुझे मंजूर है।"

इस प्रकार अवंतिकाबाई का विवाह बड़ी धूमधाम के साथ संपन्न हुआ। उसकी छः बहनों की शादी में जितना खर्च हुआ, उतना अकेली अवंतिकाबाई के ब्याह में विष्णुपंत ने खर्च किया। शादी में लड़की के ससुराल से बहुत-से गहने आये। आंख से दिखाई न पड़ने की वजह से बूढ़ी दादी सारे गहने को देख नहीं सकती थी; लेकिन गहने पहने हुई अपनी पोती को टटोलकर संतोष कर लिया। नौ साल की कृष्णा अब सौ० अवंतिकाबाई बनकर गोखले-परिवार में आई। कोंकण में वेलणेश्वर नाम का गांव गोखले-घराने का प्राचीन निवास-स्थान है। देवी अहिल्याबाई के जमाने में उनके पूर्वज इंदौर रियासत में मंडलेश्वर आकर बस गये थे। वहां उनकी दो पीढ़ियां बीतीं। उसके बाद वे लोग नागपुर चले गये और वहीं जाकर बस गये।

गोखले-परिवार में गोपालराव पर ही गृहस्थी का सारा भार था, यद्यपि उन्हें अपनी नौकरी के कारण कभी यहां, कभी वहां जाना पड़ता था; किंतु उन्होंने अपने संयुक्त परिवार की जिम्मेदारी को हमेशा निभाया। गोपालरावजी उन दिनों रेलवे में गोदामबाबू का कार्य करते थे। उनकी मासिक तनख्वाह १५० रु० थी। फिर भी ऊपरी आमदनी इतनी थी कि जिससे वह अपने इतने बड़े परिवार का खर्चा आसानी से चला लेते थे। बच्चों

को उच्च शिक्षा देना आवश्यक समझकर उन्होंने अपने छोटे भाई, भतीजे और अन्य रिश्तेदारों की पढ़ाई में दिल खोलकर रुपया खर्च किया। उनमें कइयों ने कालेज की पढ़ाई समाप्त की और परिणामस्वरूप ये लोग आगे चलकर बड़े-बड़े ओहदों पर पहुंचे। एक बस्तर रियासत के दीवान बने, दूसरे सिविल सर्जन और तीसरे ने वकालत में यथेष्ठ यश प्राप्य किया।

बबनराव अपने पिता के इकलौते बेटे थे। उनकी मैट्रिक तक की पढ़ाई नागपुर में हुई। शादी के समय वह मैट्रिक की परीक्षा दे चुके थे। उस समय गोपालराव रतलाम में थे। उनके विचार प्रगतिशील थे। हाथ में पैसा व व्यवहार में नम्रता और प्रेम था। इससे उनके मित्रों की संख्या अधिक थी। बबनराव की बरात में रतलाम, अजमेर, सूरत वगैरा से करीब १५० लोग आये थे। गोपालरावजी की लोकप्रियता का अंदाजा इसीसे लगाया जा सकता है। प्रगतिशील विचारों के कारण यह अपने लड़के से मित्रवत् व्यवहार करते थे। दहेज में एक पाई भी न लेने का अपना इरादा गोपालराव ने पहले ही प्रकट कर दिया था। लेकिन घर के लोगों ने दहेज की रकम ५०० रुपया तय कर ली थी। अब क्या किया जाय ? गोपालराव बड़ी दुविधा में पड़ गए। उन्होंने दहेज में तो एक पाई भी नहीं ली, लेकिन घरवालों का मान बना रहे, इसलिए यह बात उन्होंने लोगों पर प्रकट न होने दी।

गोपालराव आधुनिक विचारों के थे। किंतु उनकी पत्नी कट्टर सनातनी, ईश्वरवादी थीं। उनके समय का बहुत-सा हिस्सा पूजा-पाठ आदि में बीतता था। अवंतिकाबाई के सामने यह एक समस्या थी कि सास सनातनी हैं और ससुर सुधारवादी। लेकिन उनकी सास सौ० लक्ष्मीबाई का स्वभाव अत्यंत प्रेमपूर्ण था। वह बहू को लड़के जैसा ही प्यार करती थीं। इसलिए अवंतिकाबाई को कभी किसी कठिनाई का अनुभव नहीं हुआ। सास की निगरानी में उन्होंने अनुशासन के साथ रहने की आदत डाली।

: ३ :

## अक्षर-परिचय

शादी के कुछ दिनों बाद बबनराव ने मैट्रिक की परीक्षा अच्छे नंबरों से पास की। इसका सारा श्रेय नव-वधू के गृह-प्रवेश को दिया गया। ससुराल में उनको सभी प्यार करने लगे। मैट्रिक की परीक्षा के बाद छुट्टियों में जब बबनराव घर आये तो उन्होंने एक स्लेट खरीदी और पत्नी को पढ़ाना शुरू किया। जिंदगी में पहली बार अवंतिकाबाई का अक्षरों से परिचय हुआ। लेकिन उनकी पढ़ाई में अधिक प्रगति न हो सकी, क्योंकि थोड़े ही दिनों बाद बबनराव विश्वविद्यालय की शिक्षा के लिए बंबई रवाना हो गये।

उनको इंजीनियरिंग से बड़ी दिलचस्पी थी। इसलिए बंबई के विक्टोरिया जुबिली टैक्निकल इंस्टीट्यूट में भर्ती हो गए। वहां डेढ़ या दो साल पढ़ने के बाद उन्हें विलायत जाना पड़ा। बबनराव मेनचेस्टर में जान हेदरिंगटन एंड संस नामक यंत्रों के कारखाने में पांच साल तक काम करते रहे। पांच साल के बाद कंपनी ने उन्हें चीन में शंघाई के पास टंगच्यू गांव में कपास के कारखाने में मशीनरी लगाने के लिए भेजा। बबनराव करीब दो साल वहां रहे। इन सात वर्षों में सिर्फ एक दफा वे ६-७ महीनों की छुट्टी पर हिंदुस्तान आये। इंग्लड जाते समय बबनराव ने घरवालों को बता दिया था कि यदि मेरे इंग्लड से वापस आने तक अवंतिकाबाई अंग्रेजी में बातचीत करने लायक न बनी तो मैं वहां से एक इंगलिश लेडी लेता आऊंगा। अल्हड़ अवंतिकाबाई यह नहीं जानती थी कि इंगलिश लेडी क्या चीज है? लेकिन इतना आभास हो गया कि यह कोई बड़ी भारी आफत होगी? अवंतिकाबाई ने मन-ही-मन निश्चय किया कि अब किसी तरह अंग्रेजी सीखनी ही होगी। उनकी मराठी की शिक्षा अक्षर-ज्ञान तक ही सीमित थी। मराठी पढ़ना भी उनकी सास ने उन्हें सिखाया था। लक्ष्मीबाई को शिवलीलामृत कंठस्थ था। वह रोज उसका पाठ करती थीं और बहू के हाथ में वह किताब देती थीं। अवंतिकाबाई को पुस्तक पढ़ने का अभ्यास इसी तरह हुआ।

इसके बाद वर्षों तक लक्ष्मीबाई अपनी बहू को सुबह चार बजे जगातीं और उनसे शिवलीलामृत का पाठ करातीं। अवंतिकाबाई को यह विश्वास हो गया कि वह छपी हुई किताबें पढ़ सकती है। अब वह छोटी-मोटी किताबों को इधर-उधर से लेकर पढ़ने लगीं।

: ४ :

## गृहस्थी की जिम्मेदारी

धीरे-धीरे रसोईघर की सारी जिम्मेदारी उनपर आ पड़ी। लक्ष्मीबाई के ४-५ घंटे सुबह पूजा-पाठ में लगते थे, लेकिन गोपालराव को ठीक समय पर भोजन देना पड़ता था, इसलिए लक्ष्मीबाई ने बहू को भोजन बनाना सिखाकर सारी जिम्मेदारी उसपर छोड़ दी।

एक दिन भोजन करते समय लक्ष्मीबाई के मन में खयाल आया कि क्या मेरे बबन को भी ऐसा ही भोजन मिलता होगा? उन्होंने गोपालराव से पूछा। गोपालराव ने कहा, "यह असंभव है।" लक्ष्मीबाई ने अपने सामने की परोसी हुई थाली दूर कर दी और भोजन छोड़ देने का निश्चय कर लिया। उसके बाद चाय, मूंगफली, खजूर और फल पर ही वह रहने लगीं।

बबनराव अपनी माता को जीजी तथा पिता को बाबूजी कहकर पुकारते थे। उन्होंने अवंतिकाबाई से अपने माता-पिता को उन्हीं नामों से पुकारने को कहा। तबसे वह भी सास-ससुर को उसी नाम से पुकारती थीं। सास और ससुर बबनराव को जितना प्यार करते थे उससे कहीं ज्यादा उन्हें अपनी बहू प्यारी थी।

वह समय ऐसा था जबकि बहू के साथ सास का प्रेम-पूर्ण व्यवहार होना आश्चर्य की बात समझी जाती थी। लक्ष्मीबाई के इस बर्ताव की पड़ोस की स्त्रियों में चर्चा होती थी। जब कभी वे उनके घर आतीं और लक्ष्मीबाई से अवंतिकाबाई के बारे में पूछा करतीं तो उन्हें जवाब मिलता, "मेरा बबन तो विलायत गया है। उसकी जगह अब मेरी बहू है।" कभी-कभी वह कहा

करती थीं, "मेरे लड़की तो है ही नहीं। मैं तो अपनी बहू को ही लड़की मानती हूं।"

सास और ससुर के ऐसे प्रेम-पूर्ण व्यवहार से प्रभावित होकर अवंतिकाबाई का हृदय उन लोगों के लिए प्रेम, श्रद्धा और नम्रता से भर गया था। इसलिए उनके खिलाफ शिकायत करने का मौका ही नहीं आता था। इस प्रकार अवंतिकाबाई अपने सास-ससुर की लाड़ली बन गई थीं। गोपालराव जब कहीं बाहर जाते तो लौटते समय अपनी लाड़ली बहू के लिए कुछ बढ़िया कपड़े और मेवे-मिठाइयां आदि लेते आते थे। इस प्यार की वजह से अवंतिकाबाई को मालूम तक नहीं हुआ कि वह अपने मां-बाप के घर में हैं या ससुराल में।

: ५ :

## अंग्रेजी की शिक्षा

अब नियमित रूप से गोपालरावजी ने अपनी बहू को अंग्रेजी पढ़ाना शुरू कर दिया। उन दिनों श्रीसप्रे नामक एक सज्जन उनके पड़ोस में रहने आये, जो सूरत हाईस्कूल के हेडमास्टर थे। किंतु वहां प्लेग फैलने के कारण यहीं आकर रहने लगे थे। वह रोज सुबह-शाम अवंतिकाबाई को अंग्रेजी पढ़ाने लगे।

गोपालरावजी अंग्रेजी की आसान किताबें बहू से पढ़वाते थे। हर हफ्ते इंग्लैंड जो घरेलू पत्र जाते उनमें नियम से १० पंक्तियां अवंतिकाबाई से अंग्रेजी में लिखवाई जाती थीं। घर में अब बाबूजी ने अंग्रेजी बोलना शुरू किया, जिससे अवंतिकाबाई को अंग्रेजी में बोलने का भी अभ्यास होने लगा। अंग्रेजी किताबें पढ़ने का तो उन्हें चसका लग गया था।

जब कुछ दिनों बाद बबनराव हिंदुस्तान आये तो अवंतिकाबाई ने उनसे शिकायत की कि म अंग्रेजी पढ़-लिख सकती हूं; लेकिन व्याकरण बिल्कुल नहीं जानती। बबनराव ने जवाब दिया, "मेरी मां और तुम्हारी

मा मराठा में अच्छी तरह बोल लेती हैं, लेकिन वे कहां व्याकरण जानती है।" इंग्लैंड पहुंचने के बाद उन्होंने हेनरी वुड, स्काट, डिकंस, आदि प्रसिद्ध लेखकों के करीब ३०० उपन्यास पत्नी के लिए भेजे। अब तो किताबों की पढ़ाई जोरों से शुरू हुई। थोड़े ही दिनों में अवंतिकाबाई ने ये सारी किताबें पढ़ डालीं। पढ़ते-पढ़ते कभी कोई मुश्किल शब्द आता तो कहतीं कि कोई परवा नहीं, मैं मतलब तो समझ ही गई। अब अवंतिकाबाई को इस बात का बिल्कुल डर न था कि बबनराव इंग्लैंड से लौटते समय इंग्लिश लेडी लायंगे। बबनराव की भी इच्छा नहीं हुई कि वह अंग्रेज युवती से शादी करें। तो भी एक ऐसी घटना हुई जो बड़ी दिलचस्प है।

मेनचेस्टर में बबनराव जिस परिवार में रहते थे, उसमें मिस्टर बर्च, उनकी पत्नी और मेरी नाम की लड़की तीन प्राणी थे। मेरी के विवाह के बाद उसका पति भी वहीं रहने लगा था। बबनराव इस परिवार के साथ इतने घुलमिल गए थे, मानो वह बर्च-परिवार के गोद लिये हुए लड़के हों। मिस्टर बर्च एक व्यापारी फर्म के ट्रस्टी थे। उनकी इच्छा थी कि उनके पश्चात् बबनराव उस फर्म का सब काम देखें। मि० बर्च के एक अमीर दोस्त थे। जेसी नाम की उनकी इकलौती लड़की थी।

मित्र के पश्चात् उसकी जायदाद की और इस जेसी के पालन-पोषण की सारी जिम्मेदारी मि० बर्च पर आ पड़ी थी।

बबनराव नहीं चाहते थे कि बालविवाह की प्रथा के कारण हिंदुस्तान की वे लोग हँसी उड़ायें। इसलिए उन्होंने अपने विवाह की बात बर्च-परिवार से छिपा रखी थी। उन्होंने सिर्फ इतना बताया था कि उनकी सगाई हो चुकी है। इंग्लैंड में हर रोज कई सगाइयां होती हैं और टूट भी जाती हैं। वे लोग सगाई को महत्व नहीं देते हैं। इसीलिए श्रीमती बर्च ने कुमारी जेसी की अनुमति से उसका विवाह बबनराव से करने का इरादा कर लिया। आखिर बबनराव से भी उनकी अनुमति लेनी चाही। मामला यहांतक बढ़ने पर बबनराव ने अपनी शादी की बात सबपर प्रकट कर दी और सारा किस्सा यहीं खत्म कर दिया।

: ६ :

# दुर्घटना

जैसा बताया जा चुका है, इंगलैंड में पांच साल बिताने के बाद जान हेदरिंगटन एंड संस नामक कंपनी ने उनको चीन में कपड़े की मिल में मशीनें लगाने भेजा था और वहां बबनराव को दो साल रहना पड़ा था। इसी दरमियान यंत्रों की देखभाल करते समय उनके बाएं हाथ की अंगुलियां यंत्र में फंसकर कट गईं। तब बबनराव ने कंपनी को लिखा, "चूंकि मेरी अंगुलियां कट गई हैं। इसलिए अब पहले जैसा काम मुझसे नहीं हो सकेगा। अब मुझे सेवा से मुक्त कर दिया जाय।" इसपर कंपनी ने जवाब दिया कि जबतक आपका सिर आपके कंधों पर है तबतक कंपनी को आपकी जरूरत है। अत: बबनराव लिवरपूल वापस जाने के लिए जहाज पर सवार होगए। जहाज कलकत्ता, कोलंबो, बंबई होकर जानेवाला था। उन्होंने सोचा कि जबतक जहाज कलकत्ता से बंबई पहुंचेगा तबतक मैं रेल से नागपुर जाकर घरवालों से मिल आऊंगा। बबनराव सीधे कलकत्ता से नागपुर पहुंचे। घर पहुंचने पर उन्होंने अपने सगे-संबंधियों से कहा कि इस बार वह अपनी पत्नी को इंग्लैंड ले जायंगे और हमेशा के लिए वहां के नागरिक बन जायंगे; पर उनके तथा अवंतिकाबाई के माता-पिता को यह बात मंजूर न हुई। आखिरकार विवश होकर उन्होंने विलायत जाने का इरादा छोड़ दिया और कंपनी को अपने इरादे की सूचना दे दी। उन्होंने यह तय किया कि चीन में जो १५-१६ हजार की पूंजी जमा की थी उसीके सहारे यहींपर कुछ व्यवसाय शुरू किया जाय।

इंग्लैंड में बबनराव ने देखा था कि धनी परिवार की लड़कियां भी नर्सिंग तथा दायी की शिक्षा पाकर दीन-अनाथों की मदद करती हैं। कुमारी जेसी का उदाहरण भी उनके सामने था। वह छुट्टियों में गरीबों के मुहल्लों में जाती और उन्हें बताती कि घर की सफाई किस प्रकार रखनी चाहिए। बच्चों को नहला-धुलाकर कैसे साफ रखना चाहिए और तंदुरुस्ती के लिए

किन-किन बातों का खयाल रखना चाहिए। एक दफा चीन में बबनराव खुद बीमार पड़े। उस वक्त एक अमेरिकन नर्स से उनका परिचय हुआ। हजारों मील दूर आकर वह मानव-सेवा में दत्तचित्त रहती है, इनसब बातों का बबनराव पर गहरा असर पड़ चुका था।

: ७ :

## नर्सिंग-शिक्षण

बबनराव की इच्छा हुई कि अपनी पत्नी को भी इसी तरह दीन-दुखियों की मदद और समाज-सेवा में लगायें। उन्होंने अवंतिकाबाई को नर्सिंग की शिक्षा देना तय किया। इसमें उनका उद्देश्य यह था कि उनके बाद आवश्यकता पड़ने पर उनकी पत्नी दूसरों पर आश्रित न रहे।

बंबई के मोटलबाई अस्पताल में अवंतिकाबाई को भर्ती कर दिया गया। २० साल की उम्र पूरी होने पर ही नर्सिंग कोर्स के लिए किसीको दाखिल किया जाता था। उस वक्त अवंतिकाबाई की उम्र सिर्फ १७ साल की थी। अब क्या किया जाय? प्रवेश-पत्र में उम्र के खाने में २० साल की उम्र लिखी गई। अवंतिकाबाई पूरे कद की और बिल्कुल तंदुरुस्त तथा हट्टी-कट्टी थी। इसमे उनकी उम्र के बारे में किसीको शक नहीं हुआ। नर्सिंग-कोर्स मे उन्हें अस्पताल में रहना पड़ता था। वहां डा० जठार और कृष्णा पारधी अवंतिकाबाई का खास खयाल रखते थे और उनको अंग्रेजी भी पढ़ाते थे। ये दोनों डाक्टर बबनराव के मित्र थे। उस वक्त नर्सिंग का कार्य यूरोपियन और एंग्लोइंडियन महिलाओं के ही अनुकूल समझा जाता था। नर्सिंग का काम सीखने के लिए केवल छः-सात हिंदू लड़कियां थीं। यूरोपियन महिलाओं की शिक्षा अंग्रेजी में और हिंदू महिलाओं की मराठी में होती थी। अवंतिकाबाई को पहले मराठी-विभाग में रखा गया गया और बाद में उनका अंग्रेजी ज्ञान देखकर अंग्रेजी-विभाग में बदली कर दी गई। अब उनकी शिक्षा भी अंग्रेजी में होने लगी। एक साल बीतने के बाद अवंतिकाबाई की परीक्षा

हुई। और वह प्रथम श्रेणी में पास हुईं। ता० ५ अप्रेल १९०१ को उन्हें दायी का डिप्लोमा मिला। शिक्षा पूरी होने के बाद वह ससुराल गईं। अब उनका परिवार साबरमती में रहने लगा। वहां उन्हें अपने नर्सिग-ज्ञान का उपयोग करने का मौका मिला। उनकी चचेरी सास का प्रसव-काल नजदीक आया। उनकी सारी जिम्मेदारी अवंतिकाबाई ने अपने ऊपर ले ली। सास-ससुर जरा चिंतित थे। लेकिन अवंतिकाबाई ने बड़ी सावधानी से काम किया और सफलता प्राप्त की। नवजात बच्चे को लेकर जब वह बाहर आईं तो उस समय सभीको आश्चर्य हुआ। लोग कहने लगे कि खुली हवा में लाने से बच्चे के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ेगा। इसलिए यह ठीक नहीं है। लेकिन अवंतिकाबाई ने लोगों की गलतफहमी दूर की और निश्चिंत रहने को कहा। अवंतिकाबाई ने नवजात शिशु और उनकी मां का इतना अच्छा प्रबंध और देखभाल की कि प्रसव के १५ दिन बाद ही उनकी सास घर का काम-काज करने लायक हो गईं।

इसी समय बबनराव ने रियासत बड़ौदा के व्यारा नामक ग्राम में दियासलाई का कारखाना खोला। अतः अवंतिकाबाई को उनके साथ बड़ौदा जाना पड़ा।

: ८ :

## पति के कार्य में सहयोग

रियासत बड़ौदा से तीन मील दूर व्यारा नामक गांव में बबनराव ने दियासलाई का कारखाना खोला। उसके पास ही एक नाला था। नाले के पानी से खेती और कारखाने दोनों का काम लिया जाता था।

कारखाने की विशेषता यह थी कि इसके मशीन-पुर्जे सब-के-सब भारतवर्ष में ही तैयार किये गये थे। गांव से तीन मील दूर सुनसान जगह में कारखाना चलाना कोई आसान काम न था। कारखाने के मजदूर व्यारा गांव से आया करते थे। इसके अलावा अकाल-पीड़ित निराश्रितों के ५०-

६० लड़के-लड़कियां भी सरकार की सिफारिश पर काम करने के लिए आते थे। कारखाने के पास ही झोंपड़ियां बनवाकर उन बालकों के रहने का इंतजाम किया गया था। इन बच्चों के खाने-पीने का सारा खर्चा बबनराव के ऊपर था। कारखाने के काम में पति की मदद करने के लिए अवंतिकाबाई भी आगईं। शहर से दूर देहाती वातावरण में काम करना उन्हें जरा मुश्किल जान पड़ा; लेकिन धीरे-धीरे वह अभ्यस्त होगईं। अवंतिकाबाई बचपन से ही निडर थीं। बबनराव भी उन्हें प्रोत्साहित करते रहते थे। थोड़े दिनों में वह अपने काम में निपुण हो गई। अब बबनराव की गैरहाजिरी में कारखाने की व्यवस्था सुचारु रूप से अवंतिकाबाई चला लेती थीं। अक्सर ऐसे अवसर आते रहते जबकि बबनराव को दौरे पर जाना पड़ता था।

अवंतिकाबाई जिन दिनों नर्सिंग-कोर्स पढ़ती थीं; उन दिनों किसी डाक्टर ने उनसे कहा कि नर्सिंग के कार्य में यूरोपियन तथा एंग्लोइंडियन महिलाएं जितनी निडर, कार्यकुशल और मेहनती होती हैं, उतनी हमारी हिंदू-महिलाएं हो ही नहीं सकतीं। अवंतिकाबाई ने फौरन जवाब दिया कि यदि ऐसा मौका मिला तो मैं साबित कर दूंगी कि भारतीय महिलाएं यूरोपियन महिलाओं के मुकाबले में किसी प्रकार कम नहीं हैं।

: ६ :

## चुनौती का जवाब

सन् १९०२ की बात है। बंबई में चेचक की बीमारी ने भीषण रूप धारण कर लिया था। बंबई की जनता परेशान हो गई थी। उपरोक्त डाक्टर महाशय ने अवंतिकाबाई को सूचना भेजी कि अब ऐसा अवसर आ गया है जबकि आपको कार्यक्षेत्र में आकर अपने कहे हुए शब्दों को चरितार्थ करना चाहिए। चेचक छूत की बीमारी होती है, अतः ऐसी हालत में वहां सेवाकार्य के लिए जाना मौत का सामना करना था। डाक्टरी पेशे में जिन्होंने

लाखों रुपया कमाया और यश प्राप्त किया, ऐसे बड़े-बड़े डाक्टर भी बीमारी के भीषण प्रकोप से डर गये थे, लेकिन बीस साल की यह नवयुवती निर्भय होकर सेवाकार्य में डट गई। बंबई के सारे अस्पताल चेचक के रोगियों से भर गये थे। अवंतिकाबाई अपनी जान हथेली पर रखकर दिन-रात मरीजों की सेवा में लगी रहतीं। उनकी निडरता, उत्साह, कार्य-कुशलता और सेवा-वृत्ति देखकर बड़े-बड़े डाक्टरों ने भी दांतों तले अंगुली दबा ली। अवंतिका-बाई के सेवाकार्य की उन लोगों ने बड़ी प्रशंसा की। छः महीने बाद बीमारी धीरे-धीरे कम होती गई और वह वापस व्यारा चली आईं।

दियासलाई का कारखाना उस वक्त रियासत बड़ोदा के महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ की सहायता से चलता था। एक दफा महाराजा साहब खुद कारखाना देखने आये। करीब छः घंटे तक उन्होंने पूरी तरह कारखाना देखा। यहीं के बने हुए सारे स्वदेशी यंत्र और मजदूरों के बच्चों के लिए आदर्श प्रबंध देखकर वह बहुत खुश हुए। उन्होंने बबनराव की बहुत तारीफ की और जब उन्हें यह मालूम पड़ा कि बबनराव की गैरहाजिरी में कारखाने की देखभाल अवंतिकाबाई खुद करती हैं तब तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। महाराजासाहब ने उसी वक्त कहा कि अगर भारतीय महिलाएं इसी तरह अपने पति के कंधे-से-कंधा मिलाकर जीवन के हर क्षेत्र में काम करती रहीं तो भारत थोड़े ही दिनों में स्वतंत्र हो जायगा और उसकी गुलामी दूर हो जायगी। महाराजा के इस कथन का प्रत्यक्ष प्रमाण आज हम देख रहे हैं।

पिछले ५० साल में भारतीय महिलाओं ने राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में जो महत्वपूर्ण कार्य किया है, इस बात से कोई इंकार नहीं कर सका।

बबनराव को मछली पकड़ने का शौक था और उनका ढंग भी अनूठा था। महाराजा सयाजीराव को यह तरीका बहुत पसंद आया। वह पहले डायनामाइट द्वारा मछलियों को उल्टा कर देते थे और बाद में सैकड़ों की तादाद में पकड़ लेते थे। इस प्रयोग को देखने के लिए महाराजासाहब

खुद बांध पर आये और उनके सामने अपने नये ढंग से मछलियां पकड़कर बबनराव ने दो टोकरियां महाराजासाहब को भेंट कीं। दूसरे दिन भी इसी तरह बबनराव मछलियां पकड़ने के लिए गये; किंतु बदकिस्मती से हाथ में ही डायनामाइट विस्फोट होगया, जिससे उनका दाहिना हाथ बुरी तरह जख्मी हो गया।

पास के एक लड़के ने यह खबर घर पहुंचाई। अवंतिकाबाई तत्काल चल पड़ीं; लेकिन रास्ते में ही बबनराव मिल गये। अवंतिकाबाई ने झट अपनी साड़ी का किनारा फाड़ा और हाथ में पट्टी बांध दी, जिससे खून का बहना बंद हो गया। अवंतिकाबाई के नर्सिंग-ज्ञान का यहां भी सुंदर प्रयोग हुआ।

घर आते ही अवंतिकाबाई ने तार द्वारा गोपालराव को समाचार भेज दिया। व्यारा में एक डाक्टर थे, लेकिन वह सिर्फ नाम के डाक्टर थे। इस कारण उन्हें चिकित्सा की यहां पूरी मदद न मिल सकी। दूसरे दिन अवंतिकाबाई बबनराव को साथ लेकर सूरत के लिए रवाना होगईं। रास्ते में गोपालराव भी मिल गये। इस तरह पूरे ४८ घंटे के बाद हाथ का आपरेशन किया गया। डाक्टर ने सोचा कि आपरेशन के वक्त इस युवती का पास रहना ठीक नहीं। बेचारी घबड़ा जायगी। उन्होंने अवंतिकाबाई से बाहर बैठने को कहा। लेकिन अवंतिकाबाई ने जवाब दिया, "डाक्टर, आप कोई चिंता न कीजिए। मैंने नर्सिग-कोर्स पूरा किया है। पिछले ४८ घंटों में मैंने ही इनकी मरहम पट्टी की है। आप आपरेशन का काम कीजिए, मैं इनकी नाड़ी देखती रहूंगी।"

## : १० :

# पवित्र निश्चय

आपरेशन का काम पूरा होते ही सब लोग साबरमती वापस चले गए। पहले ही दिन जब अवंतिकाबाई बबनराव को खाना खिलाने लगीं तो उन्हें

खयाल आया कि अब मैं दूसरों पर कितना आश्रित हो गया हूं। पहले ही बाएं हाथ की चारों अंगुलियां कट गई थीं और अब दाहिना हाथ भी कलाई से टूट गया ! अवंतिकाबाई ने बबनराव को विश्वास दिलाया कि जबतक मैं जिंदा हूं तबतक मेरी ये १० अंगुलियां काफी हैं। मैं आपको किसी बात की तकलीफ न होने दूंगी। लेकिन थोड़े ही दिनों में बबनराव अपने बाएं हाथ के अकेले अंगूठे के सहारे खाने से लेकर लिखने तक का सारा काम खुद-ब-खुद करने लगे।

बबनराव की कोशिश के बावजूद जब कारखाने में घाटा होने लगा तो मजबूरन उसे बंद कर देना पड़ा। चार वर्ष के बाद सन् १९०३ में कारखाना बंद हुआ। बबनराव अब अपने परिवार के साथ बंबई आकर रहने लगे। यहां उन्होंने मशीन की एजेंसी ले ली और विलायत से यंत्र मंगाकर बेचना शुरू किया। इस व्यवसाय में उन्हें काफी मुनाफा होने लगा। अवंतिकाबाई भी करीब डेढ़ साल तक नर्सिंग का काम करती रहीं। उसमें उनकी मासिक आय करीब ३०० रुपया थी। उनकी कुशलता देखकर डाक्टर राव जैसे प्रतिष्ठित डाक्टर ने भी खुले दिल से उनकी तारीफ की। अब अवंतिकाबाई को यह आत्मविश्वास हो गया था कि आवश्यकता पड़ने पर वह खुद कमा सकती हैं।

गोपालराव को अब पेंशन मिलने लगी थी। वह लक्ष्मीबाई के साथ बबनराव के पास चले आये। उन दिनों बबनराव को इस व्यापार में काफी मुनाफा हो रहा था।

बबनराव की शादी के दो साल बाद उनके एक भाई हुआ था। गोपालराव स्वभाव के बड़े खर्चीले आदमी थे। वह अपनी जिंदगी में एक पाई भी न बचा पाये थे। इसलिए बबनराव और अवंतिकाबाई ने तय किया कि उनके कोई संतान न हो। इस छोटे भाई को ही अपनी संतान समझकर उनका पालन-पोषण करें और उसीके लिए धन-संपत्ति कमाएं। बबनराव ने अपना निश्चय जब माता-पिता को बताया तब उन दोनों की आंखों में आंसू आ गये। अवंतिकाबाई ने और बबनराव ने अपना यह निश्चय आखिर तक

कायम रखा और भाई के लालन-पालन में कुछ कसर बाकी न रखी।

: ११ :

## विदेश-यात्रा

सन् १९१३ तक इस परिवार का गृहस्थ-जीवन बड़े आनंद के साथ बीता; लेकिन एक ऐसा अवसर आया जबकि अवंतिकाबाई को इंगलैंड जाना पड़ा।

अवंतिकाबाई इंग्लैंड के रहन-सहन के बारे में कई बातें सुन चुकी थीं। कभी-कभी उन्हें इच्छा होती थी कि वह भी इंग्लैंड चली जायं। मन-ही-मन उन्होंने तय किया कि किसी-न-किसी दिन अपनी इस इच्छा को जरूर पूरी करेंगी। उन्हें इसका खयाल तक नहीं था कि उनकी इच्छा जल्द ही पूरी होनेवाली है।

इचलकरंजी के राजा श्रीमंत घोरपड़े साहब उन दिनों इंग्लैंड में थे। उन्होंने अपनी रानी साहिबा को भी वहां बुलाया; लेकिन वह अकेली कैसे जातीं। किसी सहेली की जरूरत थी और इस प्रकार की सहेली उन्हें कहां मिले? रानी साहिबा इस चिंता में थीं। एक दिन इचलकरंजी के दीवान अवंतिकाबाई के पास आये और उन्होंने प्रार्थना की कि वह रानी-साहिबा के साथ इंग्लैंड चली जायं। अवंतिकाबाई ने यह बात मंजूर कर ली।

१० मई को रानी साहिबा के साथ अवंतिकाबाई विलायत के लिए संध्या के ५ बजे जहाज पर सवार हो गईं। साथ में डाक्टर और एक नौकर भी था। सभी पहले दर्जे में सफर कर रहे थे।

बंबई का किनारा छोड़कर जहाज अदन की तरफ जा रहा था। अपनी मातृभूमि, सगे-संबंधियों तथा घरवालों से दूर जा रही हैं, इस प्रकार के विचार से अवंतिकाबाई के मन को कुछ तकलीफ हो रही थी। चलते समय उन्होंने कहा था कि मेरे प्राण तो बंबई में हैं, सिर्फ मेरा शरीर विलायत जा

जा रहा है। जहाज पर सरोजिनी नायडू से उनकी पहली बार मुलाकात हुई और आगे जाकर इंग्लैंड में इन दोनों की मित्रता बढ़ती गई और वे एक-दूसरे के अधिक नजदीक आती गईं।

बंबई में अवंतिकाबाई गंधर्व महाविद्यालय में जाती थीं। शौक के खातिर उन्होंने वायलिन बजाना सीखा था। इस विद्या का जहाज पर बहुत ही अच्छा उपयोग हुआ। संध्या के समय डेक पर बैठकर जब वह वायलिन बजातीं और उसमें से 'जय जगदीश हरे' के मधुर स्वर निकलते, उस समय भारतीय ही नहीं, बल्कि अन्य यात्री भी मंत्र-मुग्ध हो जाते थे। जहाज पर छोटे बच्चे हमेशा उनको घेरे रहते थे। अवंतिकाबाई की धारा-प्रवाह अंग्रेजी बोल-चाल, सुसंस्कृत व्यवहार और प्रगतिशील विचारों की वजह से जहाज के मुसाफिर उनपर मुग्ध थे। फलस्वरूप वहां घरेलू वातावरण तैयार हो गया था।

रानी साहिबा के साथ रसोई का सारा सामान था। उनका नौकर कुकर पर दाल-भात आदि स्वादिष्ट भोजन बनाता था। उनको घर जैसा आनंद जहाज पर भी मिल रहा था। उन्हें जहाज पर कभी भी भोजन नहीं करना पड़ा। उन्होंने अपना दैनिक कार्यक्रम बना रखा था। दोपहर का समय पढ़ने म व्यतीत होता था। संध्या को सभी महिलाएं संगीत के कमरे में इकट्ठी होतीं और बारी-बारी से गाती-बजातीं। सारी यूरोपियन महिलाएं यह देखकर चकित हो जातीं कि एक भारतीय महिला बिना नोटेशन की किताब को सामने रखे किस खूबी से वायलिन बजाती है।

जहाज में कुछ खराबी पैदा होगई थी, इसलिए अदन पहुंचने पर दूसरे जहाज से आगे जाना पड़ा।

१ जून को इनका जहाज पेरिस पहुंचा। करीब १० दिन तक ये लोग पेरिस में ठहरे। पेरिस दुनिया का सबसे खूबसूरत शहर है। १० दिन में जितना कुछ देख सके उन्होंने देख डाला। नैपोलियन की कब्र ने अवंतिका-बाई के दिल पर बहुत असर डाला। इस कब्र में नैपोलियन की लाश बहुत गहराई में दफन की गई थी। उसकी वजह यह थी कि नैपोलियन जैसे महा-

पुरुष की कब्र पर आनेवालों को नम्रता से सिर नीचे झुकाना चाहिए। अवंतिकाबाई को जब यह मालूम हुआ तो उन्हें अपने देश का खयाल आया। जहां फ्रांसीसी लोग, अंग्रेजों के साथ युद्ध में पराजित, अपने महान् वीर का इतना बड़ा स्मारक खड़ा करते हैं वहां अपने देश में छत्रपति शिवाजी,महाराज सम्भाजी-जैसे राष्ट्रवीरों की समाधियां बुरी हालत में दिखाई देती हैं। इस बात से अवंतिकाबाई को बहुत दुःख हुआ।

फ्रांसीसियों के हृदय में नैपोलियन के प्रति कितना महान आदर तथा अभिमान में आत्मीयता मालूम होती है, इसका अंदाजा नैपोलियन के विशाल स्मारक से ही लग सकता है। पेरिस शहर और वहां की कारीगरी, नैपोलियन की याद को ताजा कर देती है। इसके मुकाबले में हमारे देश में सिर्फ ताजमहल मुगल खान्दान की याद दिलाता है। मराठी राज्य की याद दिलानेवाला कोई भी स्मारक हिंदुस्तान में दिखाई नहीं पडता। इस प्रकार के विचार अवंतिकाबाई के दिमाग में चक्कर काटा करते थे। नैपोलियन के इस विशाल स्मारक को देखकर अवंतिकाबाई के हृदय में अपने देश और वहां की संस्कृति से विशेष अनुराग पैदा हुआ और कर्तव्य-परायणता आदि गुणों का प्रादुर्भाव हुआ। स्थानीय मार्गदर्शक ने नैपोलियन के संबंध में कई आख्यायिकाएं उनको सुनाईं। इन सबका उनपर गहरा असर हुआ। इन कथाओं से अवंतिकाबाई को मालूम हुआ कि नैपोलियन में अपने दुश्मन को भी इशारों पर नचाने की कितनी ताकत थी। नैपोलियन की इस विशेषता का लक्षण उन्हें महात्माजी में दिखाई दिया और वह महात्माजी की ओर आकृष्ट हुई।

## : १२ :

# सामाजिक तथा शिक्षा-संबंधी अध्ययन

१० जून को रानी साहिबा अपने परिवार के साथ लंदन पहुंचीं। अवंतिकाबाई रानी साहिबा को राजासाहब के हवाले कर जिम्मेदारी से मुक्त

हुई। अब वह निश्चिंत होकर इधर-उधर घूम सकती थीं। उन्होंने सोचा कि कुछ दिन लंदन में रहकर इंगलैंड की सामाजिक परिस्थिति का अध्ययन करें। खासकर वहां की लोकोपयोगी संस्थाओं की कार्यपद्धति को देखने की अभिलाषा उनमें पैदा हुई।

बबनराव के एक मित्र डा० येरूलकर लंदन में रहते थे। उनकी सहायता से उन्हें लंदन के पश्चिमी हिस्से में रहने लायक जगह मिल गई।

पहले उन्होंने श्रम-पीड़ितों का ब्रामटन अस्पताल देखा। यह अस्पताल पूर्णतया लोगों की सहायता से चलता था। अस्पताल में रोगी सुख और आराम के साथ जीवन व्यतीत कर सकें, इसके लिए काफी प्रबंध किया जाता था। इलाज मे जब रोगी की तबीयत जरा सुधर जाती तब उसे ब्रामलेस भेजा जाता था। ब्रामलेस एक नैसर्गिक स्वास्थ्य-प्रद स्थान था। ब्रामटन अस्पताल की सुव्यवस्था, वहां की सफाई एवं स्वच्छ वायुमंडल ने अवंतिकाबाई के दिल पर गहरा असर डाला। वह यूरोप में कोई नई चीज देखतीं तो झट उसकी तुलना हिंदुस्तान से करतीं और हिंदुस्तान में वैसा ही करने का निश्चय करतीं। एक सप्ताह लंदन में बिताकर १९ जून को वह मैनचेस्टर पहुंचीं। वहां एक दिन रहकर दूसरे दिन ही ब्लैकपूल के लिए रवाना हो गईं। बबनराव करीब पांच साल तक बर्च-परिवार के साथ रह चुके थे। इससे इस परिवार के साथ उनके संबंध कुछ घरेलू-से हो गये थे। उसी परिवार से मिलने के लिए अवंतिकाबाई ब्लैकपूल जा रही थीं। अपने आने की खबर उन्होंने पहले से ही दे रखी थी।

करीब ७५ साल के मिस्टर बर्च, उनकी पत्नी और कन्या मेरी अवंतिकाबाई के स्वागत के लिए स्टेशन पर आये थे। गाड़ी से उतरने पर मेरी ने उनका आलिंगन किया। बर्च पति-पत्नी ने भी उनका वात्सल्यपूर्ण स्वागत किया और उनको प्यार किया।

अवंतिकाबाई जब इंगलैंड के लिए रवाना हुई थीं तभी बबनराव ने उनसे कह दिया था कि जब तुम ब्लैकपूल जाओगी और बर्च-परिवार से मिलोगी तब मि० बर्च तुम्हें प्यार करेंगे। ऐसी वहां की प्रथा ही है। इसीमे

मि० बर्च के प्यार से अवंतिकाबाई को आश्चर्य न हुआ; क्योंकि वह इसके लिए पहले से ही तैयार थीं।

अवंतिकाबाई का इरादा था कि ब्लैकपूल में बर्च-परिवार के साथ ३-४ दिन रहकर हिंदुस्तान लौट आयें, लेकिन बर्च-परिवार के लोगों ने उनकी एक न मानी। उन्होंने अवंतिकाबाई को पूरे तीन महीने अपने साथ रखा। वह बराबर कहते कि हम तार से बबनराव को यहां बुला लेंगे। तुम दोनों हमेशा के लिए यहां रहो। यह अवंतिकाबाई को पसंद न आया। उन्होंने नम्रता से जवाब दिया कि मैं अपने देश की कुछ सेवा करना चाहती हूं। इसलिए मैं अपने देश में रहकर ही देश-बंधुओं की सेवा कर सकूंगी। विलायत के प्रवास में अवंतिकाबाई का अंग्रेजी संस्कृति और वहां के रहन-सहन से परिचय हुआ। अब उनकी अंग्रेजी भाषा अच्छी होगई थी। ब्लैकपूल इंगलैंड के उत्तरी हिस्से में एक रमणीक नगर है। इसलिए गर्मियों में रईसों की यहां भीड़ जमा हो जाती है। यहां हरे-भरे बागों से सुसज्जित शिशु-पालनगृह तथा महाविद्यालय-जैसी शिक्षा-संस्थाएं हैं। उनका बारीकी से अध्ययन करने का मौका अवंतिकाबाई को मिला। महिलाओं के अभ्यास-क्रम में वहां जो गृहोपयोगी बातें दिखाई देती थीं उनका उन्होंने पूर्णतया अभ्यास कर लिया। इस ज्ञान का भविष्य में हिंद-महिला-समाज के कार्य में काफी उपयोग हुआ।

अवंतिकाबाई जब इंगलैंड में थीं उस समय बबनराव माथेरान में थे। बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ भी उस समय बबनराव के पड़ौस में ही रहते थे। अवंतिकाबाई हर हफ्ते अपने पति को विलायत से खत भेजतीं। वह हिंदुस्तान से इंगलैंड आनेवाले राजा-महाराजाओं और उनके राजकुमारों के संबंध में, जो अपनी गरीब रियाया का पैसा पानी की तरह बहाकर खर्च करते और स्वेच्छाचारिता का अनियमित जीवन बिताते थे, अपने पत्रों में जिक्र करतीं और उनकी कड़ी आलोचना करतीं। उनके खत पढ़कर महाराजासाहब बड़ौदा मजाक में कह देते, ऐसा मालूम होता है कि अवंतिकाबाई तो राजा-महाराजाओं पर बहुत ही खफा है।

बर्च-परिवार का व्यवहार अवंतिकाबाई के साथ पूर्णतया घरेलू था। मिसेज बर्च ने अपना खुद का कमरा उनको दे दिया था। अवंतिकाबाई कट्टर शाकाहारी थीं। इसलिए उनके लिए भोजन आदि का खास इंतजाम रखा गया था। अंग्रेजों के गृहस्थ-जीवन से वह बहुत ही प्रभावित हो चुकी थीं, हां साथ ही उनके उस जीवन के अनेक दोष भी उनके सामने आ चुके थे। उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि इन लोगों के रसोईघर में सफाई की व्यवस्था ठीक नहीं थी। आसपास किंडरगार्टन स्कूल, पाक-शिक्षा, विद्यालय, सिलाई वगैरा के स्कूल का भली प्रकार निरीक्षण किया। एक बार वह वहां के प्रसिद्ध बोर्डिंग स्कूल को देखने गईं। वहां के संचालकों ने उन्हें सारा स्कूल दिखाया और वहां की शिक्षा-पद्धति भी समझाई। इस स्कूल में लड़कियों को सुगृहिणी बनाने की शिक्षा खासतौर से दी जाती थी। बौद्धिक शिक्षा के अलावा शारीरिक शिक्षा भी अनिवार्य रूप से दी जाती थी। वहां के स्कूलों में सैनिक शिक्षा की भी व्यवस्था थी। वहां के संचालक ने स्कूल को पूरी तरह दिखाने के बाद अवंतिकाबाई से कहा—"इसी तरह हम अपने देश के सच्चे नागरिकों का निर्माण करते हैं।"

बालक-बालिकाओं को दंड का डर दिखाये बिना हँसी-खेल द्वारा पढ़ाई का तरीका तथा वहां का अनुशासन अवंतिकाबाई को बहुत ही पसंद आया।

उनके ब्लैकपूल छोड़कर चले आने के समय बर्च-परिवार को अत्यंत दुःख हुआ और उन लोगों का साथ छोड़ते समय अवंतिकाबाई की आंखें भर आईं। बर्च-परिवार की याद लेकर वह बरमिंघम में बबनराव के मित्र डा. पारथी के घर २–३ दिन रहकर लंदन चली आईं, जहां वह एक सप्ताह ठहरीं। यहां भी उन्होंने कई शिक्षण-संस्थाएं तथा उनकी कार्यपद्धति का निरीक्षण किया। धनी महिलाओं को ऐसी संस्थाओं में बड़े उत्साह से काम करते देखकर उन्हें सानंद आश्चर्य हुआ। उन्हें मालूम हुआ कि केवल व्याख्यान देकर या पत्र-पत्रिकाओं में लिखकर ही महिलाओं की उन्नति नहीं होती।

उन दिनों इंगलैंड में रहनेवाले भारतवासियों के हर महीने खाने के

लिए इकट्ठे होने की परिपाटी थी। ऐसे ही सम्मेलन में अवंतिकाबाई भी उपस्थित थीं। वहींपर श्रीगोपालकृष्ण गोखले से उनका पहले-पहल परिचय हुआ। श्रीमती सरोजिनी नायडू से भी वहींपर मित्रता हुई।

## : १३ :

## स्वदेश वापसी

इंगलैंड की यात्रा पूरी करके वह भारत लौटने के लिए तैयार हुईं। जाते समय साथ में अनेक परिचित लोग थे, लेकिन वापस आते समय कोई भी परिचित न था। कम-से-कम मार्सेल्ज तक किसीको साथ लेने का उनके मन में विचार आया; लेकिन झट उन्होंने हिम्मत बांधी और तय किया कि अकेले ही सारा प्रवास किया जाय और वह मित्रों से विदा होकर इंग्लैंड से रवाना हो गईं।

फ्रांस की भाषा के न जानने से मार्सेल्ज तक की मुसाफिरी में उन्हें कई मुसीबतों का सामना करना पड़ा। वहां से वह डंबिया जहाज द्वारा हिंदुस्तान वापस आ गईं।

विलायत की इस यात्रा से अवंतिकाबाई के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन हो गया। उनका विचार-क्षेत्र विस्तृत हुआ और उन्हें यह महसूस हुआ कि जीवन में सारे व्यवहार केवल अपने तथा अपने परिवार के लिए ही सीमित नहीं होने चाहिए। हरेक को अपने समाज और अपने देश की प्रगति के लिए यथोचित प्रयत्न करना निहायत जरूरी है। जब उन्होंने देखा कि भारतीय महिलाएं दुनिया की महिलाओं से कितनी पिछड़ी हुई हैं तो उन्होंने तय कर लिया कि अपनी बहनों की उन्नति के लिए कुछ-न-कुछ कार्य करना चाहिए। देश-प्रेम की भावना उनके दिल में तीव्रता से जाग उठी। सेवावृत्ति तो उनके स्वाभाव में थी ही। सिर्फ कार्यक्षेत्र में इसका उपयोग करने के लिए उन्हें एक सुयोग्य पथ-प्रदर्शक की जरूरत थी।

भारत वापस आते ही यह कमी पूरी हो गई, क्योंकि भारत-सेवक-

समाज के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता गोपालकृष्ण देवधर ने इस क्षेत्र में कार्य करने के लिए उन्हें अच्छा अवसर दिया।

## : १४ :

## समाज-सेवा का प्रारंभ

इंग्लैंड से वापस आने पर अवंतिकाबाई ने सारा जीवन समाज-सेवा में व्यतीत करने का निश्चय किया। बड़ौदा से रानी पद्मावती के पास उनकी सहचरी की हैसियत से रहने की उनसे प्रार्थना की गई थी, परंतु उन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया।

सन् १९१३ में देवधरजी की प्रेरणा पाकर उनके पथ-प्रदर्शन में अवंतिकाबाई ने समाज-सेवा का कार्य प्रारंभ किया। उनके जीवनकाल में यह समय एक नये परीक्षण का था, क्योंकि उन्होंने नये कार्यक्षेत्र में पदार्पण किया था।

शुरू में सेवासदन की ओर से होनेवाले शिक्षा-प्रचार-कार्य में वह सहयोग देती रहीं। निकमबहन अंग्रेजी के वर्ग चलाती थीं, जहां अवंतिकाबाई पढ़ाने जातीं। पढ़ाने का तरीका देवधरजी से उन्होंने सीखा था। अपनी निगरानी में वह अवंतिकाबाई से काम करने को कहते और जब विश्वास हो गया तो उनपर सारे कार्य की जिम्मेदारी छोड़ दी। अब वह रोजाना दो घंटे अलग-अलग पढ़ाई का काम करने लगीं।

इंग्लैंड, बरमिंघम, मैनचेस्टर जैसे औद्योगिक शहरों में मजदूरों में कार्य करनेवाली प्रतिष्ठित महिलाओं का कार्य अवंतिकाबाई ने खुद देखा था। उससे प्रभावित होकर उन्होंने तय किया कि भारत लौटकर वह इसी तरह का कार्य करेंगी। इस निश्चय के परिणामस्वरूप अब वह हफ्ते में तीन घंटे के लिए लालबाग, परेल के मजदूरों की बस्ती में जातीं और वहांपर मजदूरों को सफाई इत्यादि के बारे में समझाया करतीं। शिशुपालन के तरीके वह स्वयं इन्हें समझातीं। अछूत-वर्ग की ओर उनका अधिक झुकाव था। वह
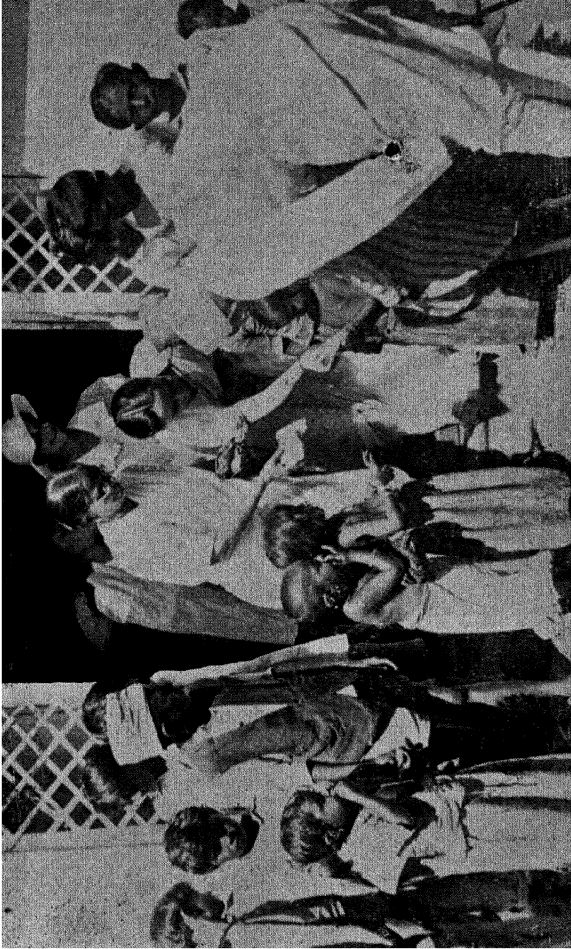
उगते राष्ट्र की पोषिका

उन लोगों से बार-बार मिलतीं और उनकी कठिनाइयां और जरूरतें समझकर मदद करने की कोशिश करतीं। इस कार्य में उन्हें विशेष दिलचस्पी रहती थी। मकर-संक्रांति का त्यौहार वह हरिजनों के मुहल्लों में ही मनाया करती थीं। उस दिन तिल के लड्डू बनाकर साथ में ले जाती और हरिजन बस्ती में हल्दी कूंक—हल्दी-रोरी समारोह मनातीं। अस्पृश्य बहनों को हल्दी-रोरी देतीं। उन्हें इस कार्य में उनकी एक सहेली गौरीबहन खाडिलकर (प्रसिद्ध मराठी पत्रकार, पंडित तथा नाट्याचार्य स्व. काकासाहब खाडिलकर की धर्मपत्नी) सहायता देती थीं। यह परिपाटी अवंतिकाबाई ने आखिर तक निभाई।

मजदूरों की औरतों में यह रिवाज था कि नौकरी पर जाते समय अपने बच्चों को घर में बंदकर उन्हें अफीम दे देती थीं, जिससे वे बीच में जागकर न रोयें। अवंतिकाबाई ने उन्हें समझाया कि यह तरीका ठीक नहीं है और उन्होंने अपने प्रयत्न से उसे फौरन बंद करा दिया। आजकल बंबई के करीब हरेक पुतलीघर में मजदूर-महिलाओं के बच्चों की देखभाल के लिए शिशु-पालनगृह खुल गये हैं। इंग्लैंड की तरह यहां भी क्रेश-पद्धति शुरू करने और उसका प्रचार करने का कार्य करने लगीं।

'क्रेश' का मतलब है, नौकरी पर जानेवाली महिलाओं के बच्चों को एकत्रित कर रखने का स्थान। वहांपर बच्चों की देखभाल करने, उनको नहलाने-धुलाने, खिलाने-पिलाने, साफ कपड़े पहनाने आदि का प्रबंध होता था।

इस काम के लिए मजदूरों की बस्ती में एक जगह किराये पर ले ली गई और इसका खर्च चलाने के लिए कुछ उदार धनिकों से आर्थिक सहायता मांगी गई। श्री करमायकेल, वार्डला मिलंस आदि अंग्रेज महिलाएं इस कार्य में अवंतिकाबाई की सहायता करती थीं। यह कार्य सन् १९१७ तक बेरोक-टोक चलता रहा। गोपालराव देवधर उनके सामाजिक कार्य के गुरु और पथ-प्रदर्शक थे। अवंतिकाबाई ने उनसे पूरा और समुचित लाभ उठाया। गुरु के प्रोत्साहन से उनकी सेवावृत्ति उत्तरोत्तर बढ़ती गई।

इस कार्य का सिलसिला अगर आगे चलता तो भविष्य में एक दिन अवंतिकाबाई महान् मजदूर-नेता के रूप में सामने आतीं; क्योंकि जिस भारत-सेवक-समाज ने कई मजदूर-नेताओं का निर्माण किया है, उसीकी देख-रेख में वह भी कार्य किया करती थीं; परंतु ईश्वर को कुछ और ही मंजूर था। उनके द्वारा इससे भी बढ़कर महत्वपूर्ण कार्य होनेवाले थे। इस अवसर पर एक ऐसी घटना घटी कि जिससे अवंतिकाबाई के जीवन में आमूल परिवर्तन हो गया। उनका कार्यक्षेत्र ही बदल गया।

: १५ :

## गांधीजी से परिचय

सन् १९१६ में कांग्रस-अधिवेशन लखनऊ में हुआ। यहां स्व. श्रीनिवास शास्त्री ने अवंतिकाबाई का गांधीजी से परिचय कराया।

उस वक्त गांधीजी को महात्मा-पद नहीं मिला था। वह समय दूर था जब उनके व्यक्तित्व ने समूचे भारत को मंत्र-मुग्ध कर दिया। गांधीजी सन् १९१५ में दक्षिण अफ्रीका से हिंदुस्तान लौटे थे। देश के कोने-कोने में भ्रमणकर यहां की परिस्थिति का गंभीरता से अध्ययन कर रहे थे।

सन् १९०७ में कांग्रेस में फूट पड़ी और तब से कांग्रेस में हिस्सा लेने-वालों की संख्या हर साल घटती गई। गरम दल कांग्रेस से अलग हो गया था। कांग्रेस की पूरी बागडोर नरम दलवालों के हाथ में थी। १९१६ का कांग्रेस-अधिवेशन बाबू अंबिकाचरण मजूमदार की अध्यक्षता में हुआ था। गरम दल के नेता लोकमान्य तिलक इस अधिवेशन में अपने दलसहित आये हुए थे। श्रीमती एनी बेसेंट भी आई हुई थीं। नरम दल के लोग भी काफी संख्या में उपस्थित थे। सुप्रसिद्ध लखनऊ-पैक्ट इसी समय हुआ। मुसलमान भी बड़ी तादाद में कांग्रेस के इस जल्से में शरीक हुए थे। गांधीजी भी थे, लेकिन किसी प्रस्ताव पर उनका भाषण नहीं हुआ। उनमें यह विशेषता थी कि वह पहली ही मुलाकात में आदमी को भलीभांति परख लेते थे। अवं-

तिकाबाई से मुलाकात होने पर उन्हें अच्छी तरह परख लिया। इस महाराष्ट्रीय महिला में कुछ विशेष तेज है, इसका आभास उन्हें हो गया था। स्त्रियों की उन्नति तथा अछूतोद्धार का कार्य करना ही था, इसलिए उन्होंने मन-ही-मन तय कर लिया कि इन कामों में वह इस महिला का सहयोग लेंगे। बाद में जब उन्होंने यह काम अवंतिकाबाई के जिम्मे कर दिया तब उन्हें अनुभव हुआ कि उनकी परख कल्पना से भी अधिक योग्य निकली।

उन दिनों गांधीजी का नाम बहुत कम लोग जानते थे। यहां की आम जनता उनके दक्षिण अफ्रीका के महान् कार्य से अपरिचित थी। जनता को उन्होंने अपनी ओर अबतक आकर्षित नहीं किया था। लेकिन ऐसी हालत में भी अवंतिकाबाई को उनकी महानता का दर्शन हुआ। वह पहचान गई कि इस व्यक्ति में असाधारण गुण हैं। उन्होंने गांधीजी से एकमत होकर आखिरी दम तक उनके कार्य में अपना उचित हिस्सा बंटाया। अनेक विचार, बाधाओं और आलोचनाओं तथा राजनीतिक तूफानों के बावजूद गांधीजी के प्रति उनका विश्वास और उनकी श्रद्धा अटल रही।

साबरमती में गांधीजी ने जब अपना छोटा-सा आश्रम खोला तो उसे देखने के लिए उन्होंने अवंतिकाबाई को निमंत्रण दिया। लखनऊ से लौटते समय वह साबरमती उतर गई। उनके साथ में बबनराव भी थे। वह आश्रम में सिर्फ एक ही दिन रहीं। लेकिन इस एक दिन के सहवास में आश्रम के वातावरण ने उनके दिल पर अच्छा प्रभाव डाला। शेष आयु आश्रम के पास ही रहकर बिताने की उन्हें इच्छा हुई। इसीसे आश्रम के पास उन्होंने एक जमीन खरीद ली। बाद में उन्हें साबरमती से चला आना पड़ा और वह जमीन भी बेच डालनी पड़ी।

कुछ दिन बाद गांधीजी बंबई आये। इस बार फ़िर गांधीजी से उनकी भेंट हुई। गांधीजी ने कहा, "थोड़े ही दिनों में मैं किसी काम की सारी जिम्मेदारी तुम्हें सौंप देना चाहता हूं।"

इसी बीच उनके परिवार में एक दु:खद घटना घटित हो गई। अवंतिकाबाई के ससुर का स्वर्गवास हो गया। उनकी मृत्यु के समय बबनराव ने

अपने पिता को वचन दिया था कि आपकी कमाई की एक कौड़ी भी मैं न लूंगा। वह छोटे भाई की जायदाद होगी। अवंतिकाबाई भी वहां थी। उन्होंने कहा कि मैं पति के वचन से बंधी हूं। यह कहकर उन्होंने अपने सारे गहने, जो कि वास्तव में स्त्री-धन के नाते उन्हींके थे, देवर को दे दिये। कई लोगों ने उन्हें समझाया कि गहने उनके खुद के हैं। उनपर बबनराव का भी अधिकार नहीं है। इसलिए वचन-पूर्ति के लिए गहने देने की कोई आवश्यकता नहीं है; लेकिन अवंतिकाबाई ने किसीकी न सुनी और सारे जेवर दे दिये।

बंबई की भेंट में गांधीजी के कहने के अनुसार जो कार्य उनके जिम्मे आनेवाला था उसके इंतजार में वह थीं कि एक दिन श्रीठक्कर बापा की ओर से उनके पास एक संदेश आया। उन्होंने कहला भेजा कि आपको चंपारन जाने के लिए गांधीजी की आज्ञा है। इस आदेश के अनुसार गोखले पति-पत्नी मोतीहारी के लिए चल पड़े।

## : १६ :

## चंपारन में ग्राम-सेवा

चंपारन बिहार का एक जिला है। यह इलाका नील की पैदावार के लिए प्रसिद्ध था। नील के कारखानों के मालिक गोरे थे। उनकी नील की बड़ी-बड़ी बाड़ियां थीं और वे खुदगर्ज होकर वहां के किसानों पर अमानुषिक अत्याचार कर रहे थे। उन दिनों वहां की कहानी बड़ी ही हृदयविदारक थी।

इस जिले का बड़ा हिस्सा रियासत बेतिया की जमींदारी में था। राजासाहब हमेशा आर्थिक तंगी में रहा करते थे। नील के पूंजीपतियों ने कोशिश करके कुछ कर्ज दिलाया और बदले में नील की पैदाइश के लायक जमीन अपने कब्जे में कर ली। इस जमीन में नील की खेती करना किसानों की दृष्टि से हानिकारक था; लेकिन इन कारखानेदारों ने किसानों पर प्रतिबंध लगाया कि प्रति एकड़ जमीन के तीसरे या पांचवें हिस्से में नील की

उपज होनी ही चाहिए। राजकर्ताओं ने भी इन पूंजीपतियों की मदद की। इसलिए जो किसान आज्ञा का उल्लंघन करते उनपर तरह-तरह के जुल्म किये जाते थे। धीरे-धीरे ये कारखानेदार खुदबखुद जमीन के मालिक बन गये। वे कुछ निश्चित रकम जमींदार को देते थे और सब फायदा अपने लिए रख लेते थे। कारखानों के लिए यथेष्ट कच्चा माल भर लेना और उनसे बेहिसाब पैसा जमा करा लेना, ऐसे ही अत्याचार हो रहे थे।

यह वह समय था जब कि जर्मनी में तरह-तरह के रंग तैयार हो रहे थे, जिससे यहां के कारखानेदारों को नील के व्यवसाय में घाटा होने लगा। घाटा खुद बरदाश्त न कर गरीब किसानों से उसकी पूर्ति करने के लिए वे पैसा वसूल करने लगे। किसान अगर किसी खास चीज की पैदावार न चाहे तो उसे वैसा करने की सहूलियतें थीं। लेकिन इसके बदले में ज्यादा महसूल वसूल करने का हक जमींदारों को कानूनन हासिल था। इस कानून के आधार पर नील की बाड़ियों के मालिक किसानों को नील की पैदावार करने की सहूलियत देते थे और उनसे ज्यादा महसूल लेकर उनका खून चूसते थे। इस तरह लोगों से पैसे वसूल करने के नये-नये ढंग इन लोगों ने ढूढ निकाले और करीब २५ लाख रुपये इकट्ठे कर लिये।

महायुद्ध शुरू होते ही रंग की आयात बंद हो गई, जिसकी वजह से नील के व्यवसाय में फिर से तेजी आ गई। अब क्या था, कारखानेदारों ने किसानों को दिये हुए अपने सारे वचन भंग कर दिये। उनसे जबरदस्ती नील की पैदावार करवाना शुरू कर दिया। ऐसी हालत में महात्माजी चंपारन पहुंचे।

इस जिले की जनता को पूंजीपतियों का अत्याचार सहन करना पड़ रहा था। महात्माजी ने समझ लिया कि लोगों का अज्ञान, उनकी निरक्षरता, अजीब रूढ़ियां ही ऐसे जुल्मों का कारण है। एक तरफ उन्होंने कोशिश की कि राजनीतिक तरीके से इस अन्याय की जांच कराई जाय और दूसरी तरफ इन अनपढ़ लोगों को जागृत करने का कार्य किया जाय। इसके लिए उन्होंने चुने हुए कार्यकर्ताओं को चंपारन बुलाया। इन कार्यकर्ताओं में अवंतिकाबाई भी एक थीं।

गोखले पति-पत्नी मोतीहारी के लिए चल पड़े थे। ४८ घंटे की यात्रा थी, अबतक ये लोग दूसरे दर्जे में सफर किया करते थे, लेकिन इस बार गांधीजी का बुलावा था। चूंकि महात्माजी हमेशा तीसरे दर्जे में सफर करते थे, इसलिए उन्होंने भी तीसरे दर्जे में सफर करना तय किया। महात्माजी को इनके आने की खबर मिल गई थी। इसलिए उनको स्टेशन से लाने के लिए कुछ लोगों को भेजा गया। सब कहने लगे कि अवंतिकाबाई दूसरे दर्जे में आयेंगी, किंतु महात्माजी ने कहा—"अगर वे तीसरे दर्जे से आयेंगी तब तो उन्हें यहां रखूंगा, वरना वहीं वापस भेज दूंगा।" गाड़ी रात के एक बजे मोतीहारी पहुंची। स्टेशन पर देवदास गांधी को भेजा गया था; क्योंकि अवंतिकाबाई को सिर्फ वही पहचानते थे। देवदासजी ने पहले और दूसरे दर्जे के डिब्बों में गोखले पति-पत्नी को ढूंढा, लेकिन उनके न मिलने पर निराश होकर घर लौट आये। देवदासजी के घर पहुंचने के पहले ही अवंतिकाबाई और बबनराव तीसरे दर्जे से उतरकर सीधे महात्माजी के मुकाम पर आकर आराम कर रहे थे। देवदासजी ने आकर कहा कि गोखले पति-पत्नी तो आये नहीं। यह सुनकर सब लोग हँस पड़े।

गांधीजी बोल उठे, "मैंने तो पहले ही कहा था कि अवंतिकाबाई तीसरे दर्जे में आयेंगी।" उनपर महात्माजी का कितना विश्वास था। यह कहना ज्यादा अच्छा होगा कि महात्माजी हरेक आदमी को ठीक-ठीक परख लते थे।

महात्माजी ने अवंतिकाबाई को आदेश दिया कि वे एक दिन आराम करके दूसरे रोज बड़हरवा नामक देहात में चली जायं। कस्तूरबा गांधी ने कहा कि ये आज ही आई ह, कुछ लोग तो १०-१५ रोज से आये हुए ह। कल दिवाली है, दिवाली मनाकर चली जायंगी। लेकिन महात्माजी अपने शब्द के पक्के थे उन्होंने कहा—"मैंने तो उन्हें बंबई का सारा कामकाज छोड़कर यहां बुलाया है। उनका हरेक क्षण कीमती है। मैं यह उचित नहीं समझता कि यह समय व्यर्थ गंवा दिया जाय। वे जंगल में दिवाली मनाएंगी।"

दूसरे रोज अवंतिकाबाई बड़हरवा जा पहुंची। महात्माजी चाहते थे कि वहां के अनपढ़ लोगों को पढ़ना-लिखना सिखाकर उनका अज्ञान दूर किया जाय। इस उद्देश्य को सामने रखकर काम करने का आदेश अवंतिकाबाई को महात्माजी ने दिया था।

यहां आकर अवंतिकाबाई ने अपने सुखद जीवन को भुला दिया। करीब ६ महीने वह इस कार्य में रहीं। इस थोड़े से समय में जो कार्य उन्होंने किया उसके चिन्ह और उसका असर आज भी चंपारन में दिखाई देता है।

बचपन से अवंतिकाबाई को हिंदी भाषा का ज्ञान था। उन्होंने लड़के-लड़कियों के लिए पाठशालाएं खोलीं। प्रौढ़ों की शिक्षा की आवश्यकता समझाई और यह भी समझाया कि व्यक्तिगत तथा सामाजिक सफाई और आरोग्य कैसे रखा जाय।

बीमारी ने तो मानो किसानों को घेर रखा था। हर घर में कोई-न-कोई बीमार रहता था। अवंतिकाबाई रोज जाकर उनका इलाज करती थीं।

बड़हरवा के स्कूल में लगभग ७५ छोटे-बड़े विद्यार्थी भर्ती हुए। आस-पास के गांवों से भी लड़के आते थे। १० रु० माहवार पर दो शिक्षक ठीक किये गये। स्कूल का मकान नहीं था। गांव के पास एक आम का बगीचा था। वहींपर घनी छांह में पढ़ाई का काम शुरू हुआ। वहांपर यह पहली पाठशाला थी। १३ नवंबर, सन् १९१७ को महात्माजी ने उसका उद्घाटन किया। लोगों को शिक्षा का महत्व समझाया और इसके पश्चात् अन्य प्रांतों से आये हुए कार्यकर्ताओं का लोगों से परिचय कराया गया। वहां के देहातियों में काफी उत्साह था। उन्होंने अपने बच्चों को स्कूल में भेजना शुरू किया। कुछ दिन बाद इस काम की सारी जिम्मेदारी अवंतिकाबाई पर छोड़कर महात्माजी खुद दूसरे काम के लिए वहां से चले आये।

किसानों पर किये जानेवाले अत्याचारों तथा अन्यायों का मुकाबला महात्माजी ने सफलता-पूर्वक किया। अब गांधीजी का नाम देश के कोने-कोने में फैल गया। यहीं से भारत के राजनीतिक क्षेत्र में महात्माजी को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ। इसके बाद भविष्य में जो भी महान कार्य हुए,

उनका बीजारोपण चंपारन में हो चुका था। भारत के मौजूदा राष्ट्रपति राजेंद्रप्रसाद का महात्माजी से संपर्क यहीं से हुआ और तब से ये दोनों एक दूसरे में पूर्णतया विलीन हो गये।

अवंतिकाबाई की पाठशाला में शुरू-शुरू में पढ़नेवालों की संख्या ५० थी। वह बढ़ते-बढ़ते १४० तक पहुंच गई। रोज की औसत हाज़िरी १२० थी।

इस पाठशाला में लिखना, पढ़ना, इतिहास,भूगोल, गणित तथा आरोग्य-शास्त्र आदि विषयों का आवश्यक ज्ञान करा दिया जाता था। कुछ दिन बाद वहां सूत-कताई और बुनाई का काम भी सिखाना शुरू कर दिया गया। कई विद्यार्थी इस कला में पारंगत हो गये।

बौद्धिक शिक्षा के साथ-साथ बच्चों की शारीरिक शिक्षा की ओर भी पूरा ध्यान दिया जाता था। बच्चे भी इसमें खूब हिस्सा लेते थे। ऐसे वाता-वरण में बच्चों की होनेवाली उन्नति को देखकर उनके माता-पिता उत्साह से फूले न समाते थे।

सिर्फ दो ही महीने बाद अवंतिकाबाई ने एक और नया कदम उठाया। उन्होंने लड़कियों का स्कूल खोलकर कन्या-शिक्षा की कमी को पूरा कर दिया। १६ जनवरी १६१८ से इस कन्या पाठशाला में कार्य प्रारंभ हुआ। लड़कों की पाठशाला खोलना जितना आसान था, उतना लड़कियों की नहीं। इस प्रांत में पर्दे का रिवाज होने से उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। अवंतिकाबाई खुद हर घर में जातीं और लड़कियों को स्कूल भेजने के लिए उनके माता-पिता को समझातीं। बहुत परिश्रम के बाद कुछ लड़कियों को लेकर स्कूल किसी तरह शुरू हुआ ही।

गांव से बाहर एक घर में पाठशाला के वर्ग चलते थे। शुरू में केवल १२ लड़कियां थीं, बाद में बढ़ते-बढ़ते यह तादाद ४० तक पहुंच गई। यहां ७ साल से लेकर २५ साल तक की लड़कियां आती थीं। पढ़ने-लिखने के अलावा अवंतिकाबाई ने उन्हें गाना भी सिखाना शुरू किया। गाने में लड़कियां बहुत दिलचस्पी लेतीं और अधिक उत्साह से पढ़ने आतीं। पढ़ाई केवल दिन
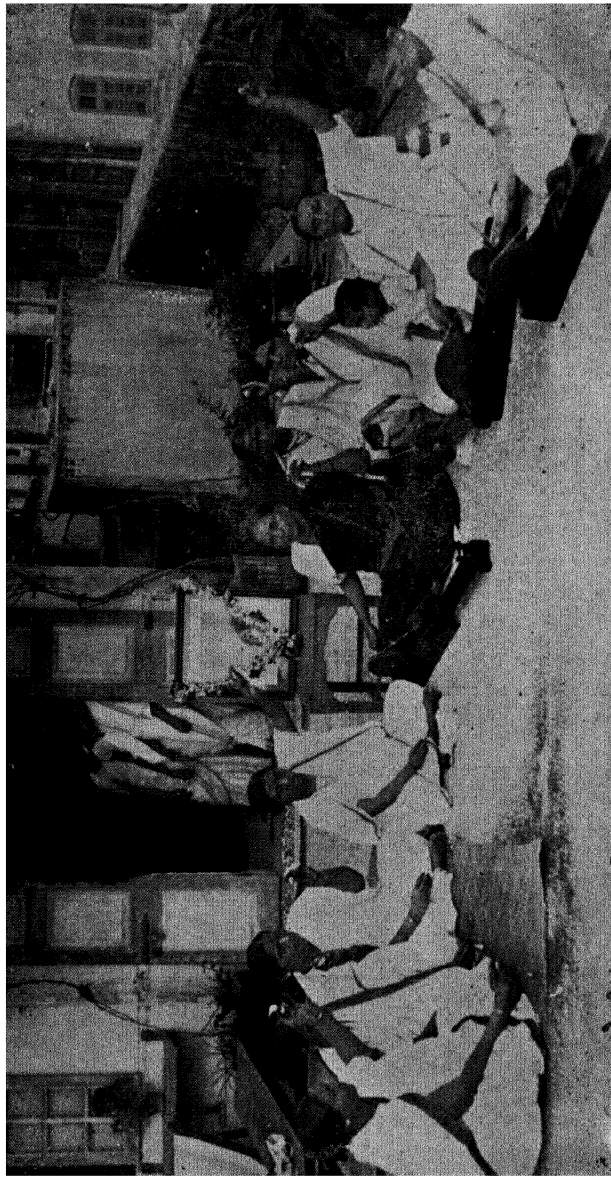
सूत्र-यज्ञ : सर्वतोमुखी सेवा का एक रूप

के २ घंटे चलती थी, क्योंकि लड़कियों को घरेलू काम में अपनी माताओं की मदद करनी पड़ती थी। पाठशाला के लड़के गांव से बाहर घूमने जाते थे। यह देखकर लड़कियों ने भी हठ किया कि वे भी घूमने जाया करेंगी। आखिर २०-२५ लड़कियों तथा बहनों को लेकर अवंतिकाबाई एक दफा घूमने गईं। उन लड़कियों तथा महिलाओं को इतनी आजादी से घूमने-फिरने का मौका कभी न मिला था, इसलिए इस प्रकार की सैर में उन्हें बहुत आनंद आया।

शिक्षा के कार्य में इससे अगला कदम प्रौढ़-शिक्षा का था। किसानों और अन्य लोगों को साक्षर करने के उद्देश्य से एक रात्रि पाठशाला भी खोली गई। करीब १५-२० व्यक्ति नियमित रूप से पढ़ने आते थे। पढ़ने-लिखने के साथ उन्हें रामायण और महाभारत की कथाएं भी सुनाई जाती थीं। इन कथाओं तथा अन्य व्याख्यानों द्वारा लोगों को ईमानदारी, एक-दूसरे की सहायता, आपसी प्रेम आदि की शिक्षा दी जाती थी। पढ़ाई का सारा काम अवंतिकाबाई ने अपने जिम्मे ले लिया था। इससे ग्राम-सफाई और आरोग्य-संबंधी काम की जिम्मेदारी बबनराव और देवदासजी ने अपने ऊपर ले ली थी। रास्ते साफ करना, नालियों में पानी जमा न होने देना और कुओं के आसपास गंदे पानी तथा कूड़ा-करकट की सफाई वे खुद करते और लोगों को ऐसा करने के लिए उत्साहित भी करते। इस कार्यक्रम से गांवों के लोगों में परिवर्तन होने लगा और गांववाले सफाई की तरफ अधिक ध्यान देने लगे। अवंतिकाबाई के नर्सिंग-शिक्षण का यहां अच्छा उपयोग हुआ। आस-पास के लोगों ने इससे बहुत लाभ उठाया। घर की छोटी-मोटी बीमारियों को ठीक करने, रोगी की सेवा-सुश्रूषा करने का तरीका अवंतिकाबाई ने वहां की महिलाओं को सिखा दिया। अपने पास की दवाएं लोगों को मुफ्त देकर बीमारों को अच्छा किया और आनेवाली बीमारियों को रोकने के उपाय बताये।

अवंतिकाबाई के प्रचार-कार्य से वहां की महिलाओं में अभूतपूर्व जागृति हुई। संध्या के समय पढ़ाई के काम से छुट्टी पाकर वह वायलिन पर तुलसी-

दास के भजन गातीं। उन्हें सुनकर लोग मंत्रमुग्ध हो जाते। शुरू में बड़ी बहनें भजन सुनने को आने में हिचकिचाती थीं, लेकिन धीरे-धीरे अवंतिकाबाई के प्रभाव से वे भी आने लगीं।

वहां की महिलाओं में अवंतिकाबाई ने क्रांतिकारी परिवर्तन कर दिया। यह उनके लिए गौरव की बात थी। यहांपर पर्दे की प्रथा का कड़ाई से पालन होता था। बच्चा होने तक बहू अपनी सास को अपना मुंह नहीं दिखा सकती थी, फिर पुरुषों को मुंह दिखाने की तो बात ही दूर रही। ऐसी स्थिति में उन महिलाओं के सामने बार-बार व्याख्यान देकर उनके विचारों में परिवर्तन करना कोई आसान कार्य न था। इस तरह उन्हें कुछ आजादी का अनुभव होने लगा। वास्तव में स्त्री राष्ट्र के उत्थान में प्रेरणा देनेवाली एक प्रमुख शक्ति है। लेकिन यह शक्ति घर के एक कोने में बंद कर दी गई थी। अवंतिकाबाई ने उसे बंधन से मुक्त करके राष्ट्र-कार्य में लगाने का महान कार्य किया और उक्त विचार वहां की जनता में अच्छी तरह पैदा कर दिया।

वहां के लोग अवंतिकाबाई को 'माताजी' कहकर पुकारते थे। माताजी के व्यक्तित्व का लोगों पर, खासकर पुरुषवर्ग पर, गहरा प्रभाव पड़ा। अब उन्होंने अपनी-अपनी स्त्रियों को पूरी आजादी दे दी थी कि माताजी उन्हें जहां-कहीं और जब-कभी बुलायें, निस्संकोच चली जायं और उनके कहने के अनुसार काम करें। माताजी के भजन तथा वायलिन के गीत लोगों पर जादू का-सा असर करते थे। उनकी सादगी ने लोगों को आकृष्ट कर लिया था। अवंतिकाबाई की वजह से वहां की महिलाएं पर्दे से मुक्त हो गईं। वहां अनपढ़ लोग अब साक्षर हो गये और उन्हें सफाई आदि बातों का ज्ञान भी भलीभांति हो गया। इसका अधिकांश श्रेय अवंतिकाबाई को ही था। अपने निरंतर परिश्रम, उत्साह, निष्ठा और प्रेम की वजह से ही अवंतिकाबाई को चंपारन-जैसी अपरिचित जगह में सम्मान और श्रद्धा प्राप्त हुई।

अवंतिकाबाई और उनके साथी कार्यकर्ताओं पर नजर रखने के लिए सरकार की ओर से एक खुफिया इंस्पेक्टर की नियुक्ति हो गई थी; परंतु

वह बेचारा इस नियुक्ति से परेशान था। इन लोगों के किस काम की वह अपने अफसरों से शिकायत करे, इनके किस काम को अनुचित तथा गैर-कानूनी बताये, यह उसकी समझ में ही न आता था।

इस साल रामनवमी का त्यौहार बड़ी धूमधाम से मनाने का निश्चय किया गया था। अतः उसीके अनुसार उसका सारा कार्यभार अवंतिकाबाई पर छोड़ दिया गया था। इस समारोह में उन्हें अच्छी सफलता मिली। राजेंद्रबाबू भी इस सुअवसर पर वहां पहुंच गये। सारे दिन भजन, प्रसाद आदि की धूम मची रही।

संध्या के समय महिलाओं की एक सभा हुई, उस सभा में अपनी परीक्षा और उसके मुकाबले की परीक्षाओं में उत्तीर्ण विद्यार्थियों को पुरस्कार दिये गये। अवंतिकाबाई ने अपने प्रभावशाली भाषण में उपस्थित महिलाओं को समझाया कि भारतीय महिलाओं का इतिहास कितना उज्ज्वल है। राष्ट्रीय उत्थान में हिस्सा लेने के लिए उन्होंने युवतियों को आगे बढ़ने के लिए जोर दिया। अवंतिकाबाई की शिक्षा-दीक्षा का ही परिणाम था कि इन महिलाओं ने आगे चलकर महात्माजी के स्वातंत्र्य-युद्ध में महत्वपूर्ण हिस्सा लिया और दुनिया को बता दिया कि भारतीय महिलाएं राजनीतिक व सामाजिक क्षेत्र में भी पुरुष के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर काम कर सकती हैं।

## : १७ :

# गांधीजी की प्रथम जीवनी

चंपारन के अपने कार्यक्षेत्र में ही अवंतिकाबाई ने गांधीजी की जीवनी लिखनी शुरू कर दी, जो १९१८ में प्रकाशित हुई। भारत में प्रकाशित महात्माजी का यह पहला जीवन-चरित है। महात्माजी के चरित को सर्व-प्रथम प्रकाशित करने का गौरव महाराष्ट्र को अवंतिकाबाई की वजह से ही प्राप्त हुआ।

सन् १९१७ में श्रीमती एनी बेसेंट की अध्यक्षता में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन हुआ। अवंतिकाबाई भी महात्माजी के साथ अधिवेशन में गईं। वहींपर लोकमान्य तिलक से उनकी भेंट हुई। महात्माजी के चरित को दिखाकर अवंतिकाबाई ने लोकमान्य तिलक से उस पुस्तक की भूमिका लिखने की प्रार्थना की।

लोकमान्य तिलक से उनका परिचय पहले ही हो चुका था। नासिक में श्रीनिवास शास्त्री की अध्यक्षता में राजनीतिक परिषद् के अवसर पर अवंतिकाबाई को परिषद् में सम्मिलित होने का निमंत्रण दिया गया था।

"भारतीय नवयुवक फौज में भर्ती हों, युद्ध ने भारतीयों को एक अच्छा मौका दिया है, इससे लाभ उठाकर वे फौजी शिक्षा प्राप्त कर लें," ये तिलक के विचार थे। उन्होंने अपने विचारों का प्रचार जोरों से करना शुरू किया। नासिक-अधिवेशन इसी उद्देश्य से बुलाया गया था। परिषद् में ३-४ हजार लोग उपस्थित थे। मंच पर सर्वश्री लोकमान्य तिलक, दादासाहब खापर्डे जैसे धुरंधर नेता और विद्वान वक्ता उपस्थित थे। इतने बड़े जनसमूह के सामने एक युवती का भाषण करना कोई आसान बात न थी। लेकिन यह कठिन कार्य भी अवंतिकाबाई ने बड़ी खूबी के साथ निभाया।

यद्यपि इतने बड़े समूह के सामने भाषण करने का अवंतिकाबाई का यह प्रथम अवसर था फिर भी २० मिनट तक वह बड़े ही प्रभावशाली तरीके से बोलीं, और बड़े-बड़े नेताओं पर अपनी धाक जमा दी। तिलक उनका भाषण सुनकर बेहद खुश हुए। उनके मुंह से निकल पड़ा कि महाराष्ट्र में भी एक दूसरी सरोजिनी नायडू का निर्माण हो रहा है।

लोकमान्य तिलक ने गांधी-चरित की भूमिका लिखना मंजूर कर लिया। जीवनी उनकी भूमिका के साथ १९१८ में बंबई में प्रकाशित हुई। गांधीजी का चरित और वह भी लोकमान्य तिलक की प्रस्तावना के साथ, कितना सुंदर संयोग था।

गांधीजी के आदेशानुसार छ:महीने तक चंपारन में काम करके अवंतिका-बाई और बबनराव ने बंबई के लिए प्रस्थान किया। लौटते समय वह डा०

राजेंद्रबाबू के घर ठहर गईं। यहीं से राजेंद्रबाबू और अवंतिकाबाई का घनिष्ट परिचय हुआ। यह वह समय था जब राजेंद्रबाबू हजारों रुपये कमाते थे। वह पहले दर्जे के वकील माने जाते थे और घर में २०-२५ नौकर थे।

यहां एक और घटना हुई। अफ्रीका से लौटते समय लोगों ने गांधीजी को कोई मूल्यवान चीजें भेंट की थीं। उन चीजों को महात्माजी ने वहीं पर बेच डाला था। लेकिन उनमें से एक सोने की घड़ी कस्तूरबा को बहुत पसंद आई थी। इसीसे वह उसे छिपाकर हिंदुस्तान ले आई थीं। यह घड़ी राजेंद्र-बाबू के घर से अवंतिकाबाई के संदूक से चोरी चली गई। महात्माजी को जब यह सारा किस्सा मालूम हुआ तब वह कस्तूरबा पर बहुत नाराज हुए। कहते हैं कि कई सालों के बाद किसी अज्ञात व्यक्ति ने चुपचाप राजेंद्रबाबू के घर में फिर से वह घड़ी लाकर रख दी।

बंबई लौट आने के बाद अवंतिकाबाई को फिर एक दफा इंगलैंड की यात्रा करने का मौका आया। लेकिन पहला महायुद्ध शुरू हो जाने से पास-पोर्ट नहीं मिल सका। इससे वह इस बार इंगलैंड न जा सकीं।

उस वक्त इंगलैंड में मांटेग्यू चेम्सफोर्ट-योजना पर विचार हो रहा था। इस संबंध में भारतीय महिलाओं का दृष्टिकोण बताने और उनकी नुमा-इंदगी के लिए पारसी और एक अन्य महिला को भेजना तय हुआ था। उसके अनुसार श्रीमती हीराबाई टाटा इंगलैंड के लिए रवाना हुईं। हिंदू-महिलाओं में से अवंतिकाबाई को चुना गया।

सर शंकर नायर और सर चंदावरकर ने अवंतिकाबाई को बुलाकर सारी योजना उनको समझा दी। "सरोजिनी नायडू-जैसी महिला इंगलैंड में ही हैं। उनके होते हुए आप मुझे क्यों भेजना चाहते हैं ?" अवंतिकाबाई ने कहा। "नहीं-नहीं, आपको जाना ही होगा।" वहां व्याख्यान देने का काम नहीं है बल्कि अंग्रेज महिलाओं को हिंदुस्तान की समस्या समझानी है।" उन दोनों सज्जनों ने आग्रह किया।

"वहां मुझे कमीशन के सामने बयान देना होगा और मुझे इस संबंध

में कोई जानकारी नहीं है। इसीलिए यदि श्रीशंकर नायर के साथ जाने का मौका मिल जाय तो जहाज पर १५ दिनों में मैं पूरी तरह तैयारी कर सकूंगी," अवंतिकाबाई ने शर्त लगाई।

सर शंकर तो दूसरे ही दिन इंगलैंड के लिए रवाना होनेवाले थे। बहुत दौड़धूप करने पर भी एक दिन में पासपोर्ट न मिल सका। तात्पर्य यह कि अवंतिकाबाई का इंगलैंड जाना रुक गया।

: १८ :

## 'हिंद महिला-समाज' की स्थापना

चंपारन में अवंतिकाबाई को महिलाओं में कार्य करने का जो मौका मिला था उससे उन्हें अनुभव हुआ कि स्त्रियों में ज्यादातर अपना, अपने परिवार का और अपनी जाति का स्वार्थ देखने का स्वभाव है। इससे उन्हें अपने कार्य में आसानी हो गई।

उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि एक असांप्रदायिक संस्था का संगठन करके स्त्रियों के दृष्टिकोण को विशाल बनाना चाहिए। देश-कार्य में भारतीय महिलाओं का हिस्सा लेना अब जरूरी हो गया है। इन विचारों से प्रभावित होकर अवंतिकाबाई ने निश्चय किया कि अब भारतीय महिलाओं की प्रगति के लिए एक महिला-संगठन का काम शुरू करना चाहिए। इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर उन्होंने बंबई में १९१८ सें 'हिंद महिला-समाज' की स्थापना की।

इस तरह अवंतिकाबाई ने १९१८ नवंबर की २७ वीं तारीख को 'हिंद महिला-समाज' का उद्घाटन किया।

उन दिनों बंबई में महिलाओं के २-३ प्रमुख संगठन थे, लेकिन उनमें ज्यादातर धनी परिवार की बहनें जाती थीं। सुशिक्षित समाज में पाश्चात्य रंग-ढंग की नकल करने की वृत्ति दिनोंदिन बढ़ रही थी। इंगलैंड में धनी परिवार की महिलाओं द्वारा क्लब खुले थे। ताश खेलने, ग़प्पें लड़ाने आदि

में ही वे अपना समय व्यतीत करती थीं। बंबई के ये महिला-संगठन इन्हीं पाश्चात्य क्लबों की नकल मात्र थे। उनसे किसी ठोस कार्य की आशा करना व्यर्थ था। मध्यम श्रेणी की महिलाएं वहां नहीं जा पाती थीं। इसी वजह से अवंतिकाबाई को ऐसे संगठन पसंद न थे। उनकी इच्छा थी कि मध्यम वर्ग की महिलायें अपने समय का सदुपयोग करें और अपनी बढ़ती हुई उदासीनता को छोड़ दें। वे ज्ञानोपार्जन की तरफ ध्यान दें और अपनी उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहें। उन्हीं कार्यों की पूर्ति के लिए 'हिंद महिला-समाज' की स्थापना की गई।

उस समय जो अन्य संस्थाएं थीं उनमें सांप्रदायिक भावना विशेष थी और जाति-द्वेष बढ़ रहा था। उच्चवर्गीय लोगों को अपनी उच्चता का घमंड था और वह अपने से नीची श्रेणी के लोगों से घृणा करते थे। इस बढ़ते हुए विद्वेष को हटाकर समानता की भावना पैदा करने के लिए सबको एक जगह एकत्र करना जरूरी था। इस महत्वपूर्ण कार्य में 'हिंद महिला-समाज' का दूसरा उद्देश्य निहित था। इस 'समाज' की सदस्यता के नियम भी इसी दृष्टिकोण से बनाये गये थे। १८ साल से अधिक आयु की कोई भी भारतीय महिला इस 'समाज' की सदस्या बन सकती थी।

स्त्री-समाज में परस्पर स्नेह और सहयोग की भावना पैदा करना, शिक्षा का प्रचार करना, 'समाज' में उनको उचित स्थान दिलाना, पारस्परिक सहायता और सद्भावना का आदर्श उनके सामने रखना, महिलाओं में साहित्य के लिए प्रेम बढ़ाना और इसलिए पुस्तकालय तथा वाचनालय खोलना, विद्वान वक्ताओं के व्याख्यानों की योजना तैयार करना, प्रवचन-कीर्तन वगैरह द्वारा ज्ञानोपार्जन करना, वाक्-स्पर्धा की व्यवस्था रखना, विविध कलाएं सिखाना, स्वदेशी का अर्थशास्त्र समझाना इत्यादि उद्देश्य 'समाज' के विधान में रखे गये थे।

'समाज' के उद्घाटन के दिन 'विश्राम मेंशन' में महिलाओं की आम सभा हुई। बंबई की चालों में रहनेवाली मध्यवर्गीय महिलाएं बहुत बड़ी संख्या में सभा में सम्मिलित हुईं। 'समाज' की स्थापना के दिन ही कई बहनों ने उसे

आर्थिक सहायता दी। उसी दिन श्री एकबोटे के यहां 'समाज' की ओर से एक मुफ्त वाचनालय खोला गया। अवंतिकाबाई की यह दिलीइच्छा थी कि सुप्रसिद्ध विद्वान डा० मुकुंदरा जयकर की माता श्री सोनाबाई जयकर-जैसी एक अनुभवी और कार्यकुशल वृद्धा 'समाज' की अध्यक्षा बनें। परंतु माता सोनाबाई को यह मंजूर न हुआ। उन्होंने साफ कह दिया कि नई संस्था का कार्य सुचारु रूप से चलाने के लिए एक बुद्धिमान, उत्साही ुवती की आवश्यकता है। मुझ-जैसी वृद्धा से यह काम नहीं होगा। अतःउन्होंने अध्यक्षता के लिए अवंतिकाबाई का ही नाम सुझाया। इस तरह 'समाज' के आरंभ के दिन से अपनी मृत्यु तक अवंतिकाबाई अध्यक्षा बनी रहीं। उनके नेतृत्व में गत ३० साल में 'समाज' ने जो ठोस कार्य किया उसका संक्षिप्त विवरण पाठकों के सामने रखना अनुचित न होगा।

अवंतिकाबाई के कोई संतान नहीं थी। 'समाज' ही उनकी संतान थी। लगातार ३१ साल तक उन्होंने इसकी सेवा की।

## : १६ :

## 'समाज' का कार्य

'हिंद महिला-समाज' की ओर से एक वाचनालय शुरू किया गया; परंतु वाचनालय में बहनें आती नहीं थीं। वाचनालय में जाकर समाचार-पत्र पढ़ना, पुस्तकें पढ़ना उन दिनों नई बात समझी जाती थी। सर्वसाधारण व्यक्ति स्त्रियों की स्वतंत्रता की कल्पना से कोसों दूर रहते थे, स्त्रियां स्वाधीन न थीं। 'समाज'-स्थापना के समारोह में आने के कारण कई बहनों के पति-देवों ने उन्हें आड़े हाथों लिया था।

अब अवंतिकाबाई ने एक नया तरीका ढूंढ़ निकाला। मिशनरी लोगों की भांति वह चालों में घूमतीं और अखबार, पुस्तकें आदि महिलाओं को पढ़ने के लिए देतीं। इस तरह उनमें पढ़ने की रुचि बढ़ाने की कोशिश करतीं। श्रीमती सरस्वतीबाई भाजेकर, गंगाबाई गोखले, सुभद्राबाई एकबोटे, भागी-

रथीबाई पोतदार, यशोदाबाई भट्ट आदि कई महिलाएं उनके साथ झावबा वाड़ी, गोरे गांवकर चाल, आंग्रे वाड़ी, शास्त्री हाल इत्यादि चालों में घूम-घूमकर प्रचार कार्य करती थीं।

वहां दोपहर के २ से ४ बजे के दरमियान वह किसी एक कमरे में बैठतीं और चाल की महिलाओं को जमा करके इतिहास, पुराण आदि पढ़ातीं, आरोग्य-संबंधी चर्चा करतीं, सिलाई का काम सिखातीं। इस तरह कई महीने उनको यह परिश्रम करना पड़ा। शुरू में कोई उनके पास तक न आती थीं; लेकिन धीरे-धीरे संख्या बढ़ती गई और लगभग छः महीने अनवरत कार्य करने से स्त्रियों में काफी जागृति पैदा हो गई।

'समाज' की ओर से एक व्याख्यानमाला का प्रबंध किया गया। विषय था 'महिलाएं और राष्ट्रकार्य'। व्याख्यान गांधर्व महाविद्यालय के हाल में हुआ। पं० मदनमोहन मालवीय, डा० कूर्तकोटी महाराज, लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी, गोपालकृष्ण देवधर-जैसे ख्यातनामा लोगों के भाषण हुए। स्त्री-समाज के समक्ष केवल लोकमान्य तिलक का यह पहला व्याख्यान था। काफी बहनें व्याख्यान सुनने आईं। अब तो हर महीने महिला-सम्मेलन होने लगा।

लगभग एक साल बाद 'समाज' का कार्य बहन अवंतिकाबाई के घर पर होने लगा। सिलाई, गायन, हिंदी, आदि वहां पढ़ाई जाती और साप्ताहिक सभाएं भी वहीं पर होतीं।

'समाज' का कार्य प्रतिदिन बढ़ता जा रहा था। उसके लिए मुनासिब जगह की जरूरत थी। बड़ी कोशिश हुई। लोग 'समाज' के लिए जगह देने से हिचकिचाते थे। आखिर जगह मिल गई और समाज का काम १ नवंबर, १९२० से अपनी निज की जगह पर होने लगा। तब से 'समाज' ने मध्यम-वर्गीय स्त्रियों में जो कार्य किया, उसीके फलस्वरूप कई बहनें १९३० में सेविका-दल में भर्ती हुईं और देश के स्वातंत्र्य-आंदोलन में अपना उचित हाथ बंटाया। सन् १९२० की नागपुर-कांग्रेस के बाद लगातार सन् १९३५ तक महिला-समाज का कार्य कांग्रेस के उद्देश्य के अनुसार चलता रहा।

जब कांग्रेस का पहला मंत्रिमंडल बना, उस समय से प्रांतीय सरकार के शिक्षा-विभाग द्वारा 'समाज' को सालाना सहायता मिलने लगी। 'समाज' ने अभी तक स्त्री-शिक्षा तक ही अपना कार्य सीमित रखा था।

सन् १६२० से अवंतिकाबाई खादीप्रचार का कार्य शुरू किया। अतः कताई के वर्ग शुरू हो गये। करीब ५० बहनें नियमित रूप से 'समाज' में आकर कताई करती थीं। 'समाज' के कार्य को देखकर महात्माजी बहुत खुश हुए। उन्होंने खुले दिल से उस कार्य की प्रशंसा की।

लोकमान्य तिलक के स्वर्गवास होने पर श्री सरलादेवी चौधरानी की अध्यक्षता में एक शोकसभा हुई। सभा में इतनी भीड़ थी कि सभा-स्थान, गांधर्व महाविद्यालय के हाल से बदलकर खुले चौक में लाना पड़ा। श्रीमती चौधरानी ने उपस्थित बहनों से स्वदेशी की कसम दिलाई और तबसे महान् नेताओं की जयंतियां और पुण्यतिथियां मनाने का 'समाज' में रिवाज हो गया।

महात्मा गांधी ने लोकमान्य तिलक की यादगार में कांग्रेस-कार्य के लिए एक निधि जमा करनी शुरू की। 'समाज' को कार्य करते अब तीस साल हो गये थे, फिर भी 'समाज' की बहनों ने कोशिश करके ३६००) जमा करके गांधीजी के पास स्मारक के लिए भेजे। उस समय गांधीजी ने कहा, "मेरी बहन अवंतिकाबाई ने तो १६००) दिये हैं, सूची में १००) देनेवालों के भी नाम ज्यादातर दिखाई नहीं देते हैं। मैंने खयाल तक नहीं किया था कि लोकमान्य के प्रति महाराष्ट्र में इतनी उदासीनता होगी।" महात्माजी के मुंह से ये शब्द निकले ही थे कि सभा में उपस्थित बहनों ने गहने, नोट आदि की महात्माजी पर वर्षा-सी कर दी। चंद मिनट में ४०००) जमा हो गये। यह दिन 'समाज' के इतिहास में चिरस्मरणीय होगा।

महात्माजी इस बार 'समाज' में पधारे। उनकी स्मृति में उस मकान के मालिक ने वहांपर एलान कर दिया कि जबतक 'समाज' चलता रहेगा मैं उससे ४ रु. का नाममात्र किराया लिया करूंगा। दुर्दैव से २-३ साल में ही उनका देहांत हो गया। घर दूसरे का हुआ और 'समाज' को जगह बदलनी

पड़ा।

फैजपुर-कांग्रेस में अवंतिकाबाई के नेतृत्व में 'हिंद महिला-समाज' की ओर से एक सेविका-दल भेजा गया था। श्रीमती कमलाबाई सोहोनी, पार्वतीबाई पटवर्धन, कु० शांता काण, सुमति नरवणे, सरस्वती खाडिलकर, सरस्वती दातार, लक्ष्मी ताम्हणकर, इंदुमती सारदेसाई, कृष्णाबाई कलगुटकर आदि 'समाज' में काम करनेवाली बहनें शामिल हुई। इन बहनों का नर्सिंग-कोर्स पूरा किया हुआ था, इसलिए अवंतिकाबाई चाहती थीं कि फैजपुर के अस्पताल में ये काम करें। लेकिन वहां जाने पर मालूम हुआ कि दूसरी बहनों ने यह काम पहले ही से अपने जिम्मे ले लिया था। तब प्रदर्शिनी का काम अवंतिकाबाई ने मांग लिया। वहां प्रदर्शिनी की रचना से लेकर खादी बेचने तक का काम सारा इन बहनों ने किया। वे इतनी दिलचस्पी और लगन से काम करती थीं कि खाने-पीने तथा आराम की उन्हें परवाह नहीं रहती थी। महात्माजी ने और कांग्रेस के अन्य नेताओं ने उनकी बड़ी प्रशंसा की। उनके पहले के अधिवेशन में जो प्रदर्शिनी हुई थी, वह घाटे में थी, लेकिन इस साल हजारों रुपये की खादी बेची गई। इससे व्यापारियों की ओर से भी उन्हें धन्यवाद मिला।

समाज में जो कताई का वर्ग शुरू किया गया था वह करीब १०-१२ साल तक चलता रहा। शुरू में कता हुआ सूत साबरमती और बेलगांव से बनकर आता था। बाद में 'समाज' में अवंतिकाबाई ने दो-तीन करघे स्वयं चलाये। महाराष्ट्र-खादी-संघ के श्री नागपुरकर ने इस काम में उनकी बड़ी मदद की। खादी-प्रचार-कार्य में सरस्वतीबाई भाजेकर और गौरीबाई खाडिलकर इन दो बहनों ने अवंतिकाबाई की यथेष्ट सहायता की। स्वयं अवंतिकाबाई और यशोदाबाई भट्ट बंबई की चाल में घूमकर कीर्तन और भाषण द्वारा खादी का सफल प्रचार करती थीं।

अवंतिकाबाई इस बात को हमेशा देखा करती थीं कि 'हिंद महिला-समाज' का प्रधान कार्य स्त्री-शिक्षा ही रहे। दैनिक व्यवहार के लिए अंग्रेजी पढ़ाने-लिखाने पर बहनों को उनके काम के लायक शिक्षा दी जाती। इस

प्रकार की शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ स्वालंबन था।

मराठी, अंग्रेजी तथा हिंदी भाषा के वर्गों से नाममात्र की फीस ली जाती थी। इस प्रकार की शिक्षा का कार्य, 'समाज' की पाठशाला तक ही सीमित नहीं था; बल्कि बाहर भी लोगों के रहने की छोटी-छोटी जगहों पर भी साक्षरता-प्रचार का ठोस कार्य हो रहा था।

औद्योगिक विषयों में सिलाई, कसीदे का काम, चित्रकला आदि सिखलाया जाता था। हजारों महिलाओं ने इस शिक्षा से लाभ उठाया। आज भी उन वर्गों में सीखनेवालों की संख्या १३८० है।

जब कभी परोपकार या राष्ट्रीय कार्य के लिए आर्थिक सहायता की आवश्यकता होती तो अवंतिकाबाई अपनी 'समाज' की बहनों को साथ लेकर उस कार्य में अग्रसर रहतीं। मलाबार सहायता-निधि, गुजरात जलप्रलय निधि, कमला नेहरू-निधि इत्यादि में उन्होंने हजारों रुपये जमा किये थे। गरीबों को कपड़े का प्रबंध, गरीब प्रसूता स्त्रियों को पौष्टिक खुराक की व्यवस्था आदि कार्य वह हमेशा करती रहती थीं। तलेगांव के जनरल अस्पताल की स्त्रियों को दूध और बच्चों को कपड़े आदि देने का कार्य 'समाज' की ओर से आज भी चल रहा है।

आजतक 'समाज' की ओर से तिलक-स्वराज्य-निधि में ४०००), तिलक-स्मारक-निधि में १०००), सावरकर-बंधु-निधि में ६००), शिवाजी-स्मारक-निधि में १०००), राष्ट्रकार्य तथा परोपकार के लिए ५०००) और गांधी-निधि में ७३३।।।) आने जमा किये गये हैं।

हरिजन-सेवा से अवंतिकाबाई को विशेष प्रेम था। इस काम में उन्होंने दूसरी समाज की महिलाओं को भी उत्साहित किया। हरिजन-बस्ती में जाकर भजन, कीर्तन, पुस्तकपाठ करना उनका हमेशा का कार्यक्रम रहता था। इस काम के लिए वह दादर, माटुंगा, बांदरा और खार तक पहुंच जाती थीं।

'हिंद महिला-समाज' के पुस्तकालय में पुस्तकों की संख्या धीरे-धीरे बढ़ती गई। आज वह बहुत बड़ा पुस्तकालय बन गया है।

'समाज' का कार्यालय बंबई में ऑपेरा हाऊस के नजदीक कच्छ कैसल में है। सन् १९३९ में यह कार्यालय यहांपर लाया गया था। यहां का किराया कुछ अधिक था और समाज की आर्थिक हालत भी विशेष संतोष-जनक न थी। इसलिए 'समाज' को स्थायी बनाने की अवंतिकाबाई की इच्छा हुई। उन्होंने अपने अथक परिश्रम से ४-५ साल के अंदर इस कोष में ५० हजार की रकम जमा करदी।

'समाज' की स्थापना को २५ साल पूरे होने पर सन् १९४३ में २८, नवंबर को रजत-जयंती मनाई गई। श्रीमती लक्ष्मीबाई इस समारोह की अध्यक्षा थीं। अपनी बनाई हुई संस्था को २५ साल पूरे हुए देख और उसको व्यापक रूपमें परिवर्तित देखकर अवंतिकाबाई को कितना आनंद हुआ होगा!

'हिंद महिला-समाज' और अवंतिकाबाई गोखले के संबंध अविभाज्य-से हो गये थे। आखिर १७ साल में वह अपने राजनीतिक तथा अन्य कार्यों से निवृत्त होकर 'समाज'-कार्य में ही विलीन हो गई थीं। उनके अथक परि-श्रम से ही 'समाज' को आज गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। 'समाज' के लिए आश्रयदाता ढूंढ़ना, दान में रुपये जमा कराना, वगैरा काम उन्हींको करने पड़ते थे। श्रीमती सोफिया वाडिया, यमुनाबाई आपटे, श्री बबनराव गोखले आदि ने हजारों रुपये दान में देकर 'समाज' की सहायता की है। २०० से ज्यादा रकम देनेवाले आश्रयदाता, १०० से अधिक देनेवाले आजीवन सदस्य और ५ से ५० रुपये तक चंदे देनेवाले अन्य सदस्यों की संख्या अन-गिनत थी। इस प्रकार स्त्री-पुरुष के सहयोग से समाज की उत्तरोत्तर वृद्धि होती गई।

'समाज' के दैनिक कार्य में अवंतिकाबाई को सहायता करनेवाली श्रीमती गंगाबाई गोखले, सावित्रीबाई कानिटकर, गौरीबाई खाडिलकर, इंदुमती सरदेसाई, सरस्वतीबाई भाजेकर आदि ने भी 'समाज' की प्रगति में काफी योग दिया। इन लोगों ने 'समाज' के हर प्रकार के कार्य में अपूर्व सहा-यता दी। इन लोगों का कार्य आनेवाली संतानों के लिए पथ-प्रदर्शन का कार्य करेगा।

अवंतिकाबाई ने जाति-हीन और वर्ग-हीन सेवा का उद्देश्य सामने रख-कर ही 'हिंद महिला-समाज' की स्थापना की और उसे आगे बढ़ाया। उनके पश्चात् 'समाज' का कार्य इसी गति से बढ़ता रहे और उसको गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त हो, यही अवंतिकाबाई का श्रेष्ठ स्मारक होगा।

: २० :

## निःस्वार्थ सेवा की मिसालें

'हिंद महिला-समाज' के कार्य को अधिक प्रभावशाली बनाने के इरादे से अवंतिकाबाई ने 'हिंद महिला' नामक साप्ताहिक पत्र निकालना शुरू किया। मराठी में यह पहली पत्रिका थी जिसका उद्देश्य महिलाओं की उन्नति था। परिस्थितिवश इस पत्रिका को सिर्फ दो साल बाद ही बंद कर देना पड़ा, किंतु अपने अल्पकाल में इस पत्रिका ने जो सेवा-कार्य किया और स्त्री-समाज में जो जाग्रति पैदा की वह सर्वथा सराहनीय थी।

महात्माजी ने सन् १९१७से खादी-प्रचारका कार्य शुरू किया था। लेकिन सन् १९२१ तक अवंतिकाबाई खादी नहीं पहनती थीं। एक दिन श्रीमती सरोजिनी नायडू, सरलादेवी चौधरानी और अवंतिकाबाई महात्माजी से बातें करने बैठीं थी। बातचीत के दर्मियान श्री चौधरानीजी ने मुस्क-राते हुए कहा, "आप तो अवंतिकाबाई की बड़ी तारीफ किया करते हैं; लेकिन वह खादी तो पहनती ही नहीं।" महात्माजी ने जवाब में कहा, "अवं-तिकाबाई ऐसे स्वभाव की नहीं हैं कि मेरे कहने से वह सब कुछ करें। जब-तक खादी की महिमा उन्हें प्रतीत नहीं होगी जबतक वह खादी नहीं पह-नेंगी। लेकिन विश्वास रखिये कि जिस दिन से वह श्रद्धा के साथ खादी को स्वीकार करेंगी, आखिरी दम तक उसका त्याग नहीं करेंगी।"

महात्माजी का यह कथन सत्य था। अवंतिकाबाई ने अंत तक अपना व्रत निभाया। एक बार आंध्र प्रांत के दौरे में वहां की उत्कृष्ट सूत की एक साड़ी महात्माजी को भेंट में मिली। उन्होंने वह अवंतिकाबाई को दे दी।

जब अवंतिकाबाई ने देखा कि चर्खे पर इतना महीन सूत काता जा सकता है तब उनका आत्माभिमान जाग्रत हो उठा। उन्होंने कातना शुरू किया। अपने खुद के काते हुए सूत की साड़ी उन्होंने जब पहली बार पहनी तब उन्हें अवर्णनीय आनंद हुआ। इस समय से उन्होंने हमेशा के लिए खादी पहनने का निश्चय किया। अपनी पहले की २०-२२ रेशमी और सूती साड़ियां उन्होंने गरीबों को दे दीं।

वायलिन उनका प्रिय वाद्य था। उसके मधुर स्वरों में वह तल्लीन हो जाती थीं। लेकिन अब चर्खे को अपनाकर उन्होंने प्रिय वायलिन का भी त्याग किया। अब वह चर्खे की आवाज में अपनेको भुला देती थीं। उनके रोजाना तीन घंटे सूत कातने में व्यतीत होते थे। वह सोचती थीं कि यदि मैं पंगु बन जाऊं तो खुद के कते हुए सूत की साड़ियां पहनना असंभव हो जायगा और व्रत भी भंग होगा। इस आशंका से वह ४-५ साड़ियां हमेशा अपने संग्रह में रखा करतीं।

अपने हाथ की खादी पहनने के निश्चय के साथ उन्होंने एक और भी निश्चय किया था। हर साल गांधीजी के जन्म-दिन पर खुद के कते सूत की दो धोतियां वह गांधीजी को अर्पण किया करती थीं। इस व्रत में श्रीमती गौरीबहन खाडिलकर भी उनकी मदद करती थीं। उनका यह नियम आखिर तक चलता रहा। सन् १९४२ में गांधीजी आगाखां महल में कैद थे। उनको धोतियां भेजने की इजाजत अवंतिकाबाई को बंबई के पुलिस कमिश्नर ने नहीं दी। उन्हें दुःख भी हुआ; लेकिन वह हिम्मत न हारीं। धोतियां रजिस्टर्ड पार्सल से जेलखाने के इंसपेक्टर जनरल कर्नल भंडारी के पास उन्होंने भेजीं और साथ की चिट्ठी में लिखा कि हर साल गांधीजी को उनके जन्म-दिन पर दो धोतियां देने का मेरा व्रत है। कृपया ये धोतियां उनके पास पहुंचा दीजिए। १५ दिन होने पर भी कर्नल भंडारी के पास से कोई जवाब नहीं आया। वह निराश हो गईं। लेकिन अक्तूबर की चौथी तारीख को अकस्मात् एक खत आया। उसमें सूचना दी गई थी कि धोतियां गांधीजी को पहुंचा दी गई हैं। कर्नल भंडारी ने धोतियां अपने पास रख ली थीं। २ अक्तूबर को वे धोतियां

अपनी बगल में दबाकर गांधीजी के पास पहुंचे और हंसकर पूछने लगे, "कहिये, मेरी बगल में क्या है ?" गांधीजी ने झट उत्तर दिया, "यह तो अवंतिकाबाई का प्रसाद मालूम होता है ।" गांधीजी मजाक में हमेशा कहा करते थे कि यदि अवंतिकाबाई से मुझे धोतियां न मिलें तो सालभर मुझे लंगोटी लगाकर ही रहना पड़े ।

सन् १९२३ में अवंतिकाबाई बंबई म्युनिसिपल कार्पोरेशन की सदस्या चुनी गईं । इस साल पहले-पहल कांग्रेस ने म्युनिसिपल चुनाव में अपने उम्मीदवार खड़े किये थे । चुनाव के लिए कांग्रेस की ओर से नेशनल म्युनिसिपल पार्टी भी बनाई गई थी । चुनाव में भारी संख्या में मत मिले और अवंतिकाबाई सदस्य चुन ली गईं ।

अवंतिकाबाई के प्रतिस्पर्धी उम्मीदवार श्री कपूर ने उनके खिलाफ अदालत में अर्जी भेजी कि मतदाताओं की नामावली में नाम न होने से अवंतिकाबाई का चुनाव रद्द कर दिया जाय ।

दावा करने से पहले वह नेशनल म्युनिसिपल पार्टी के नेता विट्ठलभाई पटेल से मिले । यदि नामजद सदस्य की हैसियत से उन्हें म्युनिसिपल कार्पोरेशन में ले लिया जाता तो वह दावा न करते । लेकिन यह सुझाव विट्ठलभाई को मंजूर न हुआ । न्यायालय ने अवंतिकाबाई के विरुद्ध फैसला किया और उनकी सदस्यता रद्द कर दी गई । बाद में कार्पोरेशन ने उन्हें नामजद कर लिया ।

१ अप्रैल, १९२३ से १५ जनवरी, १९३१ तक लगातार आठ साल तक वह कार्पोरेशन की सदस्या रहीं । सन् १९२९ में फिर चुनाव हुआ, पर वह चुनाव के लिए खड़ी न हुईं । फिर भी उन्हें नामजद कर लिया गया ।

१९२३-२४ में श्री एच० पी० मोदी, जो उत्तरप्रदेश के राज्यपाल रह चुके हैं, बंबई कार्पोरेशन के अध्यक्ष थे और मि० एच० बी० क्लेटन थे म्युनिसिपल कमिश्नर । अवंतिकाबाई कार्पोरेशन के काम से अपरिचित थीं । अतः शुरू में वहां के कार्य को देखते रहने और निरीक्षण करने के सिवा कोई ठोस कार्य न कर सकीं ।

दूसरे साल से उन्होंने इस कार्य में अपनी योग्यता का परिचय दिया। इस साल नेशनल म्यु० पार्टी के नेता श्री विट्ठलभाई पटेल कार्पोरेशन के सदस्य चुने गये थे।

डा० मुखिया भी कार्पोरेशन के सदस्य थे। वह सभापति और अन्य सदस्यों से उद्दंडता से बोलते थे। उनके विरुद्ध अवंतिकाबाई ने एक प्रस्ताव पेश किया। चर्चा के समय खूब गर्मागरम बहस हुई। बहस के बाद पुलिस कमिश्नर ने उन्हें प्रस्ताव वापस लेने को कहा। वह तैयार थीं, लेकिन अध्यक्ष ने उन्हें अनुमति नहीं दी। प्रस्ताव पर वोट लिये गये। पक्ष-विपक्ष में समान मत आये। आखिर को सभापति के निर्णायक मत से प्रस्ताव गिर गया।

× × ×

स्कूल के बच्चे अपनी खाने-पीने की छुट्टी में खोमचेवालों से चीजें खरीदकर खाते थे। ये चीजें गंदी और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक थीं। इसलिए अवंतिकाबाई ने प्रस्ताव रखा कि म्युनिसिपल स्कूलों के हाल में खोमचेवालों को आने से मना कर दिया जाय। प्रस्ताव सर्वसम्मति से मंजूर हुआ।

बबंई मे चौपाटी पर हमेशा गंदगी रहती थी। ज्यादातर गोलगप्पे आदि चीजें बेचनेवालों की वजह से वैसा होता था। उन्हें रोकने का एक प्रस्ताव अवंतिकाबाई ने पेश किया; लेकिन कई सदस्यों के अनुरोध से उन्होंने वापस ले लिया। गिरगांव के जच्चाखानों में जो अव्यवस्था थी उसे दूर करने के लिए भी अवंतिकाबाई ने बहुत कोशिश की।

कार्पोरेशन के सदस्यों पर कोई कानूनी प्रतिबंध नहीं था कि वे लोग अपना भाषण अंग्रेजी में करें। इसलिए अवंतिकाबाई मराठी में बोलती थीं। यह देखकर पारसी और गुजराती सदस्य भी गुजराती भाषा में भाषण करने लगे। इससे बहुत-से सदस्यों को असुविधा होने लगी। १९२५ में श्री जोसेफ बैप्टिस्ट अध्यक्ष चुने गये। उनके और अवंतिकाबाई के संबंध स्नेहपूर्ण थे। बैप्टिस्ट साहब जानते थे कि अवंतिकाबाई अंग्रेजी में अच्छा वक्तव्य दे सकती हैं। इसलिए उन्होंने प्रार्थना की कि वह अंग्रेजी में भाषण दें। अवंतिकाबाई

का कहना था कि मराठी बोलने का उनका हक है। सभापति महोदय ने हँसते-हँसते कहा, "You must respect the Chair" (अर्थात्--"आपको अध्यक्ष की बात का आदर करना ही चाहिए।") अवंतिकाबाई मजबूर थीं। उस समय से लेकर आखिर तक वह अंग्रेजी में भाषण करती रहीं।

१९२६ में अवंतिकाबाई स्थायी समिति की सदस्य नियुक्त हुई। १९२९ तक वह इस समिति में रहीं। उस वक्त स्थायी समिति के सदस्यों को हर बैठक के लिए ३०) भत्ते के मिलते थे। नियमानुसार बैठक में हाजिर होने के कारण भत्ते के ३०) चैक से अवंतिकाबाई के पास भेजे गये। चैक लेकर वह सीधी विट्ठलभाई पटेल के पास पहुंचीं और भत्ते की रकम लेने से इंकार करने लगीं।

श्री विट्ठलभाई पटेल ने उन्हें समझाया कि सर जमशेदजी जीजीभाई जैसे लोग भी भत्ते के पैसे लेते हैं तो आप क्यों इंकार करती हैं। उस रकम का आप किसी अच्छे काम नें उपयोग कर सकती हैं। अतः वह भत्ते के पैसे लेने लगीं परंतु उस पैसे को वह अलग-अलग संस्थाओं में बांट देती थीं।

म्युनिसिपैलिटी में एक प्रस्ताव पेश किया गया कि स्थायी समिति के सदस्यों को दिया जानेवाला भत्ता बंद कर दिया जाय। इस प्रस्ताव का समर्थन करनेवाली पहली सदस्या अवंतिकाबाई थीं। इस दरमियान बंबई के 'सी' और 'डी' वार्ड में जच्चाखाने शुरू करने का महत्वपूर्ण कार्य हुआ। इन दो वार्डों में ही अवंतिकाबाई विशेषतः कार्य करती थीं। यहीं की महिलाओं की सहायता करने की इच्छा से उन्होंने कार्पोरेशन में प्रस्ताव रखकर नये जच्चाखाने खुलवाये। इससे वहां की गरीब महिलाओं की कठिनाइयां कुछ हद तक दूर हो गईं।

म्युनिसिपैलिटी के दवाखानों में स्त्रियों की जांच और चिकित्सा करने के लिए एक खास दिन रखा गया और इस काम के लिए डाक्टरनी की नियुक्ति करने के लिए अवंतिकाबाई का प्रयत्न सफल हुआ। इस काम में उस वक्त अस्थायी म्युनिसिपल कमिश्नर श्री कृपलानी की उन्हें काफी मदद मिल गई।

१९२७ में पब्लिक हेल्थ कमेटी में अवंतिकाबाई की नियुक्ति हुई। १९२८ से २९ के लिए वह इस कमेटी की उपाध्यक्षा भी चुनी गई थीं। बंबई की कई सार्वजनिक संस्थाओं में कुप्रबंध और अंधाधुंध खर्चा रोकने के लिए अवंतिकाबाई ने म्युनिसिपैलिटी में प्रस्ताव मंजूर करवाया कि जिन संस्थाओं की कार्य-समितियों में कार्पोरेशन का प्रतिनिधि न हो उन संस्थाओं को कार्पोरेशन की तरफ से आर्थिक सहायता न दी जाय।

१९२८ में कार्पोरेशन की अध्यक्षता के लिए अवंतिकाबाई का नाम पेश करने का कुछ लोगों का इरादा था, लेकिन डा० गोपालराव का नाम पेश हो जाने के कारण अवंतिकाबाई ने अपने नाम की स्वीकृति नहीं दी।

१९२९ में म्युनिसिपैलिटी का नया चुनाव हुआ। इस वक्त भी नामजद की हैसियत से अवंतिकाबाई को लिया गया। १९३० में हुसेनभाई लालजी अध्यक्ष थे। वह अवंतिकाई के विचारों के समर्थक थे। सूत-कताई और स्वदेशी में अवंतिकाबाई को बड़ी दिलचस्पी थी। उन्होंने कार्पोरेशन में प्रस्ताव रखा कि म्युनिसिपिल स्कूलों में तकली पर सूत कातना सिखाया जाय। रिवाज के अनुसार कार्पोरेशन ने यह प्रस्ताव स्कूल-कमेटी के पास भिजवा दिया। इसी समय अवंतिकाबाई ने और एक प्रस्ताव रखा कि कार्पोरेशन के सारे कर्मचारी स्वदेशी कपड़ा इस्तेमाल करें। इस प्रस्ताव में रायबहादुर असवले ने संशोधन पेश किया कि कार्पोरेशन के सारे सदस्य भी स्वदेशी कपड़ा ही इस्तेमाल करें। प्रस्ताव संशोधन के साथ मंजूर हो गया। यद्यपि उन्हें विश्वास नहीं था कि प्रस्ताव से संबंधित लोग उसपर अमल करेंगे तो भी अवंतिकाबाई को खुशी थी; क्योंकि कार्पोरेशन ने स्वदेशी के सिद्धांतों को स्वीकार कर लिया था। कार्पोरेशन में यह उनका आखिरी काम था; क्योंकि उसके बाद सत्याग्रह-आंदोलन में २६ अक्तूबर, १९३० को पुलिस कमिश्नर का हुक्म तोड़कर आजाद मैदान में उन्होंने झंडा फहराया और दूसरे ही दिन जब वह बैठक के लिए कार्पोरेशन में गईं तो उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

उनकी गिरफ्तारी को रोकने के लिए दिसंबर की बैठक में एक प्रस्ताव

आनेवाला था; लेकिन उस दिन प्रस्तावक की गरहाजिरी के कारण उस पर चर्चा न हो सकी। ६ महीने से ज्यादा सजा होने के कारण १५ जनवरी १६३१ को उनकी सदस्यता रद्द कर दी गई।

स्थायी समिति और स्वास्थ्य-समिति के अलावा कार्पोरेशन की ओर से नेशनल बेबी वीक (१६२५ से २६), साल्वेशन आर्मी रेस्क्यूहोम, माटुंगा (२६ से २७ व ३० से ३१), बांबे विजिलंस (१६२६ से ३०), महिला मंडल के सिलाई के वर्ग (१६२७ से २८ व १६२६ से ३०), नौरोजी वाडिया मैटर्निटी हास्पिटल (१६२६ से ३०), सेंट कैथराईन रेस्क्यूहोम (१६२७ से २८ व १६२६ से ३०) आदि-आदि संस्थाओं की कार्यसमिति में वह नियुक्त हुई थीं। इन संस्थाओं में उन्होंने चिरस्मरणीय काम किया है।

अवंतिकाबाई के कार्पोरेशन की सदस्य नियुक्त होने पर एक विशेष घटना यह हुई कि सरकार कुछ महिलाओं को जे०पी० तथा आनरेरी मजिस्ट्रेट बनाना चाहती थी। हिंदू, मुस्लिम, पारसी और ईसाई वर्ग से एक-एक महिला को यह ओहदा दिया जानेवाला था। बंबई पुलिस-कमिश्नर मि० केली ने हिंदू महिला की हैसियत से इस सम्मान को स्वीकार करने की अवंतिकाबाई से प्रार्थना की। लेकिन अवंतिकाबाई ने मंजूर नहीं किया। उन्होंने सोचा कि चाहे मुफ्त ही क्यों न हो, एक तरह से यह सरकारी ही तो है। किसी भी हालत में वह सरकारी नौकरी नहीं करना चाहती थीं।

कार्पोरेशन की सदस्यता की आठ साल की अवधि में उन्होंने जो प्रस्ताव पेश किये और समय-समय पर जो वक्तव्य दिये, उनसे साफ मालूम होता है कि जनसेवा की भावना उनमें कितनी तीव्र थी। स्वास्थ्य-समिति में वह बच्चों तथा महिलाओं के स्वास्थ्य और सफाई का कार्य बड़ी सावधानी से करती थीं।

अपने मत का समर्थन वह हमेशा आवेशपूर्ण शब्दों में करती थीं। वह केवल शाब्दिक ही न होता, उसमें तीव्र भावना भी व्यक्त होती थी। उनका दलीलें शुद्ध भावना से होती थीं। अपना आशय विरोधियों को भी पहले ठीक-ठीक समझा देतीं जिससे हमेशा राष्ट्रीय पक्ष का विरोध करनेवाले

रो.िपग्रा सदस्य भी अवंतिकाबाई के अनुकूल रहते थे। अपने रिश्तेदार आदि के किसी भी काम के लिए अफसरों के पास न जातीं और न जासूसी करती थीं।

एक दिन की बात है कि म्युनिसिपिल कमिश्नर भाषण देते हुए कह रहे थे कि इस कार्पोरेशन का एक भी सदस्य ऐसा नहीं है जो कि किसी-न-किसी सिफारिश के साथ मेरे पास न आया हो। यह सुनते ही अवंतिकाबाई जवाब देने को खड़ी हो गईं। तब क्लेटन साहब ने कहा, "अवंतिकाबाई, आप ही एक अपवाद हैं।"

क्लेटन साहब ने एक बार बैठक में कहा था कि अवंतिकाबाई की वजह से यहां का वातावरण गंभीर रहता है और सारी चर्चा ऊंचे दर्जे की होती है। उनकी ईमानदरी और स्पष्टता तो लाजवाब है।

यद्यपि अवंतिकाबाई विविध कार्यों मे व्यस्त रहती थीं फिर भी वह कार्पोरेशन की बैठक में कभी गैरहाजिर न होती थीं। समय-समय पर अलग-अलग वार्डों में घूमकर लोगों की शिकायतें सुनतीं और कार्पोरेशन के सामने रखतीं। मेहतरों और ऐसे ही अन्य लोगों की हालत अत्यंत दयनीय थी। स्थायी समिति और स्वास्थ्य-समिति में उनकी हालत सुधारने के लिए वह हमेशा झगड़ती रहतीं।

जबतक अवंतिकाबाई कार्पोरेशन में रहीं, उनका कार्य आदर्शपूर्ण रहा।

उनकी मृत्यु के बाद २९ मार्च, १९४९ को कार्पोरेशन की बैठक में मेयर डा० मास्करेन्हास ने शोक-प्रस्ताव पेश किया। उसका समर्थन करते हुए कांग्रेस पार्टी के नेता श्री स. का. पाटिल ने अवंतिकाबाई की सेवाओं की चर्चा की। स्थायी समिति तथा स्वास्थ्य-समिति ने भी शोक-प्रस्ताव स्वीकृत किये। म्युनिसिपैलिटी के एक सदस्य श्री बाबूराव घोलप ने हाल लेन को अवंतिका-बाई का नाम देने का प्रस्ताव पेश किया, लेकिन हाल लेन का पूर्व इतिहास इतना गौरवपूर्ण न होने से उन्होंने अपना प्रस्ताव वापस ले लिया। दूसरे सदस्य श्री स० पा० नाडकर्णी ने प्रस्ताव किसा कि भटवाडी-मार्ग का नाम अवंतिकाबाई रखा जाय।

: २१ :

## स्वतंत्रता-आंदोलन में भाग

सन् १९२९ में पं० जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में कांग्रेस का अधिवेशन लाहौर में हुआ। वहां पूर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव पास किया गया। कलकत्ता-कांग्रेस में दी गई सरकार को एक साल की अवधि पूरी होने पर २ जनवरी, १९३० को कांग्रेस-कार्य-समिति ने सत्याग्रह-आंदोलन शुरू करना तय किया। बैठक में यह निश्चय किया गया कि असेंम्बली के सदस्य अपनी सदस्यता को त्याग दें और चुनाव का बहिष्कार करें तथा २६ जनवरी का दिन स्वतंत्रता-दिवस के रूप में मनायें। हिंदुस्तान के कोने-कोने में यह दिन बड़े उत्साह के साथ मनाया गया।

उसी समय गांधीजी ने राष्ट्रीय मांगों की सुप्रसिद्ध योजना बनाकर देश के सामने रखी। पर सरकार ने योजना पर विचार न किया और दमन-नीति का ही रास्ता अपनाया। १४ फरवरी को साबरमती में कांग्रेस-कार्य-समिति की बैठक हुई। कानून-भंग-आंदोलन का संचालन करने का सर्वाधिकार गांधीजी को सौंपा गया। २१ मार्च को अहमदाबाद की बैठक में अखिल भारतीय कांग्रेस-कमेटी ने भी उसे मंजूर किया।

इस समय नमक-कानून भंग करने का आदेश गांधीजी ने सारे राष्ट्र को दिया और स्वयं अपने ७९ साथियों को लेकर इतिहास-प्रसिद्ध डांडी-यात्रा के लिए १२ मार्च को प्रस्थान किया। ५ अप्रैल को वे डांडी जा पहुंचे। तब-तक देशभर में जगह-जगह सत्याग्रह-आंदोलन शुरू हो चुका था।

लोग खुले आम नमक-कानून तोड़ रहे थे। बंबई शहर इस काम में अग्र-सर रहा। गांधीजी का आदेश था कि ६ अप्रैल से सत्याग्रह-आंदोलन शुरू किया जाय। ता० ७ को सत्याग्रहियों के पहले जत्थे ने नमक-कानून तोड़कर नमक तैयार किया। श्री नौरोजी इस जत्थे के नेता थे। अवंतिकाबाई और कमलादेवी चट्टोपाध्याय आदि इसमें शामिल थीं। इनके अलावा सर्वश्री हाफिजअली, बहादुर खान, सरदार टी० आर० सिंह, एन० डी० सालोमन

एम० सादिक, वी० एन० पाटणकर, चतुरभाई ठक्कर, के० वी० अनंतकृष्ण मोतीलाल व्यास, भोगीलाल जौहरी वगैरा भी इस जत्थे में थे। कानून-भंग का कार्यक्रम महालक्ष्मी के रेसकोर्स पर हुआ। सत्याग्रही वीरांगनाओं के आने के पहले ही १०,००० से अधिक लोग वहां समारोह देखने के लिए उपस्थित थे।

संध्या के ६ बजे सत्याग्रहियों का जत्था कांग्रेस हाऊस से महालक्ष्मी रेसकोर्ड जाने के लिए रवाना हुआ। कांग्रेस हाऊस पर इन सत्याग्रहियों को कुंकुम-तिलक लगाया गया। जलूस गंभीरता और शांति से जा रहा था। बीच में एक दफा पुलिस के घुड़सवारों ने जलूस पर घोड़े दौड़ाये। बाद में कोई रुकावट न आई और न किसीको गिरफ्तार ही किया गया।

फिर चौपाटी पर एक विराट सभा हुई। सभा में भाषण करते हुए अवंतिकाबाई ने महाराष्ट्र की वीरवृत्ति को चुनौती दी। उन्होंने जनता से अपील की कि इस आंदोलन में बड़ी संख्या में शामिल होकर महाराष्ट्र की इज्जत बढ़ायें। सभा की समाप्ति के बाद श्री नरीमैन को घर पर गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें एक महीने की सजा हुई। साथ ही महात्माजी के अदेशानुसार विलायती कपड़ों के बहिष्कार का आंदोलन शुरू हुआ। इसका संचालन अवंतिकाबाई ने किया। २६ अप्रैल को उनके नेतृत्व में एक विराट जलूस निकाला गया और आंदोलन का सूत्रपात किया गया। ४ मई की रात को १२ बजे गांधीजी को गिरफ्तार करके यरवदा-जेल भेज दिया गया। सुबह तक देश-भर में गांधीजी के पकड़े जाने का समाचार हवा की तरह फैल गया। सब जगह हड़ताल हुई। बंबई में तीन दिन तक हड़ताल रही। ५ मई को सरोजिनी नायडू की अध्यक्षता में एक विराट सभा हुई, जहां अवंतिका-बाई ने भाषण करते हुए कहा कि हरएक व्यक्ति दिलोजान से गांधीजी के आदेश का पालन करे। विलायती कपड़ों का बहिष्कार करे। दूसरे दिन से विलायती कपड़ों की दूकानों पर पिकेटिंग शुरू हुई। स्वयंसेवक और सेवि-काएं दूकानों के सामने बड़ी संख्या में खड़ी होगईं। शहर का वातावरण उत्साहपूर्ण था।

लोगों का बढ़ता हुआ उत्साह कायम रखने के लिए नई-नई योजनाएं उनके सामने रखना जरूरी था। यह जानकर अवंतिकाबाई ने शराब की दूकानों पर भी पिकेटिंग करना शुरू किया। सरकार के आर्डिनेंस के अनुसार पिकेटिंग करना जुर्म हो गया; लेकिन उसकी लोगों ने परवाह न की। अवंतिकाबाई और हंसा मेहता ने बहुत-से स्वयंसेवक तथा सेविकाओं के साथ भेंडी बाजार में एक शराब की दूकान पर पिकेटिंग शुरू की। इसपर भी उन्हें गिरफ्तार नहीं किया गया।

सरकार की दमन-नीति जोरों पर थी। निःशस्त्र जनता पर पुलिस-वाले अत्याचार कर रहे थे। लोग बहादुरी से उसका सामना करते थे। २१ जून को कांग्रेस के अध्यक्ष पं० मोतीलाल नेहरू का आजाद मैदान में व्याख्यान था। व्याख्यान के लिए लोग सुबह से इकट्ठे हो रहे थे। उनकी भीड़ हटाने के लिए पुलिस ने लाठी चलाई। पुलिस कमिश्नर मि० हेली खुद मैदान में मौजूद थे। उन्होंने ७०० कान्स्टेबुल, ५०० घुड़सवार, ७५ सार्जेंट साथ लेकर जनता पर हमला किया। सैकड़ों लोग इसमें घायल हुए। कु० कृष्णा सर-देसाई नाम की एक छोटी लड़की ने घायल होने पर भी अपने हाथ से राष्ट्र-पताका न छोड़ी।

दुनिया यह न कहे कि बंबई की पुलिस ने महिलाओं पर लाठी चलाई। इसलिए मि० हेली ने सारी महिलाओं को वहां से हट जाने का हुक्म दिया। अवंतिकावाई ने जवाब दिया, "हम यहां हट जाने के लिए नही आई हैं। अपने भाइयों के साथ हम यहीं डटी रहेंगी। आप भले ही घोड़े चलाकर हमें कुचल दें।" बेचारे हेलीसाहब मजबूर हो गये।

इस तरह की दूसरी घटना थोड़े ही दिन बाद हुई। लोकमान्य तिलक की पुण्यतिथि के अवसर पर एक जलूस निकाला गया। पं० मदनमोहन मालवीय, सरदार वल्लभभाई पटेल और मौलाना आजाद जलूस में शामिल थे। जलूस को बोरीबंदर में रोका गया। हजारों लोग अपने नेताओं के साथ सारी रात वहीं डटे रहे। अवंतिकाबाई भी उनमें थीं। लाठी चार्ज में करीब ५००-६०० लोग घायल हुए।

आंदोलन के जमाने में घायलों का इलाज कराने के लिए खेतवाड़ी में कांग्रेस की ओर से एक अस्पताल खोला गया। दिन में दो-तीन बार अवंतिकाबाई वहां जाती थीं और घायलों की सेवा-शुश्रूषा करती थीं।

विलायती कपड़े तथा शराब की दुकानों पर पिकेटिंग हो रही थी। लोग गिरफ्तार किये जा रहे थे। बंबईवालों के लिए लाठी-चार्ज तो रोजाना की बात हो गई थी। थोड़े ही दिन बाद कांग्रेस और सरकार के बीच समझौते की बातें होने लगीं। सर तेजबहादुर सप्रू और मुकुंदराव जयकर-जैसे ख्यातनामा सज्जनों के जिम्मे यह काम सौंपा गया था। दिल्ली और यरवदा के बीच उनको आना-जाना पड़ा। देश के अन्य जेलों से नेतागण यरवदा लाये गए। सलाह-मशविरा शुरू हुआ, कोई सुपरिणाम न निकलने पर आंदोलन जारी रखना तय किया गया। सितंबर के दूसरे हफ्ते में सरकार ने गोलमेज-परिषद् की योजना बनाई। कांग्रेस ने उसका बहिष्कार किया। उन दिनों लेजिस्लेटिव असेंबली के चुनाव का भी बहिष्कार किया गया था। इस अवस्था में सेविकाएं अवंतिकाबाई के साथ बराबर पिकेटिंग करती रहीं।

श्री सप्रू और जयकर की कोशिशों के बावजूद कोई समझौता न हो सका और सरकार की दमन-नीति उत्तरोत्तर बढ़ती गई। १४ अक्तूबर को बंबई प्रांतीय कांग्रेस-कमेटी को गैरकानूनी घोषित किया गया। कांग्रेस हाऊस पर सरकारी कब्जा कर लिया गया। इससे आंदोलन रुका नहीं; बल्कि दूसरे दिन सूर्योदय के पहले ही शहर के हजारों घरों में कांग्रेस हाऊस के बोर्ड लगाये गये। सरकार की दमन-नीति से मुकाबला करने के लिए आंदोलन का नेतृत्व खुद प्रांतीय कांग्रेस कमेटी ने अपने हाथों में ले लिया। एक के बाद एक युद्ध-समिति नियुक्त होती गई और उनके सदस्यों को गिरफ्तार किया जाने लगा। इस तरह बारह युद्ध-समितियों के लोग जेल जा चुके थे। उन्होंने अपनी गिरफ्तारी के बाद १३वीं युद्ध-समिति का सर्वेसर्वा अवंतिकाबाई को नियुक्त किया। इन समितियों के जिम्मे कोई खास काम नहीं रहता था। कांग्रेस गैरकानूनी थी, इससे झंडावंदन भी गैरकानूनी था। अवंतिकाबाई की नियुक्ति होते ही युद्ध-समिति के सदस्य गैरकानूनी झंडा-

वंदन करके जेल जाने लगे।

## : २२ :

## गिरफ्तारी

महात्माजी ने अवंतिकाबाई को कहला भेजा कि बबनराव के हाथ कट जाने से वह असहाय हैं। उन्हें आपकी सहायता की जरूरत है। सत्याग्रह में शामिल होकर आपको जेल नहीं जाना चाहिए। लेकिन अब तो वह युद्ध-समिति की सर्वेसर्वा नियुक्त हो चुकी थीं। अतः सोचविचार में पड़ गईं कि बबनराव का क्या होगा ? लेकिन बबनराव ने उनकी चिंता दूर कर दी। उन्होंने अवंतिकाबाई को आश्वासन दिया वह अपने पथ से विमुख न हों। इससे वह युद्ध-समिति को छोड़ न सकीं

रवियार २६ अक्तूबर को आजाद मैदान में झंडावंदन करना निश्चित हुआ। झंडावंदन की जगह पुलिस ने अपने कब्ज़े में कर ली थी और सुबह से ही घुड़सवार घूम रहे थे ताकि लोग जमा न हो सकें। दिन के सत्याग्र-हियों में ज्यादातर महिलाएं और लड़कियां ही थीं। ठीक सवा आठ बजे अवंतिकाबाई मैदान में पहुंच गईं। उनके आते ही हजारों आदमियों ने तालियां बजाकर उनका स्वागत किया। वंदेमातरम् के जयघोष से उन्होंने झंडा फहराया। उनके हाथ से झंडा छीन लेने की सार्जेंटों ने बड़ी कोशिश की लेकिन वे असफल हुए। स्वयंसेवक और सेविकाओं ने अवंतिकाबाई को सलामी दी और झंडावंदन के बाद वह घर चली गईं।

अब लोग अपने-अपने झंडे फहराने लगे। पुलिसवालों ने झंडे छीनना शुरू कर दिया; किंतु झंडा फहराने का क्रम न रुका और यह सिलसिला चलता ही रहा। सार्जेंटों ने २२ स्वयंसेविकाओं को गिरफ्तार किया। उन्हें लारी में भरकर भांडूप के जंगल में ले गये, जहां उनका अपमानकर रात को छोड़ दिया गया। बहुत रात बीत जाने पर वे बहनें बंबई वापस आईं। जब अवंतिकाबाई को यह खबर मिली तो उन्होंनें स्त्रियों पर किये गये इस

अनुचित व्यवहार के खिलाफ एक पत्र निकाला।

पुलिस के अत्याचार भीषण होते गये। नये पुलिस कमिश्नर मि० विल्सन की आज्ञा से बुरी तरह लाठी-चार्ज होता रहा। सैकड़ों लोगों के सिर फोड़े जाते थे। उपर्युक्त झंडावंदन के दिन ही संध्या को मजदूरों और अकाली दल की सभाओं को तितर-बितर करने के लिए लाठी-चार्ज हुआ। इन सारी घटनाओं का वर्णन करते हुए एक स्थानीय अंग्रेजी अखबार ने उस दिन को 'काला इतवार' बताया था।

दूसरे दिन २७ को सोमवार था। संध्या को साढ़े आठ बजे जब अवंतिकाबाई कार्पोरेशन की बैठक में गई तब वहींपर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। इसके पहले ही करीब ३ बजे एक पुलिस अफसर उनकी गिरफ्तारी लिए उनके घर गया था। बबनराव ने कहा कि वह कार्पोरेशन गई हैं; लेकिन उस अफसर ने विश्वास न किया। वह समझा कि गिरफ्तारी टालने के लिए यह बहाना कर रहे हैं। घर-भर में उसने अवंतिकाबाई को ढूंढ़ा और आखिर निराश होकर लौट गया।

गिरफ्तारी के बाद वह आर्थर रोड लाई गई। वहां तो पहले से ही बहुत-सी परिचित स्वयंसेविकाएं थीं। उनके साथ बातचीत में सारी रात आनंद से कट गई।

मंगलवार ता० २८ को बंबई के चीफ़ प्रेसीडेंसी मजिस्ट्रेट के सामने मुकदमा चलाने के लिए उन्हें पेश किया गया। अवंतिकाबाई ने अदालत के किसी काम में हिस्सा नहीं लिया। आखिर मजिस्ट्रेट ने उन्हें छः महीने की कैद और ४००) का जुर्माना अथवा तीन महीने की और सख्त कैद की सजा दी। जुर्माना देने की अपेक्षा सजा भोगना अवंतिकाबाई ने पसंद किया।

उनके गिरफ्तार होने पर बंबई में जोरों की हड़ताल हुई। उनके पश्चात् श्रीहरींद्रनाथ चट्टोपाध्याय चौदहवीं युद्ध-समिति के प्रमुख हुए।

जेल जाने से पहले अवंतिकाबाई ने जनता को दिये हुए संदेश में कहा था कि जिस जेलखाने में भगवान् श्रीकृष्ण पैदा हुए और जहां आज जगत-बंधु महात्माजी अपने दिन बिता रहे हैं; ऐसे पवित्र स्थान में जाते समय मुझे

बड़ी खुशी हो रही है। उन्होंने यह भी कहा कि विलायती कपड़ों तथा शराब की दुकानों का पिकेटिंग करने का काम महात्माजी ने महिलाओं के जिम्मे किया है। हमें चाहिए कि वह जिम्मेदारी यथोचित रूप से बहनें पूरी करें और रोज कम-से-कम एक घंटा कर्त्तव्य समझकर सूत कातें।

सजा के बाद दूसरे दिन अवंतिकाबाई को यरवदा-जेल में भेजा गया। उससे पहले उनकी बबनराव से मुलाकात हुई। लगभग ३० साल से वह उनके साथ थीं। आज कुछ दिनों के लिए अलग होना था। विदाई के समय उनकी आंखों में आंसू भर आये। लेकिन उन्हें दबाकर मुस्कराते हुए उन्होंने बबनराव से विदा ली।

## : २३ :

## रिहाई : पिकेटिंग : फिर गिरफ्तारी

१९३१ में फिर समझौते की चर्चा शुरू हुई। लार्ड इर्विन ने नेताओं को मुक्त करके समझौते का प्रयत्न किया। गांधीजी भी २६ जनवरी को रात के ११ बजे छोड़ दिये गये। सर्वश्री सप्रू और जयकर शांतिदूत बने थे। १२ फरवरी को इलाहाबाद में आनंदभवन में उन्होंने सलाह-मशविरा किया। फ़रवरी की १७ तारीख को गांधीजी और लार्ड इर्विन में ४ घंटे तक बातचीत होती रही और आखिर ५ मार्च को कांग्रेस और सरकार में समझौता हुआ। उन्हीं शर्तों के अनुसार सारे राजबंदी रिहा हुए और कांग्रेस ने अपना सत्याग्रह स्थगित कर दिया। अवंतिकाबाई चार महीने ११ दिन जेल में रहने के बाद बाहर आईं।

सत्याग्रह स्थगित होने पर भी शराब और विलायती कपड़ों की पिकेटिंग जारी रहनेवाली थी। जेल से आते ही अवंतिकाबाई फिर इस रचनात्मक कार्य में लग गईं।

मार्च के तीसरे हफ्ते में नेहरूजी और महात्माजी बंबई आये। उन्होंने रचनात्मक कार्य का कुछ मार्ग-दर्शन किया।

महात्माजी ने खादी और साक्षरता का काम विशेष तौर पर अवंतिकाबाई के सुपुर्द किया था। इस कार्य के लिए वह बहनों की छोटी-मोटी सभाओं द्वारा खादी का महत्त्व समझाया करती थीं। साक्षरता का काम 'हिंद महिला समाज' की ओर से शुरू हुआ। उनकी यह रचनात्मक प्रवृत्ति १९३२ तक अखंड रूप से चलती रही। जब विलायत की गोलमेज-परिषद् से निराश होकर गांधीजी स्वदेश लौटे तो उन्होंने फिर से सत्याग्रह शुरू करने के पहले लार्ड विलिंगडन से मिलना चाहा, किंतु उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

४ जनवरी को वाइसराय लार्ड विलिंगडन ने एक आर्डिनेंस निकालकर कांग्रेस को गैर-कानूनी संस्था करार दे दिया और कार्यकर्त्ताओं को फिर से गिरफ्तार किया जाने लगा। अवंतकिाबाई को अपनी गिरफ्तारी पर शक था। उन्होंने बबनराव की सारी व्यवस्था कर दी और जेल जाने की तैयारी में रहीं। पुलिस के आने पर वह पांच मिनट में ही चलने को तैयार हो गईं। बाहर मोटर में विट्ठलभाई पटेल थे। इतनी जल्दी अवंतिकाबाई को आते देख वह बोले कि मैंने तो इन लोगों को अपने दरवाजे पर पूरे एक घंटे तक रोका था। आप इतनी जल्द कैसे निकल पाईं ?

अब की बार वह दो महीने जेल में रहीं। आर्डिनेंस के अनुसार दो महीनों तक नजरबंद रखकर फिर कुछ शर्तें लगाकर छोड़ दिया जाता था। शर्तें इतनी अपमानजनक होती थीं कि कोई स्वाभिमानी कार्यकर्त्ता उनका पालन कर बाहर रहने की अपेक्षा जेल जाना ज्यादा पसंद करता था। लेकिन अवंतिकाबाई बिना शर्त के रिहा हुईं, इसलिए उन्हें फिर जेल जाने की नौबत न आई।

## : २४ :

# पति-सेवा और 'समाज'-सेवा

१९३३ से बबनराव को हृदय की बीमारी ने घेर लिया। अतः उनसे एक क्षण के लिए भी अलग होना उचित न था। इसलिए अवंतिकाबाई को

राजनैतिक कार्य में हिस्सा लेना मुश्किल हो गया था। गांधीजी ने उनकी ऐसी परिस्थिति देखकर उन्हें पति-सेवा में लगे रहने को कहा।

'हिंद-महिला-समाज' का कार्य उनके घर पर ही चलता था। इससे उन्होंने तय किया कि अब वह जीवन-भर समाज का काम और पति-सेवा करती रहेंगी। १९३७ में प्रांतीय धारा-सभा के चुनाव में श्रीमती सरोजिनी नायडू के बहुत जोर देने पर भी वह खड़ी न हुई। इसलिए श्री अन्नपूर्णा-बाई देशमुख को नियुक्त किया। अपने इसी उद्देश्य के कारण वह १९४० के व्यक्तिगत सत्याग्रह में और १९४२ के आंदोलन में भी शामिल न हुईं। १९३३ से लगातार १५ साल तक उन्होंने 'हिंद महिला-समाज' के द्वारा शिक्षा और स्वदेशी का कार्य किया।

अस्पृश्यता-निवारण, खादी-कार्य, स्त्री-शिक्षा आदि कामों को अवंति-काबाई बड़े लगन से करती रहीं। १९३२ से यद्यपि उन्होंने राजनैतिक क्षेत्र में खुद काम नही किया, तथापि उनकी प्रेरणा से बहुत-सी स्त्रियां इस कार्य में लगी रहीं।

१९१७ में गांधीजी के संपर्क में आने के बाद से लेकर १९४९ में देहावसान होने तक उन्होंने जो कार्य किया, उसे दो हिस्सों में बांटा जा सकता है।

१९१७से १९३३ तक १५ साल राजनैतिक और उसके बाद १५ साल तक सामाजिक कार्य में उनकी सेवा-वृत्ति स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। अपना काम वह निःस्वार्थ भाव से करती थीं। उसमें कभी अधिकार या यश की लालसा नहीं आने पाई। अपने कार्य का इतिहास उन्होंने कभी किसीको नहीं बताया, चाहे वह कार्य देश का हो या 'समाज' का। जब जरूरत पड़ती तो वह कार्य में अग्रसर हो जातीं और उसके पूरा होने पर अलग हो जातीं।

जेल-यात्रा से उनका स्वास्थ्य सदा के लिए बिगड़ गया। डाक्टरों की सलाह से दो महीने के लिए वह कश्मीर गईं। वहां उनके स्वास्थ्य में कुछ सुधार जरूर हुआ; लेकिन पहले-जैसा स्वास्थ्य उन्हें फिर कभी न मिला।

पैसे की कमी के कारण 'समाज' का काम रुक न जाय, इसके लिए उन्होंने

प्रबंध कर रखा था। इतना ही नहीं; बल्कि अपने पश्चात् 'समाज' का कार्य चलाने के लिए कार्यकर्त्रिओं को भी तैयार कर दिया था। उसके साथ लगातार १५ साल रहकर कार्य करनेवाली श्रीमती कमलिनी गोखले आदि कई महिला कार्यकर्त्री उन्हींके द्वारा शिक्षा पाकर तैयार हुई हैं।

मार्च सन् १९४७ में उनकी तबियत एकाएक बिगड़ गई। डाक्टरों ने कैंसर बताया। कैंसर की बीमारी असाध्य मानी जाती है। लेकिन डाक्टरी इलाज से उसमें कुछ सुधार हुआ। फिर बैठे-बैठे 'समाज' का काम देखने भी लगी थीं कि बबनराव को एकाएक लकवा मार गया। ऐसी अवस्था में खुद बीमार होते हुए भी उन्होंने पति की बड़ी सेवा की और बबनराव के प्राण संकट से बचाये।

## : २५ :

## बीमारी और अवसान

बबनराव स्वस्थ हुए; लेकिन अवंतिकाबाई फिर से बीमार पड़ गई। इसी बीमारी में आखिर उनका अंत हुआ।

महात्माजी के जन्म-दिन पर उनको धोतियां देने का अवंतिकाबाई का व्रत था। धोतियों के लिए उन्होंने सूत भी दिया था; लेकिन २ अक्तूबर तक धोतियां बुनकर न आ सकीं। इसलिए उन्होंने महात्माजी को अपने नियम-भंग के लिए क्षमा-याचना करते हुए एक खत लिखा। उसमें बीमारी की बात भी लिखी। उस खत के जवाब में महात्माजी ने लिखा :

दिल्ली ४-१०-४७

चि. अवंतिकाबहन,

तुम्हें कैंसर कहां से हुआ ? मुझे तो तुम्हारे खत से ही मालूम हुआ। क्या यह मिट सकता है ? खत लिखकर मुझे पूरी-पूरी जानकारी देना।

अब धोतियों का मोह काहे को ? तुमने तो बहुत साल तक इस नियम का पालन किया है। अब यह मोह छोड़ दो। बबनरावजी मजे में होंगे।

बापू के आशीर्वाद

अवंतिकाबाई को महात्माजी का यह आखिरी खत था; क्योंकि इसके लगभग चार महीने बाद ३० जनवरी, १९४८ को दिल्ली में वह शहीद हो गये।

महात्माजी की हत्या की हृदय-विदारक घटना ने अवंतिकाबाई की मृत्यु को और भी समीप ला दिया। महात्माजी की हत्या के बाद उन्हें अपना सारा जीवन् निःसार प्रतीत होने लगा। अब वह इस संसार से मुक्त होना चाहती थीं। उनकी तबियत दिन-पर-दिन बिगड़ती गई। उन्होंने अपनी दवा भी बंद कर दी और मृत्यु के इंतजार में घड़ियां गिनने लगीं।

अवंतिकाबाई की आखिरी बीमारी में उनकी सेवा-सुश्रूषा का कठिन कार्य कु. इंदू कुडचडकर नाम की लड़की ने किया। अवंतिकाबाई के अनुशासन का पालन करते हुए दिन-रात उसके साथ रहना और सेवा करना आसान काम न था। इस लड़की ने बड़े प्रेम और लगन से यह काम किया। कोई नजदीकी रिश्तेदार भी इतनी सेवा नहीं कर सकता था।

उनके अन्य संबंधियों ने भी उनकी सेवा-शुश्रूषा की; लेकिन उन्हें स्वास्थ्य लाभ न हुआ।

मृत्यु के पहले वह कभी-कभी चिल्ला उठतीं, "बापू मुझे बुला रहे हैं।" बबनराव उनसे कहते, "बापूजी ने हम दोनों को हमेशा साथ देखा है। वह तुम्हें अकेली कैसे बुलायेंगे?" अवंतिकाबाई जवाब देतीं, "हां, यह भी ठीक है, लेकिन मेरे चले जाने के बाद ४-६ महीने में आप भी मेरे पीछे आ जायंगे।"

महात्माजी की यह पहली महाराष्ट्रीय शिष्या, उनकी दूसरी पुण्यतिथि के दो महीने बाद इस संसार से विदा हो गई। २६ मार्च, १९४९ की रात के साढ़े सात बजे अवंतिकाबाई का देहावसान हुआ।

मृत्यु के समय उनकी आयु ६७ साल की थी। उनकी मृत्यु से बबनराव, 'हिंद महिला-समाज' तथा अन्य संबंधियों पर दुःख का मानो पहाड़ ही टूट पड़ा।

## : २६ :

# जीवन-विकास

यहांतक पाठकों को अवंतिकाबाई की जीवनी का संक्षेप में परिचय हुआ है। अब देखना है कि उनका स्वभाव उनके कार्यानुकूल कैसे बनता गया।

१९१७ तक उनके जीवन में कुछ विशेष उथल-पुथल नहीं हुई। इससे वह जरा आरामपरस्त और खर्चीली हो गई थीं। लेकिन १९१७ में गांधी-जी के संपर्क में आने के बाद उनके स्वभाव में आमूल परिवर्तन हो गया। महात्माजी के व्यक्तित्व का उनपर जो गहरा असर पड़ा, वह अंततक बना रहा।

अवंतिकाबाई रेशमी और महीन साड़ियां पहनतीं और विलायती जीवन बितातीं। उन्हें खादी की मोटी साड़ियां पहनते, तीसरे दर्जे में यात्रा करते और उनका त्याग एवं सेवाभाव देखकर उनके परिचितों और संबं-धियों को बड़ा आश्चर्य होता था। महात्माजी के उपदेशों के अनुसार वह अपने घर का सारा काम खुद करती थीं, नौकरों से नहीं कराती थीं।

जब बबनराव की ५० साल की उम्र हुई तब अवंतिकाबाई ने उनसे कहा कि अब से वे दोनों ब्रह्मचर्य का पालन करें। बबनराव ने कहा कि ५० साल की उम्र कोई ऐसी उम्र नहीं, जबकि मनुष्य वैवाहिक जीवन से निवृत्त हो जाय। अवंतिकाबाई ने उनको बहुत समझाया। उन्होंने कहा, "गांधी-जी ३५ साल की उम्र में ही ब्रह्मचर्य का पालन करने लगे थे। आपको ५० साल की उम्र में कोई कठिनाई नहीं मालूम होनी चाहिए। विलायत में शराब पीने की आदत को जब आपने आसानी से छोड़ दिया तो इस तरह का संयम रखना आपके लिए मामूली बात है।" तबसे अवंतिकाबाई पति को भाई पुकारने लगीं। यही भाई-बहन का नाता उन्होंने आखिर तक निभाया।

अवंतिकाबाई के स्वभाव का विशेष स्मरणीय पहलू था उनकी कड़ी

अनुशासन-प्रियता। वह खुद अनुशासन का पालन करतीं और दूसरों से करवातीं। अपने अनुशासन के अनुसार वह कार्य करतीं, इसके खिलाफ होने पर उन्हें कोई कार्य करना मंजूर न होता। नेपोलियन के समान उनके शब्द-कोष में अनुशासनहीनता का शब्द ही न था।

यह कहा जाता है कि सौ पुरुष बिना लड़ाई-झगड़े के एक साथ रह सकते हैं, लेकिन दो स्त्रियां नहीं रह सकतीं। 'हिंद महिला-समाज'-जैसी महिलाओं की संस्था बिना लड़ाई-झगड़े के सुचारु रूप से इतने साल से चल रही है और बहनें मिल-जुलकर काम करती हैं। अवंतिकाबाई के अनुशासन का यह प्रत्यक्ष उदाहरण है।

कुमारी सोफिया सोमजी, (सौ० सोफिया खान) अवंतिकाबाई के साथ ही जेल में थीं। जेल में वह बड़ा उपद्रव मचातीं। उन्होंने जेल-सुपरिंटेंडेंट के नाकों दम कर दिया था। अवंतिकाबाई ने उनको अपने व्यवहार से काबू में कर लिया। लोग जेल-काल में उनके अनुशासन और उच्च जीवन की दिल खोलकर तारीफ करते।

जेल, 'हिंद-महिला-समाज,' कार्पोरेशन की बैठक, चाहे जहां हो, वह अपने अनुशासन का अंकुश रखतीं। अनुशासन-हीनता से वह खफा हो जातीं। उनके इस कड़े अनुशासन के कारण कई लोग उनसे नाराज रहते और कुछ गलत-फहमियां भी फैलती रहतीं।

महात्माजी अवंतिकाबाई के इस स्वभावविशेष से अच्छी तरह परिचित थे। जब महामना मालवीयजी ने काशी विश्वविद्यालय में स्त्रियों का कालेज खोला तो कालेज सुपरिंटेंडेंट की जगह वह एक ऐसी महिला की नियुक्ति करना चाहते थे जो कि पूर्वी और पश्चिमी संस्कृति से अच्छी तरह परिचित हो। उन्होंने किसी सुयोग्य महिला का नाम सुझाने को महात्माजी से कहा। गांधीजी ने उन्हें कहला भेजा कि अगर अवंतिकाबाई स्वीकृति दे दें तो वह उस जगह के लिए योग्य हैं।

महात्माजी से जवाब पाते ही मालवीयजी ने अवंतिकाबाई को लिखा कि अगर आप मंजूर करें तो ४००) की तनख्वाह पर आपकी नियुक्ति

होगी। यह वेतन आप काफी न समझें तो बढ़ाया भी जा सकता है।

लेकिन किसी प्रकार के बंधनों में न रहकर सेवाकार्य करने का अवंतिकाबाई ने निश्चय किया था। उन्होंने मालवीयजी को नम्रतापूर्वक लिख दिया कि उनकी सूचना मंजूर करने में वह असमर्थ हैं।

मिशनरी महिलाओं की तरह देशसेवा करनेवाली बहनों का एक दल बनाने की स्व० जमनालाल बजाज ने एक योजना बनाई थी। अपनी योजना के लिए १० लाख रुपये खर्च करने का उनका इरादा था। योजना कार्यान्वित करने के लिए अवंतिकाबाई से प्रार्थना की गई, किंतु अपनी संकल्प-पूर्ति के लिए उन्होंने वह भी मंजूर नहीं किया।

नियम-प्रियता अवंतिकाबाई का एक दूसरा स्वभाव-विशेष था। निश्चित कार्य ठीक समय पर, ठीक तरह से और निश्चित तरीके से पूरा करने का उन्हें बड़ा ध्यान रहता था। ऐसे काम में रुकावट आने पर उनका मिजाज एकदम बिगड़ जाता। उनका दैनिक कार्यक्रम इतने निश्चित समय पर होता कि कोई घड़ी उस कार्यक्रम से ठीक कर ले।

गोपालराव देवधर पहले दर्जे के अव्यवस्थित आदमी थे। उनका शायद ही कोई काम ठीक समय पर पूरा होता। एक बार बीमारी में वह अवंतिकाबाई के यहां रहने आये। एक हफ्ते के अंदर ही उनको नियम से काम करने का पाठ पढ़ा दिया। तबसे वह निश्चित समय पर नियमानुसार काम करने लगे।

अवंतिकाबाई का स्वभाव बिल्कुल निःस्पृह था। किसीका कसूर वह साफ शब्दों में बता देती। इससे लोग उनको मुंहफट समझते थे। किसी अच्छे काम की वह दिल खोलकर तारीफ भी करती थीं। जो उन्हें उचित बात न लगती, वह सीधे उसका विरोध करतीं और पसंद आने पर उसकी दिल से तारीफ करतीं। इस स्वभाव के कारण कुछ लोग उनके विरोधी और आलोचक हो गये थे।

अनुशासन और स्पष्टवादिता ने अवंतिकाबाई के दिल को कठोर नहीं बनाया था। वह समय-समय पर गरीब, असहाय, निराश्रितों की सहायता

करतीं और अपने दयापूर्ण स्वभाव का परिचय देतीं। कई संकटग्रस्त महिलाओं को उन्होंने मातृप्रेम से सहारा दिया था।

उचित कार्यों में खुले हाथ से खर्च करने में वह कभी न हिचकिचातीं। उन्होंने सेवासदन, गांधर्व महाविद्यालय, नाथीबाई ठाकरसी कन्याशाला जैसी अनेक संस्थाओं को काफी आर्थिक सहायता दी थी।

पति-सेवा उनके स्वभाव की खास विशेषता थी। उनके पति दोनों हाथों से निकम्मे हो गये थे। लेकिन उन्हें अपनी असहायता कभी महसूस न हुई; क्योंकि अवंतिकाबाई अपने पति का बहुत खयाल रखती थीं। पतिसेवा करते समय वह अपनी सेहत की तरफ बिल्कुल ध्यान नहीं देती थीं। वह प्रगतिशील विचारों की एक आधुनिक महिला थीं। देव-धर्म आदि बातें उन्हें अंध अनुयायी नहीं बना सकती थीं। लेकिन उनके पति-संबंधी भाव बड़े कोमल थे। उस संबंध में वह सारी रूढ़ियों का बारीकी से पालन करतीं। महाराष्ट्रीय सुहागिनियों में गले में काले मणियों की माला पहनने का रिवाज है। वह सुहाग-चिह्न वह जीते-जी अलग नहीं कर सकीं। जेल जाने पर सारे गहने उतार लिये जाते हैं, उसके साथ यह सुहाग-चिह्न भी उतार लिया जाता है। यह महाराष्ट्रीय महिला के लिए सबसे कठिन बात थी। अवंतिकाबाई को इस बात का पहले से ही खयाल था। जेल जाने से पहले पांच दानों की एक छोटी माला बनाकर उन्होंने छिपाकर साथ में रख ली थी। अपनी सत्यवादिता का व्रत भी उन्होंने इसलिए तोड़ दिया। बाद में यह किस्सा उन्होंने महात्माजी से कह भी दिया।

पति को अपने हाथ की रसोई खिलाने का उनका नियम था। यह काम उन्होंने कभी नौकरों पर न छोड़ा। आखिरी बीमारी में जब वह विवश हो गईं तब यह नियम छूटा।

अवंतिकाबाई के हृदय में गरीबों के लिए अगाध प्रेम, महिलाओं की उन्नति के लिए सच्ची लगन और बच्चों को उत्तम रीति-रिवाज सिखाने की हार्दिक चाह थी। उनके यह भाव उनके जीवन में साफ-साफ दिखाई देते हैं।

यूरोप-यात्रा के कारण विविध धर्म के लोगों में उनका आना-जाना था। देश के कोने-कोने में वह घूम आई थीं। इतने पर भी वह आखिर तक शाकाहारी रहीं। अपने इंगलैंड के प्रवास-काल में बबनराव मांसाहारी बन गये थे। अवंतिकाबाई ने उनसे कहा था कि अगर आप चाहें तो मैं आपको मांसाहारी भोजन भी बनाकर दे सकती हूं; लकिन बबनराव ने आगे जाकर मांसाहार छोड़ दिया। इसलिए ऐसी नौबत कभी न आई कि अवंतिकाबाई ऐसा खाना पकातीं।

अवंतिकाबाई ने भारतीय राजनैतिक आंदोलन में महत्वपूर्ण कार्य किया। महात्माजी के रचनात्मक कार्य में उन्होंने काफी सहयोग दिया। भारतीय महिलाओं की उन्नति के लिए उन्होंने जो कार्य किया, उसको इतिहास कभी नहीं भूल सकता। 'हिंद महिला-समाज' की स्थापना करके ३३ साल में समाज की उन्होंने जो सेवा की और स्त्रियों की उन्नति का जो आदर्श भारतीय महिला-समाज के सामने रखा, वह वेजोड़ है। भारतीय महिलाएं इस आदर्श को सामने रखते हुए अगर कार्य करती हैं तो उन्हें दुनिया में उच्च स्थान प्राप्त हो सकता है।

अब भारत आजाद है। गणतंत्र शासन शुरू हुआ है। भारतीय संविधान में महिलाओं को पुरुषों की बराबरी का स्थान मिला है। अपनी उन्नति करने का और हर क्षेत्र में कार्य करने का हक संविधान ने उनको दिया है। इससे पूरा फायदा उठाकर वह अपनी उन्नति कर सकती हैं। स्वतंत्र देश के नागरिक की हैसियत से उनपर जो जिम्मेदारियां आ पड़ी हैं उन्हें समझ-बूझकर वे पूरी करें। माता की हैसियत से भविष्य की पीढ़ियों को कर्तव्यनिष्ठ नागरिक बनाने का अपना कत्तव्य करें तो भारत एक महान् आदर्श देश बन सकेगा।

जाति-धर्म-निरपेक्ष, सेवाभाव में अविरत कार्य कर अवंतिकाबाई ने भारतीय महिलाओं के सामने एक आदर्श रखा है। इस आदर्श को सामने रखते हुए यदि भारतीय महिलाएं कार्य करती रहीं तो भारत एक वैभवसंपन्न और गौरवशाली राष्ट्र बन सकता है। इस आदर्श के लिए अवंतिकाबाई का जीवन-चरित भारतीय महिलाओं को स्फूर्ति दे यही ईश्वर से प्रार्थना है।

# परिशिष्ट

## संस्मरण और श्रद्धांजलियां

इसमें संदेह नहीं कि बंबई की सार्वजनिक कार्य करनेवाली स्त्रियों में अवंतिकाबाई गोखले का स्थान कहीं अधिक ऊंचा है। उनसे थोड़ा भी परिचय रखनेवाला व्यक्ति उनके विशिष्ट व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता था। मैं जब कभी बंबई जाता हूं तो चौपाटी पर स्थित हैंगिग गार्डन में प्रातःकाल घूमने जाने का मेरा नियम-सा है। उस समय वहां बहुधा वे पति-पत्नी कभी साथ-साथ और कभी आगे-पीछे मिल जाते थे। उनकी नियमितता उल्लेखनीय थी। घर-गृहस्थी के जंजाल से बाहर निकलकर सांसारिक स्त्रियों को थोड़े समय के लिए भिन्न वातावरण में लाने, उनके ज्ञान में कुछ वृद्धि करने और उन्हें थोड़ा-बहुत राष्ट्र-कार्य करने का सुयोग देने के कार्य में वह विशेष कुशल थीं। अपनी संस्था 'समता संघ' की स्त्रियों को जानकारी देने के लिए मैंने उनसे एक व्याख्यान की योजना करने का अनुरोध किया। उन्होंने तुरंत अपनी संस्था के द्वारा अपने ही स्थान पर सभा का प्रबंध किया और मुझे तथा बंबई के हमारे कार्यकर्त्ता श्रीयुत सप्रे को अपनी बात कहने का अवसर प्रदान किया। महात्माजी उनसे विशेष स्नेह करते थे। सांसारिक झंझट उन्हें बहुत अधिक न थे, अतः वह अपना काफी समय सार्वजनिक कामों में खर्च करती थीं। इसमें कोई शक नहीं कि उनका चरित्र अनुकरणीय था।

**पूना]** **(महर्षि) धोंडो केशव कर्वे**

असाधारण मृदु स्वभाव, आदर्श व्यवहार और अत्यंत दयालु अंतः-करण--ये सभी गुण स्व० अवंतिकाबाई गोखले में एक जगह एकत्र हो गये थे। उनका व्यक्तित्व उनके पति के विशाल अंतःकरण को शोभायमान करने-वाला था।

मेरी पुत्री लक्ष्मी और देवदास गांधी दोनों के प्रति उनका मातृत्व स्नेह था और ये दोनों अवंतिकाबाई को अपनी माता से कम नहीं समझते थे।

**मद्रास]** **—चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य**

एक वर्ष पूर्व, २४ मार्च को, हमारी प्रिय बहन और सहयोगी हमें छोड़-कर चल बसीं। यद्यपि हमारे बीच से वह उठ गई और बंबई नगरी ने अपनी एक उद्यमशील कार्यकर्त्री को खो दिया तो भी हमारे दिलों में उनकी स्मृति ताजा है और उसकी मधुर सुगंध आज भी सर्वत्र फैली हुई है। उनका आदर्श हमारी आंखों के आगे ज्यों-का-त्यों मौजूद है। उनकी याद हम सबको समाज-सेवा की प्रेरणा देती रहेगी।

अवंतिकाबाई के व्यक्तित्व से परिचित कोई भी व्यक्ति उनकी सामर्थ्य, उनकी धीर-गंभीर वृत्ति और हाथ में लिये हुए काम को संपादित करने की उनकी कुशलता को नहीं भुला सकता।

वह और इसी प्रकार के अन्य गुण उनमें मौजूद थे। उनकी कार्यसिद्धि, कार्यकुशलता और अपने-आपको बड़ा न समझते हुए काम करते जाने की लगन आदर्श थी।

वह स्वयं उत्साही और निश्चयात्मक वृत्ति की महिला थीं। अतः अपने सहकारियों से काम लेने में कठोर थीं; किंतु उनके न्यायप्रिय एवं दयालु स्वभाव का परिचय उनके सहयोगियों को हमेशा ही मिलता रहता था।

वह इतनी कुशल संगठनकर्त्री थीं कि जरा भी इच्छा करतीं तो सहज ही उन्हें नेतृत्व का पद मिल गया होता; किंतु उनको इसकी लालसा ही नहीं थी। अपनी सारी आयु सेवा में व्यतीत करना ही उनका ध्येय था।

उनकी देश-सेवा, स्त्री-समाज के लिए किये गये उनके कार्य, महात्मा-

जी के प्रति उनकी अपूर्व निष्ठा आदि बातों का उल्लेख तो अन्य लोगों ने किया ही है। मुझे उनमें जो विशेषता खासतौर पर दिखाई दी वह थी उनकी आत्मीयता और कार्यकुशलता। वह हाथ में लिये हुए काम को पूरा करके ही छोड़ती थीं। महात्माजी की सच्ची अनुयायिनी थीं। सत्य पर उनकी अटल श्रद्धा थी।

मृदु और उदार अंतःकरण की अवंतिकाबाई मेरी हमेशा की एकनिष्ठ मित्र थीं। अंतर्राष्ट्रीय वाङ्मय संस्था (पी० ई० एन०) के भारतीय केंद्र की वह अनेक वर्ष तक सदस्या रहीं और इस केंद्र के कार्य से उनको अत्यंत प्रेम रहा। मुझे उनकी मौलिक सम्मति और निर्दोष सलाह सदा मिलती रहती थी।

घर में पति की सेवा करते समय उनका मधुर स्वभाव और आकर्षक व्यक्तित्व भव्य प्रतीत होता था। विशुद्ध चरित्र और मानव-समाज की निस्स्वार्थ-सेवा, ये दोनों गुण अवंतिकाबाई के स्वभाव के तेजस्वी पहलू थे।

उनके निकट परिचय में आने से मेरा व्यक्तिगत जीवन समृद्ध हुआ। वह मेरी मित्र हैं, यह ज्ञान मुझे हमेशा आनंद देता था और मैं इसपर गर्व अनुभव करती थी।

**बंबई ]** **—सोफिया वाडिया**

श्री सौ० अवंतिकाबाई गोखले से मेरा प्रत्यक्ष परिचय आज से २०-२५ वर्ष पहले हुआ था; परंतु ४०-४५ वर्ष पहले जब मैं बंबई आया तब महाराष्ट्रीय स्त्रियां सार्वजनिक स्थानों में ज्यादा नजर नहीं आती थीं। श्री सौ० अवंतिकाबाई इस विषय में अपवाद-रूप थीं। उनके सुघड़ रहन-सहन, वेशभूषा और तेजस्वी मुद्रा पर आंख ठहर जाती थी। कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं कि उनकी आकृति से ही देखनेवाले पर अनुकूल छाप पड़ती है। श्री अवंतिकाबाई उन्हींमें से एक थीं। 'यह कौन हैं', यह जानने की सहज इच्छा होती थी। सन् १९१८ में मैंने अपने तार के पते की रजिस्ट्री करवाई तो उसके लिए 'अवंति' (Avanti) इस इटैलियन शब्द का प्रयोग

किया। मेरे कुछ तार अवतिकाबाई के पास पहुच गए। उन्होने ये तार मेरे पास भेजे और विनोद मे मुझे अपना पता बदलने की सूचना दी, पर मैंने अपना पता बदला नही।

उनकी वृत्ति शुरू से ही राष्ट्रीय थी। वह चपारन गई, सार्वजनिक कार्य मे प्रमुख रूप से भाग लेने लगी। महात्मा गाधीजी की तत्वपद्धति उनको पूरी तरह पसद आ गई। स्त्री-सगठन, खादी-ग्रामोद्योग आदि रचनात्मक कार्यो का उन्होने अच्छा प्रसार किया। म्युनिसिपल कार्पोरेशन के चुनावो मे ब्राह्मणो का जातीय आधार पर वोट मागना उन्हे पसद नही आया। 'हिद-महिला-समाज' की स्थापना करके उन्होने अनेक महाराष्ट्रीय स्त्रियो को राष्ट्रीय-वृत्ति की शिक्षा दी और अत तक स्त्री-शिक्षा एव सगठन का कार्य करती रही। इस कार्य के लिए उन्होने अपना खुद का बहुत सारा पैसा खर्च किया और काफी परिश्रम भी किया।

मेरा उनसे परिचय तब हुआ जब उन्होने मुझे 'महिला-समाज' मे व्याख्यान देने के लिए निमत्रित किया। उनके काम के प्रति मेरे मन मे आदर की भावना उत्पन्न हुई। सन् १६३७ मे काग्रेस ने मत्री-पद स्वीकार किया तब उन्होने मुझे 'महिला-समाज' मे बुलाया और अपने हाथ के कते हुए सूत के वस्त्र अर्पण करके मेरा बहुत सत्कार किया। अस्पृश्यता-निवारण के लिए उन्होने बहुत काम किया। अभी कुछ समय से वह अस्वस्थ थी। मृत्यु निकट आ गई है, यह जानकर भी उन्होने अपने चित्त की शाति को भग नही होने दिया। उनकी मृत्यु के थोडे दिन पहले हिदुस्तान के भविष्य के बारे मे मेरी उनसे आखिरी बातचीत हुई थी। वह शात और अनासक्त चित्त से सत्कर्म मे जुटे रहनेवाले कर्मयोगी के सादृश थी। श्री बबन गोखले ने उनके सत्कार्यो मे हमेशा उनकी मदद की। इन दोनो का मुख्य धधा देश-सेवा ही था। उनके कोई संतान नही थी, फिर भी दोनो का हृदय विश्व-प्रेम से ओत-प्रोत था। श्री अवंतिकाबाई की वृत्ति अत्यत गंभीर और मान्यताए ठोस थी। उनके पीछे उनके कार्य को अखडित जारी रखा जाय, यही उनकी स्मृति को बनाये रखने का मार्ग है।

मुझे वह अपने भाई के समान समझती थीं और उनकी मृत्यु से मुझे भारी दुःख हुआ है। यह स्मृति-सुमन मैं उन्हें अर्पण करता हूं।

बंबई ] —बाला साहब खेर

स्व० सौ० अवंतिकाबाई गोखले बंबई के महाराष्ट्र-समाज में उत्साह-पूर्वक काम करनेवाली आदर्श स्त्री थीं। मैं सन् १९२५ में पहली बार बंबई आई। उस समय समाज-सेवा का काम करनेवाली स्त्रियों में सौ० अवंतिकाबाई का नाम मुख्य था। वह अच्छी वक्ता थीं।

सौ० अवंतिकाबाई ने 'हिंद-महिला-समाज' की स्थापना करके मध्य-वर्गीय स्त्रियों में शिक्षा एवं शिक्षण-कला की इच्छा-जागृति की। चौदह वर्ष तक कन्या-विवाह न करने का कानून उस समय नहीं बना था। प्रायः लड़कियों का विवाह १२ वर्ष की आयु में होता था। विवाह हो जाने पर लड़की के लिए शाला का ११ बजे का समय अनुकूल नहीं पड़ता था। घर के काम-काज से निबटकर दोपहर के बारह-एक बजे 'हिंद महिला-समाज' का वर्ग शिक्षणार्थी के लिए अनुकूल पड़ सकता था। कुमारी लड़की को भी घर पर काम तो करना ही होता था; जो घर का काम संभालने के बाद शाला में अभ्यास नहीं कर सकती थीं, ऐसी कुमारी बालिकाएं 'महिला-समाज' के वर्ग में जाती थीं। घरों में रहनेवाली बहुत-सी स्त्रियां पुरुषों के दस बजे खाना खाकर चले जाने के बाद शाम को ६ बजे तक लोगों से लड़ने-झगड़ने के बजाय इस वर्ग से लाभ उठातीं। उसमें अंग्रेजी और मराठी सिखाई जाती थी। सीने के काम के लिए आवश्यक गणित का ज्ञान कराया जाता था। सिलाई-कढ़ाई का काम भी अवंतिकाबाई के वर्ग की विशेषता थी। उस वर्ग में संध्या के बाद हिंदी भी सिखाई जाती थी। प्रत्येक स्त्री को प्राथमिक चिकित्सा और रोगी-शुश्रूषा का ज्ञान देने के लिए उन्होंने जानकार डाक्टरों का प्रबंध किया। इस परीक्षा को पास करनेवाली स्त्रियों की सूची देखी जाय तो उसमें चालीस वर्ष की आयुवाली स्त्रियों के नाम ही मिलेंगे।

प्रति सप्ताह वह सभा की योजना करतीं और अलग-अलग विषय देकर सभासदों और छात्राओं को उस सभा में बोलने के लिए बाध्य करतीं। इस अभ्यास के फलस्वरूप बहुत-सी स्त्रियां भली प्रकार और निर्भीकतापूर्वक सभा में बोलने लगी थीं।

सौ० अवंतिकाबाई ने घर के काम-काज में फंसी हुई, कम पढ़ी-लिखी अनेक स्त्रियों को हाथ पकड़कर विचार करना सिखाया, उनमें पढ़ने का शौक पैदा किया, समाचारपत्रों का महत्व समझाया और सभाओं में बोलने के लिए तैयार किया। वह हमेशा कहती थी कि स्त्रियों के करने योग्य अनेक काम हैं और इसी दृष्टि से कक्षा में शिक्षण देती थीं।

वह अनुशासन की बड़ी हिमायती थीं। उनकी मान्यता थी कि अनुशासन के बिना कोई काम नहीं हो सकता। छोटे-से-छोटा काम भी कैसे-क्या करना होगा, यह वह खुद ही तय करती थीं।

'हिंद-महिला-समाज' की सहायता से मध्यवर्गीय स्त्रियों की उन्नति का ध्येय उन्होंने अपने सामने रखा था। वह मानती थीं कि स्त्रियों की उन्नति हुए बिना हिंदुस्तान की उन्नति नहीं हो सकती। उनकी मृत्यु से स्त्री-समाज की भारी हानि हुई है।

**बंबई ]** —सीताबाई अण्णेगिरी

भारत की स्वतंत्रता के लिए महात्मा गांधी ने जो कार्य-योजना बनाई थी, उसमें उन्होंने भारत की स्त्रियों को महत्व का स्थान दिया था। इसमें उनका दुहेरा उद्देश्य था। एक तो यह कि वैदिककाल से बौद्ध-युग तक भारतीय जीवन में स्त्रियों को जो महत्व का स्थान प्राप्त था और जो बाद में नष्ट हो गया था, वह उन्हें पुनः प्राप्त हो जाय और वे कार्य-कुशल बन जायं। दूसरे वह स्वातंत्र्य-आंदोलन को समाज में अधिक-से-अधिक व्यापक आधार प्रदान करना चाहते थे।

महात्माजी सन् १९१५ में दक्षिण अफ्रीका से स्वदेश लौटे। भारतीय महिलाओं के संबंध में उनके द्विमुखी कार्य में स्व० सौ० अवंतिकाबाई गोखले

ने शुरू से ही उनका साथ दिया और संयोग की बात यह रही कि महात्माजी से प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित होने के पहले ही अवंतिकाबाई ने महात्माजी द्वारा कल्पित और व्यवहृत सिद्धांतों के अनुसार अपनी जीवन-दिशा मोड़ ली। इसी कारण अवंतिकाबाई के प्रति महात्माजी का अत्यंत आदर-भाव था।

अवंतिकाबाई के जीवन में सादगी और सेवा-भावना प्रबल रूप में मौजूद थी। श्री बबनराव गोखले द्वारा उन्हें इस काम में पूर्ण सहयोग और प्रोत्साहन मिला। अवंतिकाबाई खादी-भक्त थीं। गृह-उद्योगों को उन्होंने प्रोत्साहन दिया। उन्होंने हमेशा यह कोशिश की कि इन दोनों कामों में स्त्रियां भाग लें।

दलित-वर्ग की सेवा तो उन्होंने विशेष लगन और उत्साह के साथ की। हरिजन, महिला और अनाथ बालकों की सेवा में भी उन्होंने अपने-आपको समान तन्मयता से लगाया। अवंतिकाबाई जहां बिना किसी शोर-गुल और दिखावे के काम करनेवाली थीं, वहां उत्तम संगठनकर्त्री भी थीं और उन्होंने समाजसेवा के अनेक प्रकार के कामों में हिस्सा लिया। बंबई के सार्वजनिक जीवन में उनके निधन से जो हानि हुई है, उसकी पूर्ति होना कठिन है।

**बंबई]** —(डा०) जीवराज मेहता

विवाह होने के बाद १४ जून १९३७ को मैंने पहली बार 'हिंद महिला-समाज' में अंग्रेजी पढ़ाने के लिए जाना शुरू किया। रोज दो घंटे पढ़ाने का काम मुझे सौंपा गया था। उसके थोड़े ही दिनों बाद मुझे 'महिला-समाज' की कार्यकारिणी-समिति में ले लिया गया। इस प्रकार अवंतिकाबहन के साथ मेरा नित्य का मेल-जोल होने लगा। अकल्पनीय रूप में मुझे समाज-सेवा का अवसर प्राप्त हुआ। मैंने इसे अपना सौभाग्य समझा और मैं सौ० अवंतिकाबहन को इस क्षेत्र में अपना गुरु मानने लगी। शुरू में मैं आशंकित थी, क्योंकि मैंने सुना था कि सौ० बहन का अनुशासन बहुत कठोर है और इस कारण से बहुत सख्ती से पेश आती हैं, किंतु ज्यों-ज्यों मेरा परिचय बढ़ता गया, मुझे अनुभव हुआ कि यद्यपि उनका अनुशासन कठोर है, तथापि वह प्रेम और आत्मीयता के साथ व्यवहार करती हैं।

उन्होंने विशेषतः गरीब स्त्रियों के लिए 'हिंद महिला-समाज' की स्थापना करके अपनी कार्य-कुशलता का परिचय दिया। वह अंत समय तक इस संस्था की अध्यक्ष रहीं। मैंने जब इस संस्था में काम करना शुरू किया तो उन्होंने मुझे बताया कि प्रत्येक काम किस प्रकार करना चाहिए। वह मुझ से 'महिला-समाज' के सभी छोटे-बड़े काम लेती थीं। इस प्रकार मुझे नाना प्रकार के अनुभव होते गये। उनके अधीन काम करते समय कोई भूल हो जाती तो वह काफी डांटती फटकारती थीं। मेरे स्वाभिमान को चोट लगती; किंतु वह मुझे यों समझाती, "मैं जो तुझसे कहती हूं, इसका बुरा न मानना। तेरा सुधार हो और तेरे हाथ से पुनः ऐसी भूल न हो, इसीलिए कहती हूं। गलती करने पर क्या हमारी मां टोकती नहीं है? मुझे भी वैसा ही समझ।" बाद में मुझे बुरा मान बैठने पर पछतावा होता।

उनके सहवास में उनके प्रत्येक गुण का परिचय मिलता था। उनका अनुशासन और नियमितता तो सर्वथा आदर्श थे। इसलिए उनकी अधीनता में बहुत थोड़ी बहनें काम कर सकती थीं। खादी-भक्ति, स्वदेशाभिमान, महात्मा गांधी के सिद्धांतों पर अटल निष्ठा आदि गुण उनके संपर्क में आने पर तुरंत ही प्रकट हुए बिना नहीं रह सकते थे। उन्होंने अंत तक अपने हाथ से काते हुए सूत के कपड़ों के अलावा दूसरा कपड़ा काम में नहीं लाया।

'हिंद महिला-समाज' के लिए, जिसकी उन्होंने स्थापना की थी, उन्होंने अपनी देह को अंत तक खपाया। सन् १६४३ में उनकी इस प्राणप्रिय संस्था का रजत-महोत्सव भारी उत्साह के साथ मनाया गया। उसके तीन-चार वर्ष बाद ही कैंसर के असाध्य रोग ने उन्हें धर दबाया। इस कारण महिला-समाज के उनके कार्यक्रम में बाधा पड़ी। शय्याशायी होने पर भी उन्होंने महिला-समाज के कार्य की रत्ती भर उपेक्षा नहीं की। वह छोटे-बड़े कामों की देख-रेख किये बिना रह नहीं सकती थीं।

महात्मा गांधी की स्थित-प्रज्ञता की शिक्षा उनके रोमरोम में समा गई थी। दो वर्ष तक वह बीमार रहीं, उनकी हालत में बिल्कुल सुधार न होने पर उन्हें तलगांव ले जाने का विचार किया गया, इसलिए कि वहां सब तरह

की सुविधा थी; परंतु वह जाने को तैयार नहीं हुईं। 'समाज' में रहते हुए ही मृत्यु से भेंट करने की उनकी इच्छा थी। वास्तव में उनकी यह ध्येय-निष्ठा असाधारण थी।

अंत में आठ दिन तक तो उनकी तबियत बहुत ही खराब रही 'समाज' से वापस लौटते समय नित्य यह डर रहता था कि पीछे से कुछ हो न जाय। आखिर २६ मार्च, १९४९ को जो होना था, वह हो गया। किंतु एक बात मेरे मन में हमेशा के लिए चुभती रहेगी और वह यह कि मेरी और उनकी आखिरी भेंट न हो सकी। बारह वर्ष तक नित्य भेंट-मुलाकात होते रहने के बाद ऐसा संयोग होगा, इसकी मैंने स्वप्न में भी आशा नहीं की थी। उस समय मेरी छोटी बच्ची बीमार थी। घर पर कोई था नहीं। उसे किसीको सौंपकर बहन से मिलन जाना मुश्किल था। रोज समाचार मिलते रहते थे; किंतु म सर्वथा बेबस हो गई। एक ओर मातृ-हृदय बच्ची को अकेली छोड़ने नहीं देता था और दूसरी ओर बहन से एक बार अंतिम भेंट करने की प्रबल इच्छा थी, मेरे मन में दोनों के बीच खींचतान चल रही थी। अंत में रात्रि के आठ बजे समाचार मिला कि बहन चल बसीं। मैं स्तंभित रह गई। बहन के चले जाने का दुःख था, क्योंकि यह तो निश्चय ही था और यह समाचार सुनने की मन की पहले से तैयारी भी थी; किंतु मुझे दुःख इसलिए हुआ कि मैं उनसे अंतिम भेंट नहीं कर पाई। दूसरे यह खयाल भी आया कि 'महिला-समाज' की बागडोर उनके समान और कौन संभाल सकेगा? किंतु दुःख मानकर बैठे रहना बेकार है। उन्होंने जो मार्ग दिखाया, उसके अनुसार इस संस्था की देख-भाल और सेवा करना मैं अपना कर्त्तव्य समझती हूं। सौ० बहन ने अपनी अंतिम बीमारी में 'महिला-समाज' के कार्य का उत्तरदायित्व मुझपर डालकर अपना विश्वास प्रकट किया था। 'हिंद महिला-समाज' के कार्य को सफल बनाने में उनकी स्मृति मुझे हमेशा प्रोत्साहन देगी।

बंबई ]　　—कमलिनी गोखले

प्रगति-मूलक और प्राचीन संस्कृति के प्रति आदर रखनेवाले लोग आजकल थोड़े ही दिखाई देते हैं। यह खेद की बात है कि ऐसे व्यक्तियों की संख्या घटती जा रही है। आजकल की पीढ़ी केवल भौतिक सुधार के लिए ही प्रयत्नशील दिखाई देती है। इस एकांगीपन को देखकरके भी प्राचीन और नवीन का समन्वय करके चलनेवाले मनुष्यों की स्मृति सहसा नष्ट हो नहीं सकती। उनके चरित्र से आज की पीढ़ी कुछ पाठ ग्रहण करे तो राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति के लिए उसका उपयोग होगा। परमेश्वर की कृपा से इस चरित द्वारा यह कार्य संपन्न हो।

नासिक] —(जगद्गुरु श्री) शंकराचार्य डा० कुर्त्तकोटी

●

## 'मण्डल' से प्राप्य जीवनी-साहित्य

१. आत्म-कथा

—महात्मा गांधी

२. गांधी की कहानी

—लुईफिशर

३. मेरी मुक्ति की कहानी

—टॉल्स्टॉय

४. मेरी कहानी

—जवाहरलाल नेहरू

५. लोकमान्य तिलक

—पा. ग. देशपांडे

६. साधना के पथ पर

—हरिभाऊ उपाध्याय

७. श्रेयार्थी जमनालालजी

—हरिभाऊ उपाध्याय

८. मेरी जीवन-यात्रा

—जानकीदेवी बजाज

एक रुपया